www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ... | पत्र नहीं; मित्र | RNI No. - MPHIN/2018/76121

देशबन्धु

वर्ष – 7 I अंक – 344 I नर्मदापुरम, शनिवार 22 मार्च 2025 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 2.00 रुपए

स्वच्छता की परीक्षा शुरु, टीमें आकर जांचेंगी सफाई का पैमाना पृष्ठ 2

बीजों की रिश्तेदारी की अनूठी पहल
जल संरक्षण से ही कल सुरक्षित होगा पृष्ठ 4

आरसीबी 18वें आईपीएल में विराट के दम पर खिताब अपने नाम करने उतरेगी पृष्ठ 5

केंद्र सरकार का कृषि बजट अन्नदाता की समृद्धि का रोडमैप पृष्ठ 8

सार-समाचार

आरएसएस ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को दी श्रद्धांजलि

बेंगलुरु, एजेंसी। बेंगलुरु में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की तीन दिवसीय वार्षिक बैठक शुक्रवार से शुरू हो गई। पहले दिन पदाधिकारियों ने संघ की कार्ययोजना को लेकर चर्चा की। बैठक के बाद सीआर मुकुंदा ने प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए संघ के कार्यों की जानकारी दी। सीआर मुकुंदा ने कहा कि हमने जाकिर हुसैन, वासुदेव नायर, पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह, प्रीतीश नंदी, एसएम कृष्णा, राम जन्मभूमि के ट्रस्टियों में से एक कामेश्वर चौपाल, तुलसी गौड़ा, शंकर तत्ववादी, देबेंद्र प्रधान, बिबेक देबराय को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 25 से 40 वर्ष के 1.63 लाख लोग आरएसएस से जुड़े, जबकि 40 साल से ऊपर के 20,000 लोग संगठन से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि 2012 से अब तक 12,73,453 से ज्यादा लोग हमारे साथ जुड़े और 46,000 महिलाओं ने रुचि दिखाई है। सीआर मुकुंदा ने कहा कि अरुणाचल, मणिपुर और बाहर के लोगों ने भी रुचि दिखाई है।

नक्सलियों का छुपाया हुआ हथियारों का जखीरा बरामद

गरियाबंद, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद पुलिस ने नक्सलियों का छुपाया हुआ धन और हथियारों का जखीरा खोज निकाला है तथा उन्हें जब्त कर लिया है। पुलिस ने शुक्रवार को मैनपुर थाना क्षेत्र से लगे पंडरी पानी से नक्सलियों का जमीन में छुपाया गया आठ लाख नगद और हथियारों समेत नक्सल साहित्य भी बरामद किया है। अब पुलिस नक्सलियों को नगद देने वाले स्रोत का भी पता लगाने में जुट गई है। गरियाबंद पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि मैनपुर थाना क्षेत्र से लगे पंडरी पानी के पहाड़ी इलाके में धमतरी गरियाबंद नुआपड़ा डिविजन कमेटी के द्वारा उगाही की रकम छिपा कर रखा गया था।

मणिपुर में 3 उग्रवादी गिरफ्तार, हथियार भी बरामद

इंफाल, एजेंसी। मणिपुर पुलिस ने पिछले 24 घंटों के दौरान इंफाल पश्चिम, जिरीबाम, थौबल और कांगपोकपी जिलों में तीन उग्रवादियों को गिरफ्तार किया और उनके पास से भारी मात्रा में हथियार बरामद किए। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि उनकी टीम ने इम्फाल पश्चिम जिले के सिंगजामेई-पीएस के अंतर्गत लिलोंग चाजिंग ममांग लेईकाई से केसीपी (एमएफएल) के तीन कैडरों को गिरफ्तार किया है। ये लोग फिरौती के लिए अपहरण करने में शामिल थे।

सूडान में सेना का राष्ट्रपति भवन पर फिर से कब्जा

दुबई/काहिरा, एजेंसी। सूडानी सेना ने शुक्रवार को खार्तूम के डाउनटाउन में राष्ट्रपति भवन पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया। हाल के हफ्तों में सेना ने शहर में प्रतिद्वंद्वी रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (आरएसएफ) के खिलाफ अपना अभियान तेज कर दिया है। खार्तूम पर फिर से कब्जा करना सेना के लिए एक बड़ी प्रतीकात्मक जीत है और संघर्ष में एक निर्णायक मोड़। राष्ट्रपति महल का ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्व बहुत अधिक है। राष्ट्रपति का महल खार्तूम के मध्य में है। यह वह क्षेत्र है जिसमें अधिकांश सरकारी मंत्रालय और वित्तीय संस्थान शामिल हैं।

अरुणाचल में अंतरराज्यीय ड्रग गिरोह का भंडाफोड़

ईटानगर, एजेंसी। अरुणाचल प्रदेश पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए यहां के निकट चिम्पू में सक्रिय अंतरराज्यीय मादक पदार्थ तस्करी नेटवर्क का भंडाफोड़ करते हुए दो तस्करों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से 60.4 ग्राम संदिग्ध मादक पदार्थ के साथ 40 हजार रुपए नकद जब्त किए हैं। ईटानगर पुलिस अधीक्षक रोहित राजबीर सिंह ने कहा कि विश्वसनीय खुफिया जानकारी पर कार्रवाई करते हुए एसडीपीओ केंगो दिर्ची के नेतृत्व में एक पुलिस दल ने ईटानगर पुलिस थाना के प्रभारी अधिकारी विवेक मौर्य, चिम्पू पीएस ओसी यू विबू कृष्णा, एसआई तामो बखांग और चिम्पू थाना टीम के साथ 20 मार्च को एक त्वरित अभियान शुरू किया। पहली गिरफ्तारी चिम्पू में हुई, जहां आरोपी विकास बर्मन, एक आदतन मादक पदार्थ तस्कर, हेरोइन बेचने का प्रयास करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया। उसके कब्जे से अवैध पदार्थ का एक पैकेट और वितरण के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक दोपहिया वाहन बरामद किया गया।

दिल्ली हाईकोर्ट जज बंगले में आग लगने के बाद 15 करोड़ मिलने के मामले में नया मोड़-

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- अफवाह फैलाई जा रही.. फायर बिग्रेड मुखिया बोले- नहीं मिली नकदी

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली हाई कोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के यहां आग लगने के बाद 15 करोड़ नकद मिलने के मामले में नया मोड़ आ गया है। यह गंभीर मामला जहां राज्यसभा में उठा वहीं सुप्रीम कोर्ट ने एक बयान जारी कर कहा है कि-जस्टिस यशवंत वर्मा के आवास पर हुई घटना के संबंध में गलत सूचना और अफवाहें फैलाई जा रही हैं। वर्मा दिल्ली हाई कोर्ट में दूसरे सबसे वरिष्ठ जज हैं और कॉलेजियम के सदस्य हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उनको इलाहाबाद हाईकोर्ट में ट्रांसफर करने का प्रस्ताव निष्पक्ष और जांच प्रक्रिया से बिल्कुल अलग है। वह हाईकोर्ट में वरिष्ठता में 9वें नंबर पर होंगे। दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने 20 मार्च की कॉलेजियम बैठक से पहले जांच शुरू की थी और आज सीजेआई को रिपोर्ट सौंपेंगे। चीफ जस्टिस की रिपोर्ट पर गौर किया जाएगा और आगे की आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। वहीं हाईकोर्ट बार एसोसिएशन इलाहाबाद ने जस्टिस यशवंत वर्मा को दिल्ली हाईकोर्ट से इलाहाबाद हाईकोर्ट ट्रांसफर किए जाने पर कड़ा ऐतराज जताया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी ने शुक्रवार को कहा कि अगर किसी आम कर्मचारी के घर से 15 लाख रुपये मिलते हैं, तो उसे जेल भेज दिया जाता है। एक न्यायाधीश के घर से 15 करोड़ रुपये की नकदी मिलती है और उसे 'घर वापसी' दी जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने 'इन हाउस' जांच शुरू की

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के आवास पर पिछले दिनों आग लगने के बाद कथित तौर बड़ी संख्या में नकदी की बरामदगी संबंधी प्रतिकूल रिपोर्ट के आधार पर इस मामले में 'इन-हाउस' जांच शुरू की है। सूत्रों ने बताया कि उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने इस संबंध में दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डी के उपाध्याय से एक तथ्य-खोजी रिपोर्ट भी मांगी है।

डीएफएस चीफ गर्ग ने कहा

एक न्यूज चैनल की रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली फायर सर्विस चीफ अतुल गर्ग ने शुक्रवार को बताया कि दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस वर्मा के आवास पर लगी आग बुझाने के दौरान फायर ब्रिगेड की टीम को नकदी नहीं मिली। गर्ग ने बताया कि 14 मार्च की रात 11.35 बजे कंट्रोल रूम को वर्मा के लुटियंस दिल्ली में मौजूद आवास पर आग लगने की सूचना मिली और दो दमकल गाड़ियां तुरंत मौके पर पहुंच गईं। रात 11.43 बजे फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। 15 मिनट में काबू कर वापस लौट गए।

राज्यसभा में उठा मामला, धनखड़ बोले-सिस्टम में पारदर्शिता, जवाबदेही जरूरी

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने इस मुद्दे को सदन में उठाते हुए ज्यूडिशियल अकाउंटेबिलिटी पर चर्चा की मांग की। राज्यसभा के चेयरमैन और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इस पर जवाब देते हुए कहा कि सिस्टम में पारदर्शिता और जवाबदेही जरूरी है और वह इस मुद्दे पर एक स्ट्रक्चर्ड डिस्कशन करवाएंगे। जयराम रमेश ने कहा- आज सुबह हमने एक चौंकाने वाली खबर पढ़ी, जिसमें दिल्ली हाईकोर्ट के एक जज के घर से भारी मात्रा में नकदी बरामद होने की बात सामने आई है। रमेश ने यह भी याद दिलाया कि पहले 50 सांसदों ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज के खिलाफ महाभियोग का नोटिस दिया था, लेकिन उस पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने चेयरमैन से अनुरोध किया कि न्यायिक जवाबदेही बढ़ाने के लिए सरकार को दिशा-निर्देश दिए जाएं।

कांग्रेस विधायक ने उठाया झूठी एफआईआर का मामला

विधानसभा में रो पड़े मंत्री, विधायक भी हुए भावुक

भोपाल, देशबन्धु। विधानसभा में आज सेमरिया कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा ने बेटे के खिलाफ रीवा जिले में दर्ज झूठी एफआईआर का मामला उठाया तो इसका जवाब देते हुए राज्यमंत्री शिवाजी पटेल रोने लगे। उन्होंने कहा कि मेरे बेटे के खिलाफ भी मामला दर्ज किया गया था। इस दौरान कांग्रेस विधायक भी भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि चुनाव लड़ना अपराध हो गया है। मेरे और बेटे के खिलाफ मामले दर्ज किए जा रहे हैं। मंत्री श्री पटेल ने इस मामले में रीवा के चोरहटा के थाना प्रभारी को निलंबित करने की घोषणा भी की। मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल रोने लगे। उन्होंने कहा कि यह बेटे की बात है। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों भोपाल में नरेंद्र शिवाजी के बेटे की भी पुलिस ने मारपीट की थी।

कांग्रेस विधायक भंवर सिंह शेखावत ने कहा कि जनता के चुने गए प्रतिनिधि की दुर्गति हो रही है। सभी पुलिस अपराध में लग गई है। जनता के साथ दुर्व्यवहार के कारण पुलिस पिट रही है।

थाना प्रभारी के निलंबन की घोषणा

न्याय के लिए आपके चरणों में गिरने को तैयार

इससे पहले विधायक अभय मिश्रा ने सदन में कहा कि वे न्याय के लिए आपके चरणों में गिरने को तैयार हैं, पर इस मामले में कार्रवाई होनी चाहिए। इस पर मंत्री पटेल ने कहा कि किसी तरह का अन्याय नहीं होने देंगे। पुलिस का मनोबल बना रहे इसलिए थाना प्रभारी को जिले से हटाकर जांच करा लेंगे। लेकिन नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इस पर आपत्ति जताई। विधायक भंवर सिंह शेखावत ने भी कहा कि टीआई को निलंबित किया जाना चाहिए। इसके बाद मंत्री ने थाना प्रभारी के निलंबन की घोषणा की।

मालनपुर में एक हजार करोड़ की लागत की आधुनिक मेगा इकाई का भूमि-पूजन

औद्योगिक विकास में चंबल क्षेत्र लिख रहा सुनहरा अध्याय : मुख्यमंत्री

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि चंबल अब विकास के नाम से पहचाना जाता है। इस क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सोच और प्रदेश सरकार के संकल्प के कारण अनेक औद्योगिक इकाईयां प्रारंभ हुई हैं। इन औद्योगिक इकाईयों के प्रारंभ होने से बेरोजगार युवकों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। चंबल की भूमि उपजाऊ है, कमाऊ है, साथ ही टिकाऊ भी है। चंबल जैसा टिकाऊ जज्बा और कहीं देखने को नहीं मिलता है। डॉ. यादव ने कहा कि

प्रदेश के औद्योगिक विकास का जो सपना देखा है, चंबल क्षेत्र उसमें सुनहरा अध्याय लिख रहा है। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कही। डॉ. यादव ने शुक्रवार को भिण्ड जिले के मालनपुर में 1 हजार करोड़ रुपए की लागत से एलिक्सर इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड की आधुनिक मेगा इकाई का भूमि-पूजन करते हुए यह बात कही। उन्होंने इस मौके पर रेडीमेड गारमेंट ग्वालियर की 7 इकाईयों और मुरैना जिले के औद्योगिक क्षेत्र पिपरसेवा की 11 इकाईयों का भी भूमिपूजन किया। डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए हर संभव कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में ग्वालियर-चंबल संभाग में भी अनेक औद्योगिक इकाइयां स्थापित हो रही हैं, जिनके माध्यम से ग्वालियर-चंबल संभाग के युवाओं को बेहतर रोजगार उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि चंबल-कालीसिंध-पार्वती लिंक परियोजना क्षेत्र में खुशहाली लेकर आएगी। इस परियोजना से चंबल को सर्वाधिक लाभ प्राप्त होगा। कार्यक्रम में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री एवं भिण्ड जिले के प्रभारी मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि चंबल क्षेत्र औद्योगिक रूप से विकसित हो रहा है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक विकास से न केवल क्षेत्र का आर्थिक विकास होगा, बल्कि यहां के युवाओं को बेहतर रोजगार भी उपलब्ध होंगे। वहीं ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए। उन्होंने कहा कि नवीन इकाईयां स्थापित होने से क्षेत्र के युवाओं को बेहतर अवसर मिल सकेंगे। इस मौके पर प्रदेश के नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री राकेश शुक्ला, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह भदौरिया, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष लाल सिंह आर्य, विधायक गोहद केशव देसाई, लहार विधायक अम्बरीश शर्मा, देवेन्द्र सिंह नरवरिया एवं एलिक्सर इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमेन अरुण गोयल सहित क्षेत्रीय जन-प्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

उद्योगपतियों से मुख्यमंत्री ने किया वर्चुअल संवाद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मालनपुर में आयोजित समारोह से ग्वालियर रेडीमेड गारमेंट पार्क में स्थापित की जा रही नई इकाईयों के संचालकों और मुरैना जिले के पिपरसेवा में स्थापित की जा रही नई इकाईयों के संचालकों से भी वर्चुअली संवाद किया। डॉ. यादव ने ग्वालियर रेडीमेड पार्क से अमित जैन, मोहित शिवहरे, हर्षित बंसल एवं संजय खण्डेलवाल से नई इकाइयों के संचालन के संबंध में चर्चा की। डॉ. यादव ने सभी को नई इकाई प्रारंभ करने पर बधाई दी।

मंत्री विश्वास सारंग ने की घोषणा

हर विधानसभा क्षेत्र में बनेगा खेल स्टेडियम

चीता बीज के नाम से नया ब्रॉण्ड लांच किया जाएगा

भोपाल, देशबन्धु। सहकारिता और खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने घोषणा की है कि प्रत्येक विधानसभा स्तर पर खेल स्टेडियम बनाने वाला पहला राज्य बनेगा। विभागों की अनुदान मांगों पर विधानसभा में चर्चा का उत्तर देते हुए उन्होंने यह घोषणा की है। श्री सारंग ने कहा कि यह वर्ष अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। मध्यप्रदेश सरकार बीज की दिशा में काम कर रही है। बीज संघ के माध्यम से चीता बीज के नाम से नया ब्रॉण्ड लांच किया जा रहा है। पैक्स के माध्यम से चीता बीज का वितरण किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि पैक्स को अग्रणी बनाने की दिशा में भी काम किया जा रहा है। इसके लिये एम-पैक्स की अवधारणा की गयी है। प्राथमिक समिति केवल क्रेडिट का काम न कर बहुउद्देश्यीय बनायी जा रही है। दो पैक्स को पेट्रोल की डीलरशिप भी मिली है। प्रत्येक विधानसभा स्तर पर खेल स्टेडियम बनाने वाला पहला राज्य बनेगा मध्यप्रदेश, सदन में 2700 करोड़ 41 लाख 88 हजार की अनुदान मांगे सर्व-सहमति से पारित मंत्री सारंग ने कहा कि पैक्स के कम्प्यूटराइजेशन में मध्यप्रदेश देश में नम्बर-1 पर है। सभी पैक्स संस्थाओं के कम्प्यूटराइजेशन का कार्य लगभग हो चुका है। सहकारिता विभाग में भर्ती के मामले में भी मध्यप्रदेश अव्वल है।

अनुदान मांगों पर हुई चर्चा के उत्तर में बोले विजयवर्गीय

नगरों का मास्टर प्लॉन 25 वर्ष को ध्यान में रखकर तैयार किया जाएगा

भोपाल, देशबन्धु। नगरीय विकास, आवास एवं संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि राज्य सरकार नगरों के सुनियोजित विकास के लिए वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि विकास की गति को और तेज करने के लिए जन-प्रतिनिधि जन-भागीदारी को बढ़ावा देने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि शहरों का मास्टर प्लान 25 वर्ष को ध्यान में रखकर तैयार किया जाएगा। विधानसभा में अनुदान मांगों पर हुई चर्चा का उत्तर देते हुए श्री विजयवर्गीय ने बताया कि वर्ष 2003 में विभागीय बजट जहां करीब 650 से 750 करोड़ हुआ करता था, वह 2025-26 में बढ़कर करीब 19 हजार करोड़ तक हो गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश में व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 2 मेट्रोपॉलिटन सिटी इंदौर-भोपाल में बनाने का फैसला किया है। इससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। श्री विजयवर्गीय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 को ध्यान में रखते हुए शहरों के विकास की योजना तैयार की है। इसे देखते हुए मध्यप्रदेश में भी शहरी क्षेत्रों का विकास प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप किया जाएगा। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने बताया कि राज्य सरकार नगरीय निकायों को आत्मनिर्भर बनाने की लगातार कोशिश कर रही है।

इजरायली हमलों में हजारों बच्चे गंभीर रूप से हुए घायल

गाजा में 3 दिनों में 2 सौ से अधिक बच्चे मारे गए

जिनेवा, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने कहा है कि इजरायली हमलों के परिणामस्वरूप मंगलवार से अब तक गाजा पट्टी में कम से कम 200 बच्चे मारे गए हैं।

गाजा में यूनिसेफ की अधिकारी रोसालिया बोलन ने अल जजीरा प्रसारक से कहा, 18 मार्च की सुबह से भारी गोलाबारी फिर से शुरू होने के बाद से अब तक 200 से अधिक बच्चे मारे गए हैं। उन्होंने बताया कि हजारों बच्चे गंभीर रूप से घायल हुए हैं और हाल के दिनों में लड़ाई के कारण गाजा पट्टी के अस्पताल इस जिम्मेदारी को संभालने में असमर्थ हैं। सुश्री बोलन ने कहा कि गाजा पट्टी में खाद्य नाकाबंदी का वहां के निवासियों पर भारी प्रभाव पड़ा है, जिन तक बुनियादी आवश्यकताओं तक की पहुंच नहीं हो पा रही है। यूनिसेफ अधिकारी ने कहा कि गाजा पट्टी में आपातकालीन सेवाओं के लिए भी कोई सुरक्षित स्थान नहीं बचा है। गौरतलब है कि इजरायली रक्षा बलों ने मंगलवार को फिलिस्तीनी एन्क्लेव के खिलाफ हमले फिर से शुरू कर दिए। इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि हमास द्वारा युद्धविराम व्यवस्था को आगे बढ़ाने और बंधकों की रिहाई जारी रखने की अमेरिकी योजना को स्वीकार करने से इनकार करने के जवाब में हमले फिर से शुरू किए गए हैं।

'आप' ने किए कई बड़े बदलाव

भारद्वाज को दिल्ली की कमान, सिसोदिया पंजाब के प्रभारी

नई दिल्ली, देशबन्धु। आम आदमी पार्टी (आप) ने शुक्रवार को बड़ा फैसला लेते हुए सौरभ भारद्वाज को दिल्ली में पार्टी अध्यक्ष का जिम्मा सौंपा है। पार्टी ने उन्हें पूर्व मंत्री और बाबरपुर से विधायक गोपाल राय के स्थान पर दिल्ली का नया प्रदेश अध्यक्ष बनाया हैं। पार्टी ने दो राज्यों में अध्यक्ष और चार राज्यों में पार्टी प्रभारियों की नियुक्ति की है।

आम आदमी पार्टी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी (पीएसी) की बैठक में ये निर्णय लिया गया है। पार्टी ने पंजाब की जिम्मेदारी दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को दी है। उन्हें राज्य प्रभारी का जिम्मा सौंपा है, जबकि सह प्रभारी सत्येंद्र जैन को नियुक्त किया है।

सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली की ग्रेटर कैलाश विधानसभा सीट चुनाव से लड़ा था। लेकिन, उन्हें भाजपा की शिखा राय के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। दिल्ली विधानसभा में 'आप' को 22 सीटों पर जीत मिली। वहीं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को 48 सीटों के साथ 27 साल बाद राज्य में सरकार बनाने में सफल रही। इसके अलावा आम आदमी पार्टी ने गोपाल राय को गुजरात का प्रभारी नियुक्त किया है, वहीं दुर्गेश पाठक को सह प्रभारी का जिम्मा दिया गया है। आम आदमी पार्टी ने पंकज गुप्ता को गोवा का प्रभारी और अंकुश नारंग, आभास चंदेला और दीपक सिंगला को सह प्रभारी बनाया है।

पाठक को छग का प्रभारी बनाया

वहीं पार्टी ने राज्यसभा सांसद संदीप पाठक को छत्तीसगढ़ का प्रभारी बनाया है। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर में आम आदमी पार्टी ने मेहराज मलिक को प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी है। मेहराज मलिक घाटी में आप के इकलौते विधायक हैं।

आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की हुई बैठक

आतंकवाद से निपटने के लिए मजबूत रणनीति पर दिया बल

नई दिल्ली, एजेंसी। आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों और विशेषज्ञ कार्य समूह की आतंकवाद पर 14 वीं बैठक में आतंकवाद और उग्रवाद के उभरते खतरे से निपटने के लिए एक मजबूत और व्यापक रणनीति विकसित करने पर बल दिया गया है। बैठक में आसियान सचिवालय, आसियान देशों (लाओ पीडीआर, मलेशिया, इंडोनेशिया, म्यांमार, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया, फिलीपींस और वियतनाम), एडीएमएम-प्लस सदस्य देशों (चीन, अमेरिका, रूस, ऑस्ट्रेलिया, जापान और कोरिया गणराज्य) के प्रतिनिधिमंडलों ने भाग लिया।

इस दौरान विशेषज्ञ कार्य समूह के सह-अध्यक्षों भारत और मलेशिया ने 2024-2027 चक्र के लिए नियोजित गतिविधियों के लिए कार्य योजना बताई। वर्ष 2026 में मलेशिया में आतंकवाद से निपटने के लिए टेबल-टॉप अभ्यास और 2027 में भारत में फील्ड प्रशिक्षण अभ्यास आयोजित करने की घोषणा की गयी।

दो दिन की बैठक के दौरान आतंकवाद और उग्रवाद के उभरते खतरे से निपटने के लिए एक मजबूत और व्यापक रणनीति विकसित करने के लिए विस्तार से चर्चा हुई। बैठक का उद्देश्य आसियान देशों के रक्षा बलों और उसके संवाद भागीदारों के जमीनी अनुभव को साझा करना था। बैठक ने वर्तमान चक्र के लिए नियोजित गतिविधियों, अभ्यासों और बैठकों तथा कार्यशालाओं की नींव रखी।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

रेलवे स्टेशन की लिफ्ट फिर खराब, बुजुर्ग, दिव्यांग यात्रियों को हो रही परेशानी

इटारसी, देशबन्धु। रेलवे स्टेशन की मुख्य द्वार की लिफ्ट खराब होने से यात्रियों को परेशान होना पड़ रहा है। खासकर बुजुर्ग और दिव्यांग यात्रियों को खासी दिक्कतें हो रही हैं। यहां लगा एस्केलेटर पहले से ही बंद पड़ा है, ऐसे में लिफ्ट में तकनीकि खराबी होने से लिफ्ट भी बंद हो गयी है।

अब लोगों को सीढ़ियों से ब्रिज के ऊपर जाना पड़ रहा है। बता दें कि रेलवे स्टेशन की लिफ्ट खराब होने की समस्या पहली बार नहीं हुई है। यहां की लिफ्ट ज्यादातर समय बंद ही रहती है। एक बार फिर यात्रियों को इन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। पहले जब यहां एस्केलेटर था, वह भी जब-तब बंद रहता था। स्थानीय प्रबंधन की अनदेखी के कारण यात्रियों को अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ती है। लिफ्ट खराब होने से महिला, बुजुर्ग और दिव्यांग यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है, उन्हें फुटओवर ब्रिज की सीढ़ियां चढ़कर प्लेटफार्म पर पहुंचना पड़ रहा है।

पूर्व पार्षद यज्ञदत्त गौर ने प्रधानमंत्री आवास की बढ़ी राशि के विरोध और हितग्राहियों के पक्ष में लिखा अधिकारी को पत्र

इटारसी। नगर पालिका परिषद के पूर्व पार्षद यज्ञदत्त गौर ने प्रधानमंत्री आवास योजना के कार्यपालन अधिकारी को एक पत्र देकर इटारसी (म.प्र) नगरपालिका द्वारा एएचपी घटक के आवासों का मूल्य बढ़ा कर पात्र हितग्राहियों को योजना लाभ से वंचित रखे जाने की शिकायत की है।

श्री गौर ने अपने पत्र में कहा है कि इटारसी नगरपालिका द्वारा वर्ष 2017 में आवेदन आमंत्रित एवं 10,000 रुपए जमा कराकर एलआईजी आवासों हेतु पंजीयन कराया गया था। आवेदन के समय इन आवासों का मूल्य 9.40 लाख रु दर्शाया गया था, जो योजना के नियमों अनुसार उचित था। वर्तमान में बिना कोई कारण बताए ऐसे आवासों का मूल्य बढ़ाते हुए 15.50 लाख रु कर दिया है तथा ऐसे मूल्य की 10 प्रतिशत अर्थात 1.50 लाख रुपए तत्काल जमा करने अन्यथा योजना से बाहर कर दिया जाना बताया जा रहा है।

निम्न आय वर्ग (एलआईजी) के हितग्राही हेतु इतने पैसे की व्यवस्था करना तथा इतना महंगा आवास ले पाना असंभव है, साथ ही ऐसा निर्णय प्रधानमंत्री के लक्ष्य एवं योजनाओं के भी विपरीत है। आश्चर्यजनक रूप से निकाय पूर्व में ही इन आवासों के भूतल पर दुकानें बना एवं बेचकर लाभ अर्जित कर चुका है, जबकि प्रधानमंत्री आवास योजना के मल्टी स्टोरी बिल्डिंग में व्यवसायिक प्रयोजन का प्रावधान ही नहीं है। उन्होंने अनुरोध किया है कि प्रकरण की विस्तृत जानकारी ले जनहित में उचित कार्यवाही करने का कष्ट करें।

पासी समाज का परिचय सम्मेलन 23 मार्च को

इटारसी, देशबन्धु। पासी समाज का युवक-युवती परिचय सम्मेलन 23 मार्च को पासी समाज महासंघ के तत्वावधान में स्व. ईश्वरदास रोहाणी सामुदायिक भवन कटंगा में आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन में दो कन्याओं का विवाह भी होगा। समाज के डॉ. ऋषि बावरिया, तोताराम बावरिया, धनराज बावरिया, जगमोहन, श्याम सुंदर बावरिया, कन्हैया पासी ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कारागार मंत्री यूपी सरकार सुरेश राही होंगे। अध्यक्षता सांसद आशीष दुबे करेंगे और विधायक अशोक रोहाणी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इस अवसर पर जितेन्द्र वर्मा, आरके पासी, विजय पासी, धर्मेन्द्र बावरिया, संजय बावरिया, उर्मिला बावरिया, सीमा पासी आदि उपस्थित रहेंगे।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग, किसान की फसल जलकर खाक

बैतूल, देशबन्धु। बिजली कम्पनी के अधिकारियों की लापरवाही एक किसान पर इतनी भरी पड़ गई कि किसान के खेत में लगी गेहूं की फसल शॉर्ट सर्किट से लगी आग की भेंट चढ़ गई। किसान का आरोप है कि बिजली के तारों में

बार बार स्पार्किंग होने के बावजूद सुधार कार्य नहीं किया जा सका और फसल पूरी तरह जलकर खाक हो गई।

पीड़ित किसान देवेंद्र पिता शिवाजीराव घिडोडे ने बताया कि साईंखेड़ा थाना क्षेत्र स्तिथ ग्राम कावला में उनके खेत के 4 एकड़ हिस्से में गेहूं की फसल लगी हुई थी। फसल पूरी तरह पक चुकी थी। खेत के ही पास झूलते बिजली के तारों में पिछले कुछ दिनों से स्पार्किंग हो रही थी जिसकी सूचना बिजली कम्पनी के जेई सहित लाइनमेनो को भी दी गई थी लेकिन सुधार कार्य नहीं करवाया जा सका। शुक्रवार दोपहर 12 बजे बिजली के तारो में पुनः स्पार्किंग हुई और फसल में आग लग गई। खेत के 4 एकड़ में लगी फसल पूरी तरह जलकर खाक हो गई। इससे लगभग 2 लाख रुपए का नुकसान हुआ है।

स्वच्छता की परीक्षा शुरु, टीमें आकर जांचेंगी सफाई का पैमाना

इटारसी, देशबन्धु। शहर स्वच्छता सर्वेक्षण की परीक्षा दे रहा है। स्वच्छता का परीक्षण करने टीमें आना प्रारंभ हो गयी हैं। कई शहरों में टीमें सर्वे कर चुकी हैं। इटारसी नगर पालिका ने भी अपनी ओर से लगभग वे सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं, जिनका स्वच्छता टीम को परीक्षण करना है। स्वच्छता सर्वेयर घर-घर जाकर भी लोगों से कुछ सवाल करेंगे। माना जा रहा है कि एक वार्ड में कम से कम पंद्रह लोगों से बातचीत की जाएगी। थ्री आर की कसौटी पर शहर की स्वच्छता को परखा जाएगा।

थ्री आर का मतलब है, कम करना, पुनः उपयोग करना, और पुनर्चक्रण करना। यह एक सिद्धांत है जिसका मकसद अपशिष्ट को कम करना और संसाधनों का संरक्षण करना है। थ्री आर के सिद्धांतों को अपनाने से अपशिष्ट कम होता है। इससे प्राकृतिक संसाधनों, ऊर्जा, और लैंडफ़िल की जरूरत कम होती है। इससे भूमि और धन की बचत होती है, इससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है, इससे टिकाऊ और परिपत्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

नगर पालिका की तैयारी- बाजार में डस्टबिन लगाये गये हैं। ये डस्टबिन खासकर राहगीरों के लिए हैं, लेकिन दुकानदार इनमें कचरा नहीं डाल सकते। क्योंकि दुकानदारों को स्वयं डस्टबिन रखना अनिवार्य है, जिसमें वे कचरा एकत्र करेंगे और फिर नगर पालिका की कचरा गाड़ी आने पर उसमें डालेंगे। राहगीर जो बाजार में चीजें खरीदकर कचरा फैंकते हैं, उनके लिए ये छोटे डस्टबिन लगाये जाते हैं, जैसे आइसक्रीम का रैपर, पाउच का रैपर आदि। दुकानदारों के लिए कचरा वाहन चल रहे हैं।

शौचालय का रंग रोगन, मरम्मत- नगर पालिका ने सार्वजनिक और सामुदायिक शौचालयों में रंग-

रोगन करके उसमें स्वच्छता संबंध संदेश भी अंकित कराये हैं। इसके अलावा शौचालय में कहीं मरम्मत की जरूरत है, तो उसे ठीक किया है। रैंप लगाये हैं, बच्चों के मुताबिक काम कराया है। दिव्यांगों की सुविधा के अलावा पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और सफाई के लिए काम किया है। स्वच्छता सर्वेयर इन सारी चीजों का भी परीक्षण करेंगे और उसी के आधार पर नगर पालिका को नंबर दिये जा सकेंगे।

कुछ अन्य तैयारियां- नगर पालिका ने कबाड़ से जुगाड़ के अंतर्गत अटल पार्क में कबाड़ के लोहे से शेर, टायरों और लोहे से तोप बनायी है तो वाचनालय में भी टायरों से बैंच-कुर्सियां आदि तैयार की हैं। पुरानी इटारसी में नालों में लोग कचरा न डालें इसके लिए कई स्थानों पर जालियां लगायी गई हैं। जिलवानी में कचरा डंपिंग स्थल पर बैंच लगायी हैं तो यहां गीला और सूखा कचरा अलग-अलग किया जा रहा है। दावा है कि एमआरएफ सेंटर पर बेहतर कार्य किया जा रहा है।

इनका कहना है...

स्वच्छता सर्वेक्षण के मुताबिक हमारी तैयारी पूरी है, टीम आएगी और लोगों से भी फीडबैक लिया जाएगा। हमने सर्वे में बेहतर स्थान पाने के लिए काफी मेहनत की है, उम्मीद है हमें अच्छे अंक हासिल करके बेहतर स्थान मिलेगा।

- मयंक अरोरा, सब इंजीनियर, नोडल अधिकारी स्वच्छता विभाग

भगवान परशुराम पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर किया विरोध

विप्र समाज ने फूंका कांग्रेस नेत्री का पुतला

इटारसी, देशबन्धु। महिला कांग्रेस की प्रदेश महामंत्री रेखा विनोद जैन ने हाल ही में भगवान परशुराम और हिंदुत्व को लेकर गलत टिप्पणी की थी। जैन ने अपनी पोस्ट में भगवान परशुराम की तुलना मुगल शासक औरगंजेब से कर दी थी, इस बयान के बाद से ही पूरे प्रदेश में जैन का विरोध जारी है। इस बयानबाजी को लेकर जिला सर्व ब्राह्मण समाज ने गुरूवार शाम जयस्तंभ चौक पर रेखा जैन का पुतला दहन कर उनके बयान का विरोध करते हुए रैली निकाली। विप्र समाज के नेताओं ने रेखा जैन के इस बयान की घोर निंदा करते हुए कहा कि जैन समुदाय की महिला होने के बावजूद उन्होंने विप्र समाज के आराध्य भगवान विष्णु के अवतार परशुराम जी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की है, उन्हें सनातन धर्म का ज्ञान नहीं है। इस अवसर पर जिला सर्व ब्राह्मण समाज अध्यक्ष जितेन्द्र ओझा, तहसील अध्यक्ष अशोक दुबे, सौरभ शुक्ला, संतोष चतुर्वेदी, चुटई महाराज, परशुराम सेना जिलाध्यक्ष प्रकाश दुबे, उपाध्यक्ष शैलेन्द्र दुबे, महेन्द्र जोशी, जिला सचिव सर्वेश शर्मा, आलोक दीक्षित, सेना नगर अध्यक्ष मनोज शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष अभिनव शर्मा, अनिरूद्ध चंसौरिया, शैलेन्द्र भट्ट, विजय दुबे, आलोक दीवान, प्रशांत चौबे, रूपेश शर्मा, ललित दुबे, आस्तिक ओझा, आदित्य दीक्षित, वैदिक तिवारी, चिराग परसाई, श्रेयांक तिवारी, रितुराज पाराशर, प्रदीप दीवान, राहुल तिवारी, शुभम दीवान, अंकित तिवारी, आदेश दुबे, शानू लाटा, मयंक परसाई, सिद्धार्थ शुक्ला समेत अन्य युवा मौजूद रहे।

धान की बंपर आवक को देखते हुए शनिवार-रविवार को भी खुली रहेगी मंडी

इटारसी, देशबन्धु। इन दिनों कृषि उपज मंडी में धान की बंपर आवक हो रही है। अन्य अनाज भी यहां आ रहे हैं जिससे मंडी परिसर में स्थान का अभाव हो रहा है। किसानों को परेशानी न हो, और धान की नीलामी भी समय पर हो जाए, इसके लिए मंडी प्रबंधन ने शनिवार और रविवार को भी कृषि मंडी में नीलामी जारी रखने का फैसला किया है। मंडी सचिव एके परिहार ने बताया कि 21 से 29 मार्च तक लगातार काम होगा। धान की आवक को देखते हुए प्रतिदिन नीलामी और तौल कार्य नियमित रूप से चलेगा। इस दौरान शनिवार और रविवार को भी मंडी खुली रहेगी। इस अवधि में कर्मचारियों के अवकाश भी निरस्त कर दिये हैं।

विज्ञान के पर्चे के साथ दसवीं की परीक्षा समाप्त

इटारसी, देशबन्धु। मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा दसवी की परीक्षा शुक्रवार को खत्म हो गयी है। आज अंतिम पेपर विज्ञान विषय का था। परीक्षा के लिए शहर के 6 अलग-अलग स्थान पर परीक्षा केंद्र बनाए थे। शुक्रवार को कक्षा दसवीं के परीक्षार्थियों के द्वारा बोर्ड परीक्षा के तहत विज्ञान विषय का पर्चा हल किया। इसके साथ ही दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा का समापन बिना कोई नकल प्रकरण बने हो चुका है। शुक्रवार को शहर के सभी 6 परीक्षा केंद्रों पर कुल दर्ज संख्या 1163 में से उपस्थिति 1140 रही, और 23 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। इधर केसला आदिवासी विकासखंड के सभी 10 परीक्षा केंद्रों में दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के अंतिम दिन कुल दर्ज संख्या 1216 में से 1184 उपस्थित रहे, वही 32 परीक्षार्थी विज्ञान विषय के पेपर में अनुपस्थित रहे। कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं संचालित हो रही हैं, 25 मार्च को 12 वीं कक्षा का गणित विषय का पेपर परीक्षार्थियों के द्वारा हल किया जाएगा।

इटारसी में भी जमा होता है, पाकिस्तानी संस्था के लिए फंड

विधायक के प्रश्न पर विस में दी जानकारी

इटारसी, देशबन्धु। पाकिस्तानी संस्था के लिए इटारसी में भी जमा किया जाता है, धन। इटारसी के पास पांडरी और नाला मोहल्ला निवासी करते हैं, इसका संचालन। यह हम नहीं कह रहे बल्कि विधायक डॉ.सीतासरन शर्मा के सवालों के जवाब में खुद प्रदेश के मुख्यमंत्री ने विधानसभा में यह जानकारी दी है।

विधायक ने पूछा था कि पाकिस्तानी संस्था दावते इस्लामी के लिए धन एकत्रीकरण के उनके पत्र पर क्या जांच करायी गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि एसडीओपी इटारसी ने तथ्यात्मक जांच की है जिसमें नर्मदापुरम जिले के इटारसी में प्राप्त इस्लामी गुल्लक मुसलमान समुदाय के घर एवं दुकानों पर रखे जाने के संबंध में दावत-ए-इस्लामी हिन्द संस्था के जिला व संभाग अध्यक्ष साजिद खान पिता नासिर खान 32 वर्ष, निवासी पांडरी थाना पथरोटा, तहसील इटारसी तथा संस्थान के अनुयायी शाहबुदीन खान पिता रहमउद्दीन खान 62 वर्ष निवासी नाला मोहल्ला इटारसी हैं। संस्था के संस्थापक मौलाना इल्यास अत्तार कादरी थे जो वर्ष 1980 में जबलपुर से शुरु हुई थी। वर्तमान में यह दो सौ देशों में कार्यरत है। विश्व स्तर पर इसका मुख्यालय पाकिस्तान के करांची में है, जबकि भारत में मुंबई में। संस्थान के लोगों द्वारा गुंडागर्दी की शिकायत संबंधी जांच में किसी कर्मचारी के नाम पर कोई संज्ञेय अपराध होना नहीं पाया गया है।

कोई आवेदन नहीं दिया- विधायक ने विस में यह सवाल भी किया है कि क्या महाराजा प्राथमिक उपभोक्ता भंडार मर्या. वार्ड 13 इटारसी के संचालकों द्वारा फर्जी सदस्य बनाने सहित अन्य शिकायतों पर सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने पुलिस थाना इटारसी में वर्ष 2024 में प्रकरण पंजीबद्ध करने आवेदन दिया है। क्या प्रकरण दर्ज किया जा चुका है? जवाब में कहा गया है कि सहकारिता विभाग के अधिकारियों द्वारा थाना इटारसी में वर्ष 2024 में प्रकरण पंजीबद्ध किये जाने के संबंध में पुलिस थाना इटारसी में कोई आवेदन प्राप्त नहीं हुआ है।

भ्रष्टाचार के मामलों में केन्द्र के निर्देशों पर क्या किया

विधायक डॉ.सीतासरन शर्मा ने विधानसभा में मुख्यमंत्री मोहन यादव से पूछा कि भ्रष्टाचार के मामलों में संबंधित विभागों को कर्मचारियों के खिलाफ अभियोजन की स्वीकृति नियम समय सीमा में देनी होगी, ऐसे केन्द्र के निर्देशों पर समय सीमा की जानकारी दें। साथ ही प्रदेश में केन्द्र सरकार के निर्देशों तक किन-किन विभागों के किन-किन कर्मचारियों के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति लंबित थी। इनमें किन-किन प्रकरणों में अभियोजन की स्वीकृति दे दी गई तथा विगत तीन वर्षों में अभियोजन की स्वीकृति के अभाव में कौन-कौन से कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए हैं, उनके पदनाम सहित जानकारी दें। इस सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी जानकारी एकत्र की जा रही हैं।

ओल्ड पेंशन बहाली को लेकर डीआरएम दफ्तर के सामने द्वार सभा में की नारेबाजी

इटारसी, देशबन्धु। नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवे मेंस एवं वेस्ट सेंट्रल रेलवे मजदूर संघ द्वारा आयोजित 17 से 21 मार्च ओल्ड पेंशन बहाली के लिए एनपीएस और यूपीएस के खिलाफ विरोध सप्ताह अंतर्गत आज 21 मार्च को डीआरएम आफिस आफिस भोपाल में गेट मीटिंग में एनपीएस और यूपीएस के विरोध प्रदर्शन किया गया।

वेस्ट सेंट्रल रेलवे मजदूर संघ के महामंत्री अशोक शर्मा, मंडल अध्यक्ष राजेश पांडे के आव्हान पर आज जोनल कोषाध्यक्ष कमलेश परिहार, पीपी मौर्य, अनिरुद्ध सोनी, डिंपल नायर, आलोक त्रिपाठी, प्रीतम तिवारी, नितिन परमार, परमजीत, यूथ विंग महामंत्री संजय कटारे, राजीव, अजय सेन, जितेंद्र पटेल, दीपक मालवीय, एसके भैसारे, सिद्धनाथ, राहुल सिंह, रवि चौबे, दीपक राय, संतोष मालवीय, मनोज लोधी, अंकित श्रीवास्तव, रोहित कुमार एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में एनपीएस यूपीएस के लिखित पैरो को जलाया गया।

भारी पुलिस प्रशासन के विरोध के पश्चात गेट मीटिंग में मंडल अध्यक्ष राजेश पांडे ने कहा कि महामंत्री अशोक शर्मा हर समय

रेलवे कर्मचारियों के हित में कार्य करते आए हैं। तिरंगा झंडा यूनियन केवल रेलवे कर्मचारियों को जो वर्ष 2004 के पश्चात भर्ती हुए हैं, उनको ओल्ड पेंशन स्कीम दिलाने के लिए प्रयास है, जबलपुर जोन के हर डिपो में इटारसी इंजीनियरिंग, सीएंडडब्लयू डीजल शेड, स्टेशन क्षेत्र एवं लॉबी के सामने हर डिपो में ओल्ड पेंशन स्कीम की बहाली के लिए गेट मीटिंग का आयोजन किया एवं प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की गई। उक्त जानकारी मुख्य शाखा के अध्यक्ष प्रीतम तिवारी ने दी है।

इंटर डिविजनल टूर्नामेंट

नर्मदापुरम ने ग्वालियर को शिकस्त देकर जीता पहला मैच

नर्मदापुरम, देशबन्धु। ग्वालियर में हो रही मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित महाराजा यशवंत राव मेमोरियल इंटर डिविजनल टूर्नामेंट में नर्मदापुरम संभाग ने अपने पहले मैच में ग्वालियर संभाग को शानदार शिकस्त देकर जीत के साथ प्रतियोगिता में आगाज किया।

नर्मदापुरम डिवीजन के मानसेवी सचिव अनुराग मिश्रा ने बताया कि नर्मदापुरम टीम ने अपने पहले मैच में ग्वालियर पर तीन विकेट से जीत दर्ज कराई है। नर्मदा पुरम की जीत में मुख्य रूप से हिमांशु शिंदे के दोहरे प्रदर्शन एवं यश दुबे की शानदार बल्लेबाजी से मैच को अपने नाम किया और संयुक्त रूप से प्लेयर ऑफ द मैच हिमांशु एवं यश को चुना गया। नर्मदा पुरम टीम की इस जीत पर एनडीसीए के सभी सदस्यों ने टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

इंटर डिस्ट्रिक्ट अंडर-18 में नर्मदापुरम ने बैतूल को हराकर जीता पहला मैच - नर्मदापुरम संभाग क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित इंटर डिस्ट्रिक्ट अंडर 18 गर्ल्स टूर्नामेंट का शुभारंभ आज एमपीसीए ग्राउंड पर शुभारंभ के अवसर पर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेश चौरे, सलेक्शन कमेटी गर्ल्स दिलीप नामदेव, संजय नाफड़े और माधव हरने ने उपस्थित रहकर बच्चों का उत्साहवर्धन कर बैतूल एवं नर्मदापुरम के मध्य मैच प्रारंभ कराया। मानसेवी सचिव अनुराग मिश्रा ने बताया कि नर्मदापुरम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 229 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। जवाब में बैतूल की टीम 73 रन पर ऑल आउट हो गई और नर्मदापुरम ने 156 रनों से मैच जीत लिया। मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए अजिता यादव को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। मैच में अंपायर की भूमिका गजेन्द्र सलोकी एवं नितेश राजपूत और स्कोरर की भूमिका शिवानी संतोरे ने निभाई।

स्वच्छ एमपी रील प्रतियोगिता में शामिल हों

हरदा। प्रदेश में कचरा प्रबन्धन से संबंधित प्रमुख चुनौतियों को हल करने के प्रयासों में युवाओं, रचनाकर्मियों तथा विद्यार्थियों को रचनात्मक रील्स के माध्यम से जोड़ने के लिये शासन द्वारा राज्य स्तरीय स्वच्छ एमपी रील प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

कलेक्टर आदित्य सिंह ने बताया कि इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य नागरिकों विशेषकर युवाओं को सुरक्षित अपशिष्ट निपटान से संबंधित विचारों, समाधानों या सुझावों को उजागर करने वाले वीडियो बनाने के लिये प्रेरित करना है ताकि वे अपनी रचनात्मकता के माध्यम से स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण में योगदान दे सकें और उचित अपशिष्ट प्रबन्धन के महत्व और सार्वजनिक स्थानों को साफ रखने के तरीकों के बारे में जागरूकता फैला सके। कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता की थीम ''कचरा नहीं कंचन है, इसे अलग-अलग करें और पैसा कमायें'' है। इस थीम पर 30 से 45 सेकण्ड तक की एचडी फार्मेट में रील बनाई जाना है। प्रतियोगिता में शामिल होने के इच्छुक युवा पोर्टल के माध्यम से पंजीयन करा सकते है। रील्स पर सोशल मीडिया प्लेटफार्म में अपलोड कर पोर्टल पर सबमिट करना होगा।

कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि इस प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ 5 रील्स को नकद पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार 2 लाख रुपए, द्वितीय पुरस्कार 1 लाख रुपए तथा तृतीय पुरस्कार 50 हजार रुपए है। इसके अलावा 25-25 हजार रूपये के दो सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे। प्रतियोगिता में शामिल होने की समय सीमा 15 अप्रैल 2025 है। परिणाम की घोषणा विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर 22 अप्रैल को की जाएगी।

प्रवेश परीक्षा 23 मार्च को

नर्मदापुरम। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग नर्मदापुमरम ने बताया कि अनुसूचित जाति विकास विभाग म.प्र.भोपाल द्वारा शासकीय ज्ञानोदय विद्यालयों में कक्षा 6वीं में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 23 मार्च रविवार को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी। जिला नर्मदापुरम अंतर्गत उक्त प्रवेश परीक्षा शासकीय ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय, बी.टी.आई नर्मदापुरम में आयोजित की जाएगी। विद्यार्थी अपने प्रवेश पत्र विभागीय बेवसाईट के माध्यम से प्राप्त कर सकते है।

तुअर उपार्जन हेतु पंजीयन केन्द्र निर्धारित

नर्मदापुरम। किसान कलयाण तथा कृषि विकास विभाग मंत्रालय मध्यप्रदेश भोपाल अनुसार खरीफ वर्ष 2024 (विपणन वर्ष 2024-25) मे ई उपार्जन पोर्टल के माध्यम से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर तुअर के उपार्जन हेतु पंजीयन कार्य के लिये पंजीयन केन्द्र निर्धारित किया जाना है। तत्संबंध में कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना द्वारा ई उपार्जन पोर्टल पर कृषकों के पंजीयन हेतु पूर्व में जिले मे गेहूँ उपार्जन कार्य हेतु 132 पंजीयन केन्द्र निर्धारित किये गये हैं। उक्त निर्धारित गेहूँ पंजीयन केन्द्रों (132) पर ही 25 मार्च से 20 अप्रैल तक तुअर के उपार्जन हेतु पंजीयन केन्द्र निर्धारित किये गए है।

समतलीकरण की आड़ में बड़े स्तर पर अवैध खनन

पेयजल की टंकी को भी किया क्षतिग्रस्त

बैतूल, देशबन्धु। ग्राम पंचायत छावल स्थित प्रसिद्ध रेणुका मंदिर परिसर में मेले के नाम पर समतलीकरण की आड़ में बड़े स्तर पर अवैध खनन किए जाने का मामला सामने आया है। आरोप है कि सरपंच ने मंदिर मेले की आड़ में समतलीकरण के बहाने पत्थर और मुरम निकालकर उसे बेच दिया। एसडीएम के निर्देशों को नजरअंदाज करते हुए अवैध खनन लगातार जारी रहा, जिससे क्षेत्र में आस्था के केंद्र को नुकसान पहुंचा।

मंदिर के पुजारी द्वारा इस अवैध गतिविधि की शिकायत करने पर उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। वहीं, सार्वजनिक पेयजल की सुविधा के लिए रखी गई पानी की टंकी को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया, जिससे श्रद्धालुओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आरोप है कि मेले के दौरान दुकानदारों से वसूली की गई, लेकिन इन पैसों का कोई हिसाब पंचायत परिषद में नहीं दिया गया। आरोप है कि सरपंच परिषद में कोई विकास कार्य नहीं कर रहे हैं और न ही श्रद्धालुओं की सुविधाओं का ध्यान रखा जा रहा है। दुकानों के आवंटन में भी पैसों की मांग की गई, जिससे कई दुकानदार परेशान हो गए। इतना ही नहीं, मंदिर परिसर में बने सार्वजनिक चबूतरों पर पैसे लेकर अस्थायी दुकानें लगवाई जा रही, जिससे श्रद्धालुओं की आवाजाही में दिक्कत हो रही है। इस पूरे मामले को सख्त कार्रवाई की मांग की जा रही है।

विस्थापित ग्रामों के किसानों के गेहूं उपार्जन पंजीयन के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जाएं: कलेक्टर

अतिक्रमण के विरुद्ध अभियान चलाकर कार्यवाही की जाए

नर्मदापुरम। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने सभी एसडीएम एवं तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि विस्थापित ग्रामों के किसानों के गेहूं उपार्जन पंजीयन की प्रक्रिया शासन के निर्देशानुसार शीघ्रता से पूर्ण कराई जाए। इसके लिए आगामी चार दिवसों में विशेष शिविर आयोजित कर प्रतिदिन पंजीयन की कार्रवाई पूर्ण कर डीएसओ को प्रेषित किये जाये, ताकि किसानों को समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय का लाभ मिल सके। उक?त निर्देश कलेक?टर सोनिया मीना ने शुक्रवार को कलेक?टर कार्यालय में आयोजित राजस?व अधिकारियों की समीक्षा बैठक के दौरान दिए।

कलेक्टर ने राजस्व न्यायालय कंप्यूटरीकृत प्रबंधन प्रणाली (ऋष्टस्क) के माध्यम से नामांतरण, नक्शा तरमीम, आरओआर लिंकिंग आदि मामलों की समीक्षा की। उन्होंने तहसीलदारों को निर्देशित किया कि पटवारियों द्वारा की गई प्रविष्टियाँ यदि ऋष्टस्क पोर्टल पर दिखाई नहीं देती हैं, तो वे संभागीय सलाहकार से समन्वय कर तकनीकी समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने तहसीलवार समस्त न्यायालयों में पंजीकृत एवं लंबित प्रकरणों की विस्तारपूर्वक समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि एसडीएम, तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार अपने न्यायालयों में लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करें, ताकि किसी भी न्यायालय का निराकरण प्रतिशत 95त्न से कम न हो। इसके अतिरिक्त, कलेक्टर ने तहसीलवार दांडिक एवं राजस्व के न्यायालयीन प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि आगामी 31 मार्च तक 6 माह एवं 1 वर्ष से अधिक समय से लंबित मामलों को प्राथमिकता के आधार पर निराकृत किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि लंबित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण के लिए नियमित मॉनिटरिंग एवं आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

कलेक्टर ने बैठक के दौरान बंटवारा एवं सीमांकन से संबंधित प्रकरणों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने निर्देशित किया कि राज्य स्तर के आधार पर सर्वाधिक निराकरण प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित कर, उसके अनुरूप बंटवारे के प्रकरणों का समाधान सुनिश्चित किया जाए। साथ ही उन्होंने सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि सीमांकन के कुल लंबित प्रकरणों का समय-सीमा के भीतर निराकरण सुनिश्चित किया जाए। कलेक्टर ने नजूल अधिकारी, नर्मदापुरम को भी उनके न्यायालय में लंबित प्रकरणों के निराकरण में अपेक्षित प्रगति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी संबंधित राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे लंबित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण के लिए सक्रियता से कार्य करें। कलेक्टर ने समीक्षा बैठक में दांडिक प्रकरणों की विस्तारपूर्वक समीक्षा की। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे राजस्व न्यायालय प्रबंधन प्रणाली (पोर्टल का उपयोग एक प्रभावी उपकरण के रूप में करें, जिससे प्रकरणों के त्वरित एवं पारदर्शी निराकरण में सहायता मिले। कलेक्टर सुश्री मीना ने सभी राजस्व अधिकारियों को समय-समय पर दांडिक कार्यवाहियां करने के निर्देश दिए, ताकि कानून एवं शांति व्यवस्था सुदृढ़ बनी रहे।

कलेक्टर निर्देश दिए की स्वामित्व योजना के अंतर्गत नक्शे प्राप्त होने के उपरांत शीघ्र उन्हें प्रकाशन स्तर तक प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करें। जिन नक्शा का प्रथम प्रकाशन एवं द्वितीय प्रकाशन हो चुका है उनके शीघ्र अंतिम प्रकाशन करवाया जाए। तथा दर्ज प्रकरणों को भी ग्राउंड ट्रूथिंग के बाद एस ओ आई के लिए भेजे जाएं। उन्होंने बनखेड़ी एवं माखन नगर की कम प्रगति पर असंतोष व्यक्त करते हुए संबंधित एसडीएम को निर्देश दिए की दोनों तहसीलों की समीक्षा कर प्रगति प्रतिशत को बढ़ाया जाए। कलेक्टर ने एसडीएम नर्मदा पुरम को निर्देश दिए की अनुविभाग के अंतर्गत आने वाली तहसीलों का नियमित रूप से रिव्यू करें। साथ ही जियो टैगिंग के लिए कोई भी केस पेंडिंग ना रहे यह सुनिश्चित किया जाए तथा एसडीएम एवं तहसीलदार स्वयं ऐसे प्रकरणों की समीक्षा करें। इसी प्रकार कलेक्टर ने फार्मर रजिस्ट्री में कम प्रगति वाली तहसीलों को निर्देशित किया है कि अधिक से अधिक फार्मर रजिस्ट्रेशन किया जाए जिससे किसानों को योजनाओं का लाभ प्राप्त हो सके। कलेक्टर ने वित्तीय वर्ष 2024 25 की राजस वसूली की भी समीक्षा की। साथ ही उन्होंने राहत के प्रकरणों में हितग्राहियों को शीघ्र मुआवजा राशि प्रदाय किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने राजस्व विभाग की सीपीग्राम के तहत 200 दिवस से अधिक लंबित शिकायतों के शीघ्र समाधान के भी निर्देश दिए। भू अर्जन के प्रकरणों की बिंदूवार समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने निर्दिशित किया कि जिन प्रकरणों में अध्ययन स्थिति की जानकारी अप्राप?त है उन प्रकरणों का नियमित रूप से फॉलो अप किया जाए। साथ ही ऐसे मामले जिनमें प्रकरण प्रेषित करने के उपरांत अग्रिम कार्यवाही लंबित है उन मामलों में आवश्यक खानापूर्ति की जाकर प्रकरणों का निराकरण किया जाए। राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक के दौरान कलेक्टर ने राजस्व विभाग से संबंधित सीएम हेल्पलाइन शिकायतों तथा आयोग के लंबित प्रकरणों की भी समीक्षा की। उन्होंने सभी अनुविभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई निरंतर रूप से जारी रखी जाए। नगरीय क्षेत्र में स्थानो को चिन्हित कर वहां से पक्के एवं कच्चे अतिक्रमण को हटाया जाए। नगरी क्षेत्र में नगर पालिका के साथ साझा कार्यवाही सुनिश्चित करें। इसी प्रकार गौशाला की चरनोई भूमि भी शीघ्र अतिक्रमण मुक्त की जाए एवं पूरे जिले में पेयजल की उपलब्धता के लिए सभी आवश्यक कार्यवाहियां भी समय-समय पर की जाती रहे। बैठक के दौरान अपर कलेक्टर डीके सिंह, संयुक्त कलेक्टर अनिल जैन, सिटी मजिस्ट्रेट बृजेन्द्र रावत एवं समस्त अनुविभागीय अधिकारी राजस्व तथा तहसीलदार उपस्थित रहे।

संभागायुक्त ने किया कलेक्ट्रेट का निरीक्षण

तीन कर्मचारियों को नोटिस जारी के निर्देश

हरदा। नर्मदापुरम् संभाग के आयुक्त के.जी. तिवारी ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट हरदा का विस्तृत निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होने कलेक्ट्रेट की विभिन्न शाखाओं के अभिलेखों का परीक्षण किया और आवश्यक सुधार के निर्देश उपस्थित अधिकारियों को दिये। संभागायुक्त श्री तिवारी ने निरीक्षण के दौरान केशबुक, भण्डार पंजी, कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं का परीक्षण किया। उन्होने कार्यालय अधीक्षक को निर्देश दिये कि सभी पंजियों को अपडेट रखा जाए। उन्होने कहा कि कर्मचारियों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ समयमान वेतन निर्धारित समय पर स्वीकृत कर भुगतान किये जायें। संभागायुक्त ने स्थापना शाखा के लिपिक को निर्देश दिये कि सभी कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में समय-समय पर आवश्यक प्रविष्टि कर अपडेट करते रहें। उन्होने कर्मचारियों को डुप्लिकेट सेवा पुस्तिका व डुप्लिकेट जीपीएफ पासबुक उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिये। कमिश्नर श्री तिवारी ने भू-अभिलेख शाखा का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान शासकीय कार्य में लापरवाही पाये जाने पर उन्होंने भू-अभिलेख शाखा में पदस्थ सुश्री ज्योति परते, सुश्री श्रद्धा गोस्वामी एवं शिवकुमार मण्डलोई के विरूद्ध कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान उन्होने निर्देश दिये कि फसल कटाई प्रयोग निर्धारित समयावधि में पूर्ण करें। श्री तिवारी ने कलेक्टर न्यायालय का भी निरीक्षण किया। इस दौरान अपर आयुक्त आरपीएस. जादौन, कलेक्टर आदित्य सिंह, संयुक्त आयुक्त जीसी. दौहर एवं संयुक्त कलेक्टर सतीश राय भी मौजूद थे।

विश्व वानिकी दिवस पर पौधारोपण किया

संभाग आयुक्त केजी तिवारी ने शुक्रवार को विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर एसडीएम कार्यालय हरदा के परिसर में जामुन का पौधा लगाया। इस दौरान कलेक्टर आदित्य सिंह और पुलिस अधीक्षक अभिनव चौकसे ने आम का पौधा लगाया। कार्यक्रम में अपर आयुक्त आरपीएस जादौन, वन मंडल अधिकारी अनिल चोपड़ा एवं वन मंडल अधिकारी उत्पादन नरेंद्र पंडवा के अलावा एसडीम हरदा कुमार शानू देवड़िया भी मौजूद थे।

रविन्द्र भवन मेअंधा युग का मंचन कल

भोपाल,देशबन्धु। धर्मवीर भारती के कालजयी नाटक का मंचन आगामी 23 मार्च को चौथी बार रविन्द्र भवन में होने जा रहा है। इस नाटक का पूर्व में ' हम ' थियेटर द्वारा बालेन्द्र सिंह के निर्देशन में बहुचर्चित और बहुप्रशंसित मंचन हुआ है। जिसके चलते विगत वर्ष विक्रम उत्सव उज्जैन में भी इसको आमंत्रित किया गया था। अंधा युग में संजय का महत्वपूर्ण चरित्र निभा रहे असीम दुबे ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस बार के मंचन में कुछ बदलाव किए गए है। शहर की वरिष्ठ रंगकर्मी और नट-सम्राट व संध्या छाया जैसे नाटकों में ख्यातिप्राप्त रश्मि मुजुमदार इस बार गांधारी की भूमिका निभाती दिखेंगी। शहर के प्रसिद्ध प्रकाश संयोजक एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित रंगकर्मी कमल जैन के प्रकाश आकल्पन से नाटक का मंचन और प्रभावी होगा। अबकि इसका गीत संगीत पक्ष भी काफी बेहतर होगा। जिसे मॉरिस लाजरस ने संगीतबद्ध किया है। इस नाटक के मंचन में भोपाल के वरिष्ठ रंगकर्मी अजय श्रीवास्तव, अरविंद बिलगैयां, मिलन सिंह, निर्मल तिवारी, भरत सिंह, आदित्य तिवारी के साथ की युवा रंगकर्मी धृतराष्ट्र, विदुर, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा, युयुत्सु आदि चरित्रों में नजर आएंगे। अबकी बार इस नाटक में एक और खूबी दिखेगी। पार्श्व में श्रीकृष्ण और व्यास के चरित्रों को आवाज़ प्रख्यात अभिनेता गोविंद नामदेव और राजीव वर्मा ने दी है। नाटक में प्रवेश शुल्क 200 व 300 रूपए है।

आग से झुलसी हवलदार की बेटी, मौत

भोपाल,देशबन्धु। हनुमानगंज इलाके में युवती आग से झुलस गई। इलाज के दौरान शुक्रवार सुबह उसकी मौत हो गई। युवती के पिता मप्र पुलिस में हवलदार हैं। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। मौत से पहले पुलिस ने उसके बयान दर्ज कर लिए थे। थाना प्रभारी अवधेश सिंह भदौरिया ने बताया कि पूनम सूर्यवंशी उम्र 24 वर्ष बैंक में नौकरी करती थी। उसके पिता अशोका गार्डन थाने में हवलदार हैं। पूनम 16 मार्च को आग से गंभीर रूप से झुलस गई थी। गुरुवार को पूनम ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि वह मच्छर की अगरबत्ती जला रही थी। वहीं पास में तारपीन का तेल रखा था। मच्छर की अगरबत्ती जलाते समय तारपीन का ?तेल गिरने से आग भड़क गई और वह आग की चपेट में आ गई। उसकी चीखें सुन परिजन कमरे में पहुंचे और आग बुझा कर उसे अस्पताल ले गए। यहां शुक्रवार सुबह युवती ने दम तोड़ दिया।

विंध्याचल भवन में लगी आग, कर्मचारियों ने पाया काबू

भोपाल,देशबन्धु। विंध्याचल भवन में गुरुवार दोपहर को आग लग गई। हादसा घुमक्कड़ विभाग के विकास आयुक्त कार्यालय में हुआ। आग की इस घटना से कर्मचारी दहशत में आ गए। भवन से धुआं निकलता नजर आया। आग लगने की सूचना मिलते ही पुलिस और नगर निगम फायर ब्रिगेड की 3 गाड़ियां मौके पर पहुंच गई। हालांकि इसके पहले ही वहां मौजूद कर्मचारियों आग बुझा दी। दरअसल, घुमक्कड़ विभाग के विकास आयुक्त कार्यालय में नवीनीकरण कार्य चल रहा था। आशंका जताई जा रही है कि वेल्डिंग के दौरान कागज के गत्तों में आग लग गई। एक कारण ये भी बताया जा रहा है कि किसी के बीड़ी या सिगरेट पीने से निकली चिंगारी से ये आग लगी। भवन प्रभारी कमल सिंह ने बताया कि आग पर जल्द ही काबू पा लिया। कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ है।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र के कर्मचारी रहे हड़ताल, शाखाएं बंद

भोपाल,देशबन्धु। बैंक ऑफ महाराष्ट्र में गुरुवार को राष्ट्रव्यापी हड़ताल की गई। ऑल इंडिया बैंक ऑफ महाराष्ट्र एम्प्लाइज फेडरेशन के आह्वान पर भोपाल सहित देशभर की शाखाओं के 5 हजार 349 बैंक कर्मी हड़ताल पर रहे। इसके चलते बैंक में कामकाज पूरी तरह ठप्प रहा। वहीं हड़ताली कर्मचारियों ने बैंक के उच्च प्रबंधन की तानाशाही और कर्मचारी विरोधी नीतियों का विरोध किया।

राजधानी भोपाल में सैकड़ों हड़ताली कर्मचारी सुबह 11 बजे टीटी नगर स्थित बैंक शाखा के सामने एकत्रित हुए। मध्य प्रदेश बैंक एम्प्लाइज एसोसिएशन के बैनर तले अन्य बैंकों के कर्मचारियों ने भी प्रदर्शन में हिस्सा लिया। प्रदर्शन के बाद सभा हुई। सभा को बैंक कर्मचारी नेताओं वीके शर्मा, दीपक रत्न शर्मा, अशोक पंचोली, किशन खैराजानी, कैलाश माखीजानी, गुणशेखरन, जेपी दुबे, सत्येन्द्र चौरसिया, प्रभात खरे, राजीव उपाध्याय, योगेश मनूजा, बीएल पुष्पद, उमेश शाक्या, प्रदीप कटारिया, अवध वर्मा एवं महिला प्रतिनिधि के रूप में निश्चला शर्मा आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने बताया कि पिछले एक दशक में बैंक के कारोबार में लगभग 3 सौ प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि कर्मचारियों की संख्या में लगभग 40 प्रतिशत की कमी हुई है। हालांकि इस अवधि के दौरान उन्नत प्रौद्योगिक पेश की गई है एवं अन्य वैकल्पिक वितरण चैनलों को मजबूत किया गया है। सरकार के जन, धन, जीवन सुरक्षा, जीवन ज्योति, अटल पेंशन, मुद्रा, स्वनिधि, फसल ऋण, फसल बीमा आदि जैसे अन्य कई प्रकार की सरकारी योजना, व्यवसाय को जिम्मेदारियां दी गई हैं। जिसके फलस्वरूप काउंटरों पर काम के बोझ में अभूतपूर्व असर हो रहा है। ग्राहक सेवा पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इसके बाद भी यदि बैंक ऑफ महाराष्ट्र के उच्च प्रबंधन द्वारा मांगों का सम्मानजनक निराकरण नहीं किया तो अनिश्चतकालीन राष्ट्रव्यापी बैंक हड़ताल की जाएगी।

यह हैं कर्मचारियों की प्रमुख मांगें

पर्याप्त संख्या में अधिकारी, कर्मचारी, चपरासी और सफाई कर्मचारियों की भर्ती की जाए। द्विपक्षीय समझौतों का पालन किया जाए। मेजोरिटी यूनियन के साथ किए गए समझौतों का क्रियान्वयन करें।

विश्व गौरैया दिवस पर

घरों में घोंसला बनाने की मुहिम, बच्चों को दिया प्रशिक्षण

भोपाल,देशबन्धु। गौरैया की घटती संख्या से पर्यावरण को हो रहे नुकसान और इससे उत्पन्न पर्यावरणीय असंतुलन से मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभावों के प्रति जागरूकता को बढ़ाने और इन पक्षियों के संरक्षण के लिए प्रयास करने के उद्देश्य से गुरुवार को विश्व गौरैया दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर राजधानी भोपाल में पर्यावरण वानिकी वन मंडल ने आज जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान पार्क और जंगलों में आने वाले लोगों को गौरैया संरक्षण के बारे में जानकारी दी गई। विशेषज्ञों के अनुसार गौरैया की चहचहाहट पर्यावरण और मानव समाज के लिए सुख-समृद्धि का प्रतीक है। डीएफओ निधी चौहान ने कहा कि गौरैया जो पहले हर घर में दिखाई देती थी, अब विलुप्त होने की कगार पर है। उन्होंने बताया कि मोबाइल फोन टावर से निकलने वाला रेडिएशन इसका प्रमुख कारण है। इस दौरान वन मंडल की टीम ने लोगों से घरों में गौरैया के लिए घोंसले बनाने का आग्रह किया। एसडीओ राम कृष्ण चौधरी ने बच्चों को घर में उपलब्ध गत्तों के डिब्बों से गौरैया का घरौंदा बनाने का तरीका बताया। उन्होंने घरों में दाना-पानी की व्यवस्था रखने की सलाह भी दी। वन मंडल ने विभिन्न पार्कों में पक्षियों के लिए पानी के सपोरे लगवाए। कार्यक्रम में आगंतुकों से गौरैया को देखने के उनके अनुभव भी साझा किए गए। इस पहल का उद्देश्य आने वाली पीढ़ी के लिए गौरैया को संरक्षित करना था।

रुबातों को लेकर फैलाई जा रहीं भ्रांतियां : डॉ. सनव्वर

भोपाल, देशबन्धु। मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सनव्वर पटेल ने कहा कि जब बतौर अध्यक्ष वक्फ बोर्ड का पदभार संभाला तो उनके समक्ष औकाफ-ए-शाही के संबंध में कुछ शिकायतें आईं। इन शिकायतों की जांच में उन्होंने पाया की रुबातों को लेकर जो बातें की जा रही हैं, वह महज भ्रांतियां हैं जो विरोधियों द्वारा फैलाई गई हैं। इस संबंध में की गई शिकायतें वेबुनियाद हैं, उनमें कोई दम नहीं है।

डॉ. पटेल आज स्थानीय सूफिया मस्जिद परिसर में औकाफ-ए-शाही द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि औकाफ-ए-शाही की मुतवल्ली सबा सुल्तान साहिबा ही असली मुतवल्ली हैं और जिन भी 10-12 लोगों ने मदीना मुनव्वरा की अदालत में उनके अलावा खुद के मुतवल्ली होने का दावा किया है, वह सभी फर्जी हैं। डॉ. पटेल ने यहां औकाफ-ए-शाही की मुतवल्ली सबा सुल्तान और एक्जिक्यूटिव कमेटी के वरिष्ठ सदस्य सिंकदर हफीज खान और उनकी टीम के प्रयासों की तारीफ भी की। इस मौके शहरकाजी सैयद मुश्ताक अली नदवी, मुफ्ती अबुल कलाम कासमी और औकाफ-ए-शाही की एग्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्य आजम खान विशेष रूप से मौजूद थे।

वक्फ किराएदार समय पर जमा करें किराया

डॉ. पटेल ने वक्फ संपत्ति पर काबिज अतिक्रमणकारियों को आड़े हाथों लिया। वहीं उन्होंने वक्फ किराएदारों से समय पर किराया जमा करने की अपील की। उन्होंने कहा कि समय पर किराया जमा करने से बोर्ड की कल्याणकारी गतिविधियों के संचालन में आसानी होगी। डॉ.पटेल ने कहा कि हाल के कुछ वर्षों में वक्फ बोर्ड की आमदानी में इजाफा हुआ है, लेकिन यह नाकाफी है।

गरीबों को किया रमजान किट्स का वितरण

रमजान के पवित्र माह में गरीब और जरूरतमंदों को औकाफ-ए-शाही की ओर से राशन की रमजान किट का वितरण किया गया। बोर्ड अध्यक्ष डॉ. पटेल के हाथों जरूरतमंदों को यह किट वितरित की गई। इस दौरान इमाम मोअज्जिनों और औकाफ-ए-शाही के स्टॉफ को वेतनवृद्धि प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए ।

एलएनसीटी समूह अध्यक्ष के निवास पहुंचे प्रसिद्ध कथा वाचक शैलेंद्र कृष्ण

भोपाल,देशबन्धु। एलएनसीटी समूह के अध्यक्ष जय नारायण चौकसे के निवास पर प्रसिद्ध कथा वाचक शैलेंद्र कृष्ण शास्त्री का स्वागत किया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक चर्चा के साथ कलचुरी समाज की विकास गाथा पर विस्तृत मंथन हुआ। इस अवसर पर शैलेंद्र कृष्ण शास्त्री ने चौकसे परिवार को साधु के गुण बताते हुए कहा कि समाज में सेवा, त्याग और परोपकार की भावना को आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने कलचुरी समाज के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक उत्थान के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। चर्चा के दौरान समाज में आध्यात्मिकता के महत्व, युवाओं को भारतीय संस्कृति से जोड़ने और समाज सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ाने जैसे विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। चौकसे परिवार ने इस अवसर पर शैलेंद्र कृष्ण का विशेष आभार व्यक्त किया और समाज के उत्थान हेतु हरसंभव सहयोग देने का संकल्प लिया। इस मौके पर श्रीमती पूनम चौकसे (वाइस चेयरपर्सन, एलएनसीटी ग्रुप), डॉ. अनुपम चौकसे (सचिव, एलएनसीटी ग्रुप), डॉ. श्वेता अनुपम चौकसे, पूजा श्री चौकसे सहित शास्त्री के अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अलंकार ज्वैलर्स और गोल्डन सिटी के ठिकानों पर आयकर सर्वे

भोपाल,देशबन्धु। आयकर विभाग ने गुरुवार को राजधानी के न्यू मार्केट स्थित अलंकार ज्वेलर्स और चूनाभट्टी स्थित गोल्डन सिटी बिल्डर के दफ्तर में सर्वे की कार्यवाही शुरू की है। दोपहर बाद शुरू की गई इस कार्रवाई में दोनों ही प्रतिष्ठानों से करोड़ों रुपए की आयकर चोरी का खुलासा होने की संभावना है।

आयकर विभाग द्वारा न्यू मार्केट स्थित अलंकार ज्वेलर्स के यहां सोने के आभूषणों की बिक्री में वास्तविक कीमत छिपाने के मामले में सर्वे की कार्यवाही हो रही है। बताया जाता है कि इस प्रतिष्ठान के संचालकों द्वारा टैक्स बचाने के लिए पक्के बिल जारी नहीं किए। बोगस बिल जारी किए जा रहे हैं। इसके आधार पर विभाग की टीम जांच कर रही है। दोपहर बाद यहां पहुंची टीम ने अलंकार ज्वेलर्स के रिकॉर्ड और बिलों की जांच शुरू कर दी है।

उधर चूनाभट्टी के समीप स्थित गोल्डन सिटी के संचालक और बिल्डर मनीष जैन के दफ्तर पर भी आयकर विभाग ने सर्वे शुरू किया है। जैन के द्वारा भूमि और भवन के बिक्री में सभी तरह के करका भुगतान नहीं किए जाने और नगद लेनदेन के मामले में यह कार्रवाई की जा रही है। मनीष जैन को एमपी के पूर्व मुख्य सचिव का करीबी बताया जा रहा है।

सौरभ अग्रवाल पर 15 करोड़ की आयकर चोरी

आयकर विभाग ने इसके पहले चूना भट्टी स्थित अल्फा कम्युनिकेशन और अल्फा सॉल्यूशंस के संचालक सौरभ अग्रवाल के ठिकाने पर भी होली के पहले चार दिन तक लगातार सर्वे की कार्यवाही की थी। इसके बाद सौरभ अग्रवाल के यहां से करीब 15 करोड रुपए की आयकर चोरी सामने आई है। बताया जाता है कि अभी अग्रवाल ने आयकर की राशि सरेंडर नहीं की है। इसलिए इस मामले में कुछ और लोगों के बयान लेने के बाद आयकर विभाग आयकर चोरी के आदेश जारी करेगा।

अभिमत

नरेश विश्वास मंडला- डिंडौरी के बैगाचक के बैगा आदिवासियों, छत्तीसगढ़ के रायगढ़ के पहाड़ी कोरवाओं में दहिया खेती के जरिए पुराने देसी बीजों की खेती को बढ़ावा देते रहे हैं। जो देसी बीज लुप्त हो चुके थे, उन्हें खोजकर आदिवासियों को उपलब्ध कराते हैं। सिकिया ऐसा ही अनाज था, जिसे लोग भूल चुके थे। मंडला में फिर से लोग इसे बोने लगे हैं। इसी प्रकार, बाजरा, जिसे चिड़िया बहुत खाती हैं, लेकिन उनके पास ऐसी देसी किस्म है जिसमें रोएं होते हैं।

बीजों की रिश्तेदारी की अनूठी पहल

नवाचार

■ बाबा मायाराम

मध्यप्रदेश के पातालकोट में भारिया आदिवासियों के बीच बीजों की रिश्तेदारी का अनूठा कार्यक्रम चल रहा है। इसके तहत जो परंपरागत बीज लुप्त हो चुके हैं, उन्हें खोजने, खेतों में बोने और उनके आदान-प्रदान का करने का काम किया जाता है। मैं इस इलाके में कई बार गया हूं और यहां के लोगों से मिला हूं, और उनके बीज संग्रह को देखा है। आज इसी कहानी को बताना चाहूंगा जिससे यह जाना जा सके कि बिना पानी या कम पानी में किस तरह पौष्टिक अनाजों की खेती की जा सकती है।

आगे बढ़ने से पहले पातालकोट के बारे में जानना उचित होगा। छिंदवाड़ा से करीब 75 किलोमीटर दूर है पातालकोट। छिंदवाड़ा जिले की ही तामिया तहसील में है पातालकोट। पातालकोट का शाब्दिक अर्थ है पाताल यानी पाताल की तरह गहराई वाली जगह और कोट यानी दुर्ग। दीवारों से घिरा हुआ। यहां दीवार से अर्थ सतपुड़ा की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से है। यह आकार में कटोरे सा लगता है।

सतपुड़ा की पर्वतमाला के बीच नीचे और बहुत गहराई में बसे हैं 12 गांव और उनके ढाने (मोहल्ले)। यहां के बारे में कहा जाता है कि जमीन से नीचे होने और सतपुड़ा की आड़ी-तिरछी पहाड़ियों के कारण यहां सूरज की रोशनी देर से पहुंचती हैं।

भारिया आदिवासी ही यहां के मुख्य बाशिंदे हैं। कम संख्या में कुछ गोंड आदिवासी भी यहां हैं। यहां के 12 गांव हैं- कारे आम रातेड़, चिमटीपुर, पलानी गैलडुब्बा, घोंघरी गुज्जाडोंगरी, घटलिंगा, गुढ़ीछतरी, घाना कोड़िया, मालनी डोमनी, जड़मांदल हर्राकछार, सेहरा पचगोल, झिरन, सूखा भण्ड हारमऊ।

जब मैं यहां गया था तो सामाजिक कार्यकर्ता नरेश विश्वास मेरा इंतजार कर रहे थे। नरेश विश्वास, बीजों की रिश्तेदारी नामक कार्यक्रम के आयोजक थे और वे ही निर्माण संस्था के प्रमुख हैं। बैगा आदिवासी के बीच देसी बीजों पर लम्बे अरसे से काम करते हैं। पिछले साल वे मुझे सेवाग्राम में मिले थे, जहां उन्होंने आदिवासियों की खेती के बीजों की प्रदर्शनी लगाई थी।

उन्होंने यह कार्यक्रम सिर्फ मध्यप्रदेश ही नहीं, छत्तीसगढ़ में भी चलाया जा रहा है। इसमें कोशिश की जाती है कि एक इलाके से दूसरे इलाकों में देसी बीज पहुंचे, उनका आदान-प्रदान हो और उसके साथ बीजों से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान भी पहुंचे, जिससे देसी बीजों का प्रचार-प्रसार हो और इस खेती को बढ़ावा मिल सके।

पातालकोट की यात्रा के दौरान हम सूखाभंड गांव से हम पैदल गैलडुब्बा पहुंचे थे। यहीं पर बीजों की रिश्तेदारी कार्यक्रम के तहत देसी बीजों की प्रदर्शनी, अनाजों के व्यंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। अलग-अलग गांवों से पैदल तो कुछ वाहनों से बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष पहुंचे थे।

यहां पंडाल में देसी बीजों की प्रदर्शनी लगी थी। रंग-बिरंगे देसी बीज न केवल रंग-रूप में अलग थे बल्कि स्वाद में भी बेजोड़ थे। बेउरी कुटकी, भदेल कुटकी, कंगना, कंगनी, मड़िया, बाजरा, कुसमुसी, बेड़ाबाल, तुअर, काला कांग, धान, सांवा, जगनी, मक्का, के बीज थे। बल्लर (सेमी), बरबटी, नेवा, लाल सेमा भी था।

महुआ का भुरका था, जिसे जगनी और महुआ दोनों को कूटकर बनाया गया था। इसे लोगों ने बहुत पसंद किया। मैंने भी चखा। बेड़ा बाल की घुंघरी (उबालकर) बनाई जाती है। कुसमुसी की दाल व बड़े बनाए जाते हैं। कुटकी का भात और बल्लर की दाल प्रमुख भोजन है। कुटकी का पेज (एक तरह का सूप) बनाकर पीते हैं। मक्के की रोटी भी खाते हैं और भात (चावल की तरह) भी खाया जाता है।

प्रदर्शनी में कई प्रकार के कांदा भी थे। बड़ा कांदा, माहली कांदा, सेत कांदा, डूनची कांदा, केऊ कांदा, कडु कांदा, मोड़ो कांदा, मूसल कंद, रातेड़ कांदा। इसके अलावा यहां कई प्रकार की जड़ी-बूटियां भी थीं। सफेद मूसली, सतावर, रामदातौन, गुडवेल, चिरायता, हर्रा, बहेड़ा, आंवला, अंतमूल (चाय की तरह पीते हैं), भिलवां इत्यादि।

गैलडुब्बा के भगलू चालथिया ने बताया कि भारिया बरसों से आम की रोटी (आम की गोही को चूरा कर रोटी बनाई जाती है) और बल्लर की साग खाते थे। महुआ खाते थे। बांस की करील की सब्जी और दोवे भाजी की साग पकाते थे।। कोयलार भाजी की हरी पत्तियों की सब्जी बनती है।

वे आगे बताते हैं कि पहले हम दहिया खेती (शिफ्टिंग कल्टीवेशन) करते थे। खूब बेउर कुटकी पकती थी। मड़िया, कांग, कांगनी, जगनी, सिक्का और डंगरा बोते थे। अब दहिया पर रोक लगाई जा रही है। फिर हम कैसे जिएंगे?

भगलू ने आगे बताया कि दहिया खेती का तरीका यह था कि बारिश के पहले ललताना व छोटी झाड़ियां काटकर उसमें आग लगा देते थे। चाहे उस जगह पर पत्थर ही क्यों न हों। जब झाड़िया जलकर राख हो जाती थीं, कांगनी फेंक देते थे। पानी गिरता था तो वह उग जाती थी। बाद में दो-तीन बार निंदाई-गुड़ाई करनी पड़ती थी और फसल पक जाती थी, बस।

इस तरह खेती में एक-दो साल में जगह बदलनी पड़ती थी। इसमें हल चलाने की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए अंग्रेजी में इसे सिफ्टिंग कल्टीवेशन कहते हैं। बहुत दिनों से भारियाओं ने इसे करना छोड़ दिया है।

निर्माण संस्था के नरेश विश्वास कहते हैं कि पातालकोट की जमीन समतल नहीं है। ऊंची-नीची और पथरीली है। इसमें दहिया खेती ही हो सकती है, जो भारिया आदिवासी पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। उनका देसी खेती व बीजों का ज्ञान पारंपरिक है। दहिया में ही देसी पौष्टिक बीजों की खेती हो सकती है।

नरेश विश्वास मंडला- डिंडौरी के बैगाचक के बैगा आदिवासियों, छत्तीसगढ़ के रायगढ़ के पहाड़ी कोरवाओं में दहिया खेती के जरिए पुराने देसी बीजों की खेती को बढ़ावा देते रहे हैं। जो देसी बीज लुप्त हो चुके थे, उन्हें खोजकर आदिवासियों को उपलब्ध कराते हैं। सिकिया ऐसा ही अनाज था, जिसे लोग भूल चुके थे। मंडला में फिर से लोग इसे बोने लगे हैं। इसी प्रकार, बाजरा, जिसे चिड़िया बहुत खाती हैं, लेकिन उनके पास ऐसी देसी किस्म है जिसमें रोएं होते हैं, जिससे चिड़िया नहीं खा पाती। जिससे फसल का नुकसान नहीं होता है।

पौष्टिक अनाजों की खेती में पक्षियों का झुंड में आना और फसलों के दाने को चुगना, एक समस्या है। पर लोग यहां खेतों में मचान बनाकर रहते हैं, और जोर से आवाज लगाकर, खेतों में धोखा (बिजूका) बनाकर पक्षियों का भगाते हैं। आदिवासियों को खेती-किसानी से जुड़ी ऐसी समस्याओं का हल आता है।

इन सबके बावजूद अब भारिया बाहरी दुनिया से प्रभावित हैं। उन्होंने सिंचाई व रासायनिक खेती भी करना शुरू कर दिया है। उनकी जीवनशैली भी बदल रही है। नई पीढ़ी मोबाइल व मोटर साइकिल वाली है। इस कार्यक्रम में बीज प्रदर्शनी के साथ भारियाओं ने डंडा नृत्य, गेड़ी नृत्य व शैताम जैसे पारंपरिक लोकगीत भी गाए।

कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि भारियाओं का जीवन प्रकृति से जुड़ा हुआ है। उनकी जंगल आधारित खाद्य व भोजन व्यवस्था थी जिसमें अब कमी आ रही है। एक तो जलवायु बदलाव व मौसम बदलाव हो रहा है। जंगल कम हो रहे हैं। बारिश कम हो रही है। पानी के परंपरागत स्रोत भी सूख रहे हैं। कुछ समय पहले एक गांव में भूस्खलन की खबर भी आई थी। उनकी जीवनशैली व खेती भी बदल रही है।

लेकिन शुरूआत भर है। अगर दहिया खेती के साथ देसी बीजों की खेती को बढ़ावा दिया जाता है तो जैवविविधता के साथ पर्यावरण और आजीविका की सुरक्षा भी हो सकेगी।

बीता सप्ताह

17 मार्च

- पाकिस्तान के बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना के काफिले पर आत्मघाती हमले में 7 जवानों की मौत हो गई।
- नासा और स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर पहुंचा और सुनीता विलियम्स से मिले अंतरिक्ष यात्री
- उत्तराखंड के वित्त मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाकर इस्तीफे का ऐलान किया।
- इसरो अध्यक्ष डा. वी नारायणन ने इसरो के एलवीएम-3 प्रक्षेपण यान के क्रायोजेनिक अपर स्टेज (सी-25) को तमिलनाडु के महेंद्र गिरी के इसरो प्रोपल्शन कॉम्पलेक्स से श्री हरिकोटा के प्रक्षेपण परिसर के लिए रवाना किया।

18 मार्च

- न्यायमूर्ति जॉयमाला बागची ने सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश पद की शपथ ली।
- नासा ने अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स की धरती में वापसी का समय तय किया बताया 19 मार्च सुबह 3.30 बजे।
- तेलंगाना सरकार ने तेलंगाना में ओबीसी को 42 फीसदी आरक्षण देने का ऐलान किया।
- आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों ने रेलोमेयर पर केंद्रित नई प्रक्रिया के तहत कैंसर से बचाव का नया तरीका ढूंढा।

19 मार्च

- मैनपुरी उ.प्र. की एक अदालत ने दिल्ली नरसंहार 24 दलितों की हत्या के 44 साला पुराने मामले में तीन लोगों को फांसी की सजा सुनाई।
- नौ माह बाद अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स आज धरती पर लौटी। तड़के सुबह 3.30 बजे फ्लोरिडा के समुद्र में स्पेक्स एक्स के ड्रैगन केप्सूल से लैंड की।
- मुख चुनाव आयुक्त ने एक बैठक लेकर मतदाता पहचान पत्र को आधार कार्ड से लिंक करने आदेश जारी किया।
- न्यूजीलैंड के पीएम क्रिस्टोफर लक्सन ने भारत में अक्षरधाम मंदिर का दर्शन किया।

20 मार्च

- मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में हुई हिंसा में एक व्यक्ति की मौत हो गई।
- नागपुर हिंसा मामले के मास्टर माइंड आरोपी फहीमा खान गिरफ्तार कर लिए गए।
- नई दिल्ली स्टेशन में हुई भगदड़ के बाद बनी संसदीय समिति ने सुझाव दी कि दिल्ली स्टेशनों में प्रवेश व बाहर निकलने गेटों की संख्या बढ़ाई जाए।
- छग हाईकोर्ट ने एक सुनवाई में संविदा और दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को चार माह के भीतर नियमित करने के आदेश दिए।

21 मार्च

- छग की बीजापुर दंतेवाड़ा में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच हुए मुठभेड़ में 30 नक्सली मारे गए।
- क्रिकेटर युजवेंद्र चहल और धनश्री वर्मा के बीच तलाक हो गया। बांद्रा कोट्ट ने दोनों की अर्जी पर मंजूरी दी।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी शुखहाल देशों की सूची में भारत पाकिस्तान से पीछे। भारत 118 और पाकिस्तान 109 पायदान पर। फिनलैंड आठवे साल भी अव्वल।
- हरियाणा-पंजाब का शंभू बार्डर किसान आंदोलन के कब्जे से 13 महीने बाद खुला।

22 मार्च विश्व जल दिवस

जल संरक्षण से ही कल सुरक्षित होगा

■ राजकुमार सिन्हा

गर्मी की आहट शुरू होते ही पीने के पानी का संकट शुरू हो जाता है। प्रशासनिक अमला भी इस समस्या को हल करने के प्रयास करना शुरू कर देता है परन्तु पानी बचाने से लेकर उसके संरक्षण की बात अक्सर सरकार और समाज के बीच से गायब ही रहता है। पृथ्वी पर 97 प्रतिशत भाग पानी है जिसमें से केवल 2.5 प्रतिशत से लेकर 2.75 प्रतिशत तक पानी पीने योग्य है। भारत पहली बार 2011 में पानी की कमी वाले देशों की सूची में शामिल हुआ था। यूनिसेफ द्वारा 18 मार्च 2021 की जारी रपट के अनुसार, भारत में 9.14 बच्चे गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। अनुमान है कि 2030 तक देश की लगभग 40 फीसदी आबादी के सामने पानी का संकट होगा। वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (डबल्यू आर आई) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार यदि जल प्रबंधन से जुड़ी नीतियों में सुधार नहीं किया गया तो इसके चलते आने वाले 27 वर्षों में भारत, चीन और मध्य एशिया को उसके जीडीपी के 7 से 12 प्रतिशत के बराबर का नुकसान हो सकता है।

> **सभी कानूनी प्रावधानों के बाबजूद जल स्रोत की दशा पर्यावरण दिवस के मौके पर जारी स्टेट ऑफ एनवायरमेंट (एसओई) रिपोर्ट 2023 से उजागर हो जाती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, देश की कुल 603 नदियों में से 279 यानी 46 फीसदी नदियां प्रदूषित हैं। राज्यों में महाराष्ट्र में सर्वाधिक 55 नदियां तथा मध्यप्रदेश में 19 नदियां प्रदूषित हैं। इसलिए नदियों का प्रशासकीय प्रबंधन की जगह पर्यावरणीय प्रबंधन की दृष्टि से निगरानी तंत्र विकसित करना चाहिए।**

देश का 70 फीसदी भूजल स्रोत सूख चुके हैं और पुनर्भरण की दर 10 फ़ीसदी से भी कम रह गई है। चेन्नई, बेंगलुरु जैसे शहर पानी की कमी को लेकर खबरों की सुर्खियों में है। इसलिए पीने योग्य पानी सभी को उपलब्ध करवाने और इसे संरक्षित करने कानून बनाया गया। संविधान के भाग (9) में तिहत्तरवें संशोधन के अनुच्छेद 243(छ) में आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय के लिए योजना बनाने की शक्ति पंचायत को दिया गया है। जो ग्यारहवीं अनुसूची में लिस्टेड है। 11 नबंर पर पेयजल व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव उन्मूलन अधिनियम 1979 के अनुच्छेद 14(2)(एच) में महिलाओं के लिए पानी प्रावधानों का उल्लेख करता है। बाल अधिकार अधिनियम 1989 के अनुच्छेद 24(2)(सी) में स्वच्छ स्रोत से सुरक्षित पेयजल प्राप्त करना बच्चों का अधिकार है। जल प्रदूषण, नियंत्रण एवं रोकथाम) अधिनियम 1974 भारत में जल प्रदूषण रोकने हेतु महत्वपूर्ण कानून है। नदियों और धाराओं में अपशिष्टों के विसर्जन को रोकने हेतु दो प्रकार की नियामक विधियों की व्यवस्था करता है- केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड। 2024 में इस कानून में संशोधन किया गया है। मूल अधिनियम में जल प्रदूषण के उल्लंघनों के लिए जुर्माने के साथ- साथ डेढ साल से 6 साल तक की जेल की सजा का भी प्रावधान था। जबकि नए विधेयक में अधिकांश उल्लंघनों के लिए कारावास के प्रावधान को हटाने का प्रस्ताव है और इसकी जगह 10,000 रुपये से 15 लाख तक जुर्माना लगाया गया है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में भी जल गुणवत्ता संबंधी नियम शामिल है। मध्यप्रदेश पेयजल परीक्षण अधिनियम 1986 भी काफी महत्वपूर्ण है। ग्राम स्तर की जैव विविधता समिति को केन्द्रीय जैव विविधता अधिनियम 2002 की धारा(41) और मध्यप्रदेश जैव विविधता नियम 2004 के नियम (23) अनुसार अपने अधिकारिता क्षेत्र में पारिस्थितिकीय तंत्र को बनाये रखना है, जिसमें नदी संरक्षण सम्मलित है। वन अधिकार कानून 2006 की धारा (5)(ख) कहती है कि 'यह सुनिश्चित करना कि लगा हुआ जलागम क्षेत्र, जल स्रोत और अन्य पारिस्थितिकीय संवदेनशील क्षेत्र पर्याप्त रूप से संरक्षित हैं।' मध्यप्रदेश पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) पेसा नियम -2022 की कंडिका 12(1)(ख) में भी उल्लेख किया गया है कि 'ग्राम के क्षेत्र के भीतर स्थित प्राकृतिक संसाधनों को, जिसके अंतर्गत भूमि, जल तथा वन सम्मिलित हैं, उसकी परम्परा के अनुसार और संविधान के उपबंधों के अनुरूप और तत्समय प्रवृत अन्य सुसंगत विधियों का सम्यक ध्यान रखते हुए, प्रबंधित करना' जैसे मजबूत प्रावधान भी हैं।

सभी कानूनी प्रावधानों के बाबजूद जल स्रोत की दशा पर्यावरण दिवस के मौके पर जारी स्टेट ऑफ एनवायरमेंट (एसओई) रिपोर्ट 2023 से उजागर हो जाती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, देश की कुल 603 नदियों में से 279 यानी 46 फीसदी नदियां प्रदूषित हैं। राज्यों में महाराष्ट्र में सर्वाधिक 55 नदियां तथा मध्यप्रदेश में 19 नदियां प्रदूषित हैं। इसलिए नदियों का प्रशासकीय प्रबंधन की जगह पर्यावरणीय प्रबंधन की दृष्टि से निगरानी तंत्र विकसित करना चाहिए। जिसमें पारिस्थितिकीय तंत्र, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता की समझ रखने वाले विशेषज्ञ को शामिल किया जाना आवश्यक है। रानी दुर्गावती ने जबलपुर शहर में 52 तालाबों का निर्माण कराया गया था, परन्तु अवैध निर्माण और शहरीकरण के कारण अब गिनती के ही, आधे-अधूरे तालाब बचे हैं।

मध्यप्रदेश की ग्रामीण अबादी हैंडपंप पर निर्भर है। अप्रैल 2023 के आंकड़े अनुसार, प्रदेश में पांच लाख 64 हजार 290 हैंडपंप थे जिसमें में से 14 हजार 191 हैंडपंप पानी नहीं दे रहे थे। पेयजल के स्रोतों में कमी के निम्न कारण है जैसे प्रति व्यक्ति पानी की खपत में बढ़ोतरी, भूजल में गिरावट, प्राकृतिक स्रोतों का जल प्रदूषित होना, परम्परागत जल स्रोतों में कमी आना अंधाधुंध पेड़ों की कटाई, मृदा अपरदन आदि प्रमुख है।

ऐसे में सरकार और समाज को मिलकर जमीनी स्तर पर ठोस प्रयास करने होंगे। जैसे कि जल स्रोतों को चिन्हित करना और उसके संरक्षण, प्रबंधन के लिये ग्राम सभा में चर्चा कर इसकी जिम्मेदारी ग्राम समिति को देना। गांव की नदी, नाले के पास शौच रोकने तथा उसके दुष्परिणाम पर ग्राम सभा में चर्चा और गांव स्तर की निगरानी समिति का गठन करना। गांव समुदाय के पारम्परिक जल संरक्षण, प्रबंधन और नियंत्रण के तरीके के लिए गांव के स्तर की अध्ययन दल का गठन करना। पास के नदी-नाले के पानी को बरसात बाद रोकने हेतु बोरी बंधान या अन्य उपाय करना। बर्षा जल को रोकने वाला गांव के आसपास जल संचय व्यवस्था कायम करना। सूख चुकी सभी नदियों, जोहडे, झील, तालाबों और अन्य जल निकाय को पुनर्जीवित करना जल संकट का स्थायी निवारण हो सकता है।

रोजगार का अधिकार : उपयोगिता के बीस साल

बीस साल पहले संसद ने काम करने या रोजगार का अधिकार कानून पास किया था। यह एक ऐतिहासिक वैधानिक अधिकार है। संविधान के अनुच्छेद 41 में इस तरह के अधिकार की परिकल्पना की गई जो सभी राज्यों को सभी नागरिकों के लिए काम करने का अधिकार सुरक्षित करने का निर्देश देता है। इस कानून को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के रूप में जाना जाता है जिसे 23 अगस्त, 2005 को संसद ने अपनी मंजूरी दी थी। इसे 'नरेगा' भी कहते हैं। इस कानून ने काम मांगने वाले प्रत्येक ग्रामीण परिवार के एक सदस्य के लिए एक निर्दिष्ट दैनिक मजदूरी पर सौ दिनों के अकुशल मैनुअल काम का अधिकार दिया। इन सृजित नौकरियों में से एक तिहाई महिलाओं के लिए आरक्षित होनी थीं। आवेदक के निवास के 5 किलोमीटर के भीतर रोजगार दिया जाना है और अगर सरकार इस तरह के रोजगार का सृजन करने में असमर्थ है तो उसे मजदूरी के बदले कुछ भत्ता देना होगा। यह दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा और लोक निर्माण कार्यक्रम है। शुरुआत में इस कार्यक्रम की सफलता पर संदेह होने के बावजूद अब विश्व बैंक द्वारा इसे विकास के एक मुख्य कार्यक्रम के रूप में वैश्विक सम्मान प्राप्त है।

डॉ.अजीत रानाडे

> **नरेगा योजना आपदाओं के दौरान रोजगार प्रदान करता है। इसके तहत मिलने वाली मजदूरी, न्यूनतम मजदूरी से जुड़ी हुई है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह गरीबी-विरोधी उपाय के रूप में कार्य करे। योजना में महिलाओं की भागीदारी अधिक है जिसका उद्देश्य उन्हें राजनीतिक व आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और स्वायत्तता देना है। कई कार्य स्थलों पर कामकाजी महिलाओं के लिए पालनाघर सेवाएं भी हैं ताकि छोटे बच्चों वाली महिलाएं बिना किसी चिंता के काम कर सकें।**

मांग पर ग्रामीण नौकरियों का प्रावधान बेरोजगारी बीमा के लिए एक प्रॉक्सी है। विकसित देशों में बेरोजगार व्यक्ति रोजगार कार्यालय में जाकर अपना पंजीकरण कराता है और नौकरी की तलाश के दौरान बेरोजगारी भत्ता प्राप्त करता है। भारत में श्रम बाजार उतना व्यवस्थित नहीं है इसलिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। इसके बजाय हमारे पास नरेगा है जो ग्रामीण आबादी को कवर करती है। सूखे और अकाल के दौरान नरेगा रोजगार की मांग बढ़ जाती है और यही कारण है कि यह वास्तव में एक 'बीमा' कार्यक्रम है। जब श्रम बाजार की स्थिति में सुधार होता है और कृषि श्रमिकों के लिए बहुत सारे काम उपलब्ध होते हैं तब नरेगा की मांग घटती है। यदि नरेगा की मांग गिरती है तो यह एक अच्छा संकेत है। यदि इस कार्यक्रम की उपयोगिता समाप्त हो जाती है तो इसका मतलब होगा कि ग्रामीण भारत पूर्ण रोजगार की स्थिति तक पहुंच गया है, लेकिन हम उस स्थिति से फिलहाल बहुत दूर हैं। हाल ही में महामारी के दौरान नरेगा के तहत काम की मांग में तेजी से वृद्धि हुई। वित्तीय वर्ष 2020-21 में नरेगा पर कुल व्यय बजट से दोगुना था जो लगभग 1.2 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया और 300 करोड़ व्यक्ति दिवस का काम पैदा हुआ।

नरेगा योजना आपदाओं के दौरान रोजगार प्रदान करता है। इसके तहत मिलने वाली मजदूरी, न्यूनतम मजदूरी से जुड़ी हुई है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह गरीबी-विरोधी उपाय के रूप में कार्य करे। योजना में महिलाओं की भागीदारी अधिक है जिसका उद्देश्य उन्हें राजनीतिक व आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और स्वायत्तता देना है। कई कार्य स्थलों पर कामकाजी महिलाओं के लिए पालनाघर सेवाएं भी हैं ताकि छोटे बच्चों वाली महिलाएं बिना किसी चिंता के काम कर सकें। नरेगा के अंतर्गत सार्वजनिक कार्य, सिंचाई जलाशयों, तालाबों, नहरों, ग्रामीण सड़कों, वनीकरण आदि के काम शामिल किए गए हैं जो सार्वजनिक संपत्ति का निर्माण करते हैं। कुछ राज्यों में इस कार्यक्रम में ग्रामीण आवास या निजी संपत्ति का निर्माण भी शामिल है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की उपलब्धता शहरों पर माईग्रेशन के तनाव को कम करती है। महामारी के दौरान गांवों में नरेगा के तहत काम प्रदान किया गया जिसके कारण बड़े पैमाने पर रिवर्स माइग्रेशन हुआ। श्रमिकों के अधिकार कानून में निहित हैं इसलिए लोगों के पास उन अधिकारों को हासिल करने का एक बेहतर मौका है। आधार लिंकेज की बदौलत मजदूरी का भुगतान सीधे बैंक खातों में जमा किया जाता है जिससे लीकेज कम होता है।

नरेगा के नकारात्मक पहलू क्या हैं? सर्वप्रथम, चूंकि यह एक श्रम बाजार हस्तक्षेप है जो मजदूरी का धरातल और वैकल्पिक विकल्प प्रदान करता है जिसकी वजह से जमींदार और मजदूरों की तलाश करने वाले लोग परेशान हैं। वे अक्सर श्रमिकों की कमी के बारे में शिकायत करते हैं या कहते हैं कि नरेगा श्रमिकों को 'आलसी' बना रहा है। नरेगा के तहत मिलने वाली मजदूरी न्यूनतम है इसलिए श्रमिकों को लुभाने के लिए वैकल्पिक कार्य के लिए मजदूरों को उच्च मजदूरी की पेशकश करने की आवश्यकता है।

दूसरा नकारात्मक पहलू यह है कि नियंत्रण और बायोमेट्रिक उपकरणों के बावजूद अभी भी निधियों का रिसाव है जिनमें श्रमिकों के नकली हाजिरी रजिस्टर जैसे तरीके शामिल हैं जो पैसे को बेईमानी से बाहर निकालने में मदद करते हैं। इसे रोकने के लिए ग्रामीणों या गैर सरकारी संगठनों के सामाजिक ऑडिट की आवश्यकता है। राजस्थान और आंध्र प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में, जहां अच्छी सामाजिक लेखा परीक्षा है, लीकेज बहुत कम था।

तीसरी नकारात्मक समस्या बायोमेट्रिक आवश्यकताओं के कारण है। अंगूठे के निशान या रेटिना रीडर काम नहीं करते या बिजली या मशीन की विफलता के कारण श्रमिक को मजदूरी से वंचित कर दिया जाता है। यहां तक कि गलती की दर अगर 2 प्रतिशत है तो इसके परिणामस्वरूप 1 या 2 करोड़ श्रमिकों को योजना के लाभों से वंचित किया जा सकता है। यह एक गंभीर चूक है। बायोमेट्रिक काम नहीं करने की स्थिति में कुछ सुधारात्मक उपायों की आवश्यकता है।

चौथी कमी भुगतान में देरी की है। इस प्रवृत्ति में हाल में वृद्धि हुई है। ये दिहाड़ी मजदूर हैं इसलिए भुगतान में एक या दो सप्ताह से अधिक की देरी बहुत परेशान करने वाली हो सकती है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि कुल 975 करोड़ रुपये के भुगतान में गंभीर विलंब हुआ है।

नरेगा की कई विशेषताएं हैं और उन्हें अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसमें सुधार किया जा सकता है। यह यूनिवर्सल बेसिक इनकम (यूबीआई) से अलग है जो बिना शर्त धन हस्तांतरण है। इसे 2017 के आर्थिक सर्वेक्षण में एक अवधारणा के रूप में पेश किया गया था। इसके विपरीत नरेगा स्व-चयनित व्यक्तियों के लिए है जिसमें कठिन शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। अगर सिस्टम ठीक से काम करता है तो यह संभवत: नकली और धोखाधड़ी के दावेदारों को फ़िल्टर करता है। एनआरईजीएस की सफलता का एक पैमाना यह है कि शहरी समकक्ष बेरोजगारों के लिए इस तरह की योजना शुरू करने की भी मांग होती है। कई राज्य सरकारों ने शहरी रोजगार गारंटी योजना भी शुरू करने पर विचार किया है।

नरेगा लोक निर्माण कार्यक्रमों, प्रयोगों और पायलट परियोजनाओं की परिणति थी जो कुछ हद तक सफलता के साथ 1960 के दशक की शुरुआत में आरंभ हुई थी। लंबे सूखे की पृष्ठभूमि में 1973 में महाराष्ट्र की रोजगार गारंटी योजना शुरू की गई थी। राज्य सरकार ने शहरों में कार्यरत लोगों पर प्रोफेशनल टैक्स लगाकर इसके लिए धन इकट्ठा किया था। यह योजना अच्छे तरीके से चली और यह राष्ट्रीय कानून के लिए एक प्रेरणा थी। भारत में नरेगा जैसी योजना की आवश्यकता तब तक है जब तक कार्यरत श्रमिकों व बेरोजगार श्रमिकों के व्यापक पंजीकरण तथा ट्रैकिंग के साथ एक पूर्ण औपचारिक बेरोजगारी बीमा योजना शुरू नहीं होती एवं इसके लिए भुगतान करने के लिए नियोक्ताओं से पेरोल टैक्स एकत्र किया जाता रहेगा। मुफ्त खाद्यान्न (5 किलो प्रति व्यक्ति प्रति माह) और विभिन्न प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजनाओं जैसे 'पीएम किसान' या 'लाडकी बहिण योजना' का अतिरिक्त प्रभाव इतना है कि नरेगा की आवश्यकता कुछ हद तक कम हो सकती है। यह नहीं भूलना चाहिए कि अपनी कार्य आवश्यकता के कारण नरेगा टिकाऊ ग्रामीण परिसंपत्तियों का सृजन करता है जो उत्पादकता और लोक कल्याण में भी वृद्धि करता है। यह महिला सशक्तिकरण के लिए एक अप्रत्यक्ष माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। इसलिए नरेगा की उपलब्धियों एवं उसकी आवश्यकता के मद्देनज़र उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में यह और अधिक प्रभावी होगा। यह पूरी दुनिया के लिए रोल मॉडल है।

(लेखक जाने-माने अर्थशास्त्री हैं। सिंडिकेट: द बिलियन प्रेस)

खेल जगत

आईपीएल में धीमी ओवर गति पर कप्तान नहीं होंगे निलंबित

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने गुरुवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के लिए कप्तान के तीन बार धीमी ओवर गति का दोषी पाए जाने के बाद एक मैच के निलंबन के नियम को समाप्त कर दिया है आज यहां बीसीसीआई के मुख्यालय पर आईपीएल की सभी 10 टीमों के कप्तानों की बैठक हुई। बैठक में आगामी आईपीएल सत्र के धीमी ओवर गति के नियम में बदलाव किया गया है। इस बदलाव के तहत अब कप्तान को एक मैच से निलंबित नहीं किया जायेगा। नये नियम के तहत अब इन दोषों के परिणामस्वरूप केवल जुर्माना और मैच के दौरान क्षेत्ररक्षण पर प्रतिबंध लगेगा। अब किसी कप्तान पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा, बल्कि उसके नाम के साथ डीमेरिट अंक जोड़े जाएंगे। हालांकि 2025 सीजन से पहले लगाए गए किसी भी दंड को खिलाड़ी या टीम अधिकारी को पूरा करना होगा।

आरसीबी 18वें आईपीएल में विराट के दम पर खिताब अपने नाम करने उतरेगी

आरसीबी के सामने मौजूदा चैम्पियन केकेआर के खिलाफ जीत से आगाज करने की चुनौती

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 21 मार्च (देशबन्धु)। भारत के विराट कोहली,रोहित शर्मा, महेंद्र सिंह धोनी, रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा जैसे सदाबहार और, यशस्वी जायसवाल, श्रेयस अय्यर और

■ लार के इस्तेमाल की इजाजत से भुवी आरसीबी व रसेल साबित हो सकते हैं केकेआर के तुरुप के इक्के

शुभमन गिल के साथ ऑस्ट्रेलिया के पैट कमिंस,ट्रेविज हेड,दक्षिण अफ्रीका के हेनरिक क्लासेन, डेविड मिलर, इंग्लैंड के जोस बटलर व मोइन अली, न्यूजीलैंड के डेवॉन कॉनवे और रचिन रवींद्र के साथ श्रीलंका के मतिशा पथिराना जैसे दुनिया धुरंधर क्रिकेटर दुनिया की शनिवार से शुरू हो रही सबसे महंगी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) क्रिकेट के 18 वें संस्करण में अपनी अपनी फ्रेंचाइजी के लिए बेहतरीन प्रदर्शन उसे खिताब जिताने का सपना लिए खेलने उतरेंगे। अब अंतरराष्ट्रीय

टी 20 क्रिकेट को अलविदा कह चुके विराट कोहली के लिए आरसीबी, धोनी व जडेजा के लिए चेन्ने तथा वेस्ट इंडीज के ऑलराउंडर सुनील नारायण तथा आंद्रे रसेल के लिए केकेआर के लिए संभवत: आखिरी आईपीएल हो सकता है। आईपीएल के ये सभी धुरंधर इस बाद अपनी अपनी फ्रेंचाइजी के लिए यादगार प्रदर्शन कर इसे संभवत: विदा करना चाहेंगे। बेशक आईपीएल के खुद को दुनिया की सबसे महंगी और कमाउ लीग के रूप में स्थापित करने से दुनिया भर के क्रिकेट खेलने वाले देश रश्क करते है। आईपीएल के 18 वें संस्करण का आगाज मौजूदा व कुल तीन बार की चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और अब तक तीन बार फाइनल में फाइनल में स्थान बनाने के बावजूद खिताब जीतने को तरसने वाली रॉयल चैलेजर्स (आरसीबी) के बीच कोलकाता के ईडन गार्डन पर खेले जाने वाले पहले मैच से होगा। धोनी चेन्नै सुपर किंग्स को और रोहित शर्मा अपनी कप्तानी में मुंबई इंडियंस को सबसे ज्यादा पांच पांच बार खिताब जिता चुके हैं। भारत और दुनिया के मौजूदा सर्वकालीन बल्लेबाजों में से एक विराट कोहली की आईपीएल के अब तक सभी 17 संस्करणों मे खेल कुल 252 मैच खेल सबसे ज्यादा आठ शतकों और

धोनी की कप्तानी व रोहित की अगुआई में जीते हैं अब तक पांच-पांच आईपीएल खिताब

महेंद्र सिंह धोनी की अगुआई में चेन्नै सुपर किंग्स (2010, 2011, 2018,2021, 2023) ने रोहित शर्मा की कप्तानी में मुंबई इंडियंस (2013, 2015, 2017, 2019, 2020) ने आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा पांच पांच बार खिताब जीते हैं। धोनी की कप्तानी में चेन्नै सुपर किंग्स साथ ही पांच बार (2008,2012, 2013, 2015, 2019) उपविजेता भी रही है जबकि मुंबइ+ इंडियंस एक बार 2010 में उपविजेता रही है। कोलकाता नाइट राइडर्स ने गौतम गंभीर की कप्तानी में दो बार (2012 व 2014) व श्रेयस अयय्र (2024) की कप्तानी में एक बार सहित कुल तीन बार खिताब जीता है जबकि कोलकाता नाइट राइडर्स (2021) में एक बार उपविजेता रही है। शेन वॉर्न की कप्तानी में राजस्थान रॉयल्स (2008), एडम गिलक्रिस्ट की कप्तानी में डेकन चार्जर्स (2009) , डेविड वॉर्नर की कप्तानी में सनराइजर्स हैदराबाद (2016) तथा हार्दिक पांडया की कप्तानी में गुजरात टाइटंस(2022) ने अब तक हुए आईपीएल के 17 संस्करणों में एक एक बार खिताब जीता है।

55 अर्द्धशतकों सहित कुल सबसे ज्यादा 8004 रन बनाने के बावजूद अपनी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) को खिताब जिताने की साध अब तक अधूरी है। आरसीबी पिछले संस्करण में अपने शुरू के आठ में सात मैच हारने के बाद अगले लगातार छह मैच जीत चेन्नै सुपर किंग्स को अपने बेहतर नेट रन रेट के आधार पर पीछे छोड़ प्ले ऑफ में स्थान बनाने के बाद इलिमिनेटर में राजस्थान रॉयल्स से हार कर बाहर हो गई थी। आईपीएल के 18 वें संस्करण में 18 नंबर की जर्सी पहन कर खेलने वाले अपने करिश्माई बल्लेबाज विराट कोहली की मदद से अब तक तीन बार उपविजेता रही आरसीबी इस बार अपनी खिताब जीतने की हसरत को पूरा करने उतरेगी।

केकेआर और आरसीबी के मैच में हो सकती है बारिश

कोलकाता, 21 मार्च (एजेंसियां)। शनिवार को आईपीएल 2025 सीजन ओपनर में डिफेंडिंग चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के बीच होने वाले मुकाबले पर बारिश का असर पड़ सकता है। भारतीय मौसम विभाग ने इस क्षेत्र के लिए 'ऑरेंज अलर्ट' जारी किया है। विभाग ने बताया कि शनिवार तक हल्की या मध्यम बारिश के साथ गरज, बिजली और तेज हवाएं चलने की संभावना है। कोलकाता में सीजन ओपनर से पहले रुक-रुक कर बारिश हो रही है, जिसके चलते केकेआर का एक इंट्रा-स्क्वाड प्रैक्टिस मैच सिर्फ एक पारी के बाद ही बारिश के कारण रद्द करना पड़ा। हालांकि बुधवार और गुरुवार को हल्की बारिश होने के बावजूद दोनों टीमों ने अपने प्रैक्टिस सेशन पूरे किए। हालांकि सबसे बड़ी चिंता 22 मार्च को होने वाले सीजन के पहले मैच को लेकर है, क्योंकि मौसम विभाग के अनुसार शुक्रवार (मैच की पूर्व संध्या) और शनिवार को सबसे अधिक बारिश होने की संभावना है। केकेआर बनाम आरसीबी मुकाबला शाम 7 बजे टॉस और 7:30 बजे शुरू होने के लिए निर्धारित है। आईपीएल के लीग चरण के मैचों में एक घंटे का अतिरिक्त समय मिलता है, जिसका मतलब है कि यदि मैच देरी से शुरू होता है, तो पांच ओवर प्रति पारी का खेल रात 12 बजे तक पूरा किया जाना चाहिए।

आईपीएल 2025

22 मार्च - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
23 मार्च - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम राजस्थान रॉयल्स
23 मार्च - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम मुंबई इंडियंस
24 मार्च - दिल्ली कैपिटल्स बनाम लखनऊ सुपर जाइंट्स
25 मार्च - गुजरात टाइटंस बनाम पंजाब किंग्स
26 मार्च - राजस्थान रॉयल्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
27 मार्च - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स
28 मार्च - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
29 मार्च - गुजरात टाइटंस बनाम मुंबई इंडियंस
30 मार्च - दिल्ली कैपिटल्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
30 मार्च - राजस्थान रॉयल्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
31 मार्च - मुंबई इंडियंस बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
1 अप्रैल - लखनऊ सुपर जाइंट्स बनाम पंजाब किंग्स
2 अप्रैल - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम गुजरात टाइटंस
3 अप्रैल - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
4 अप्रैल - लखनऊ सुपर जाइंट्स बनाम मुंबई इंडियंस
5 अप्रैल - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स
5 अप्रैल - पंजाब किंग्स बनाम राजस्थान रॉयल्स
6 अप्रैल - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स
6 अप्रैल - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम गुजरात टाइटंस
7 अप्रैल - मुंबई इंडियंस बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
8 अप्रैल - पंजाब किंग्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
9 अप्रैल - गुजरात टाइटंस बनाम राजस्थान रॉयल्स
10 अप्रैल - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम दिल्ली कैपिटल्स
11 अप्रैल - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
12 अप्रैल - लखनऊ सुपर जाइंट्स बनाम गुजरात टाइटंस
12 अप्रैल - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम पंजाब किंग्स
13 अप्रैल - राजस्थान रॉयल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
13 अप्रैल - दिल्ली कैपिटल्स बनाम मुंबई इंडियंस
14 अप्रैल - लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
15 अप्रैल - पंजाब किंग्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
16 अप्रैल - दिल्ली कैपिटल्स बनाम राजस्थान रॉयल्स
17 अप्रैल - मुंबई इंडियंस बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
18 अप्रैल - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम पंजाब किंग्स
19 अप्रैल - गुजरात टाइटंस बनाम दिल्ली कैपिटल्स
19 अप्रैल - राजस्थान रॉयल्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स
20 अप्रैल - पंजाब किंग्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
20 अप्रैल - मुंबई इंडियंस बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
21 अप्रैल - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम गुजरात टाइटंस
22 अप्रैल - लखनऊ सुपर जाइंट्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स
23 अप्रैल - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम मुंबई इंडियंस
24 अप्रैल - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम राजस्थान रॉयल्स
25 अप्रैल - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
26 अप्रैल - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम पंजाब किंग्स
27 अप्रैल - मुंबई इंडियंस बनाम लखनऊ सुपर जाइंट्स
27 अप्रैल - दिल्ली कैपिटल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
28 अप्रैल - राजस्थान रॉयल्स बनाम गुजरात टाइटंस
29 अप्रैल - दिल्ली कैपिटल्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
30 अप्रैल - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम पंजाब किंग्स
1 मई - राजस्थान रॉयल्स बनाम मुंबई इंडियंस
2 मई - गुजरात टाइटंस बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
3 मई - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
4 मई - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम राजस्थान रॉयल्स
4 मई - पंजाब किंग्स बनाम लखनऊ सुपर जाइंट्स
5 मई - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम दिल्ली कैपिटल्स
6 मई - मुंबई इंडियंस बनाम गुजरात टाइटंस
7 मई - कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
8 मई - पंजाब किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स
9 मई - लखनऊ सुपर जाइंट्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु
10 मई - सनराइजर्स हैदराबाद बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
11 मई - पंजाब किंग्स बनाम मुंबई इंडियंस
11 मई - दिल्ली कैपिटल्स बनाम गुजरात टाइटंस
12 मई - चेन्नई सुपर किंग्स बनाम राजस्थान रॉयल्स
13 मई - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
14 मई - गुजरात टाइटंस बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स
15 मई - मुंबई इंडियंस बनाम दिल्ली कैपिटल्स
16 मई - राजस्थान रॉयल्स बनाम पंजाब किंग्स
17 मई - रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स
18 मई - गुजरात टाइटंस बनाम चेन्नई सुपर किंग्स
18 मई - लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद
20 मई - क्वालीफायर 1
21 मई - एलिमिनेटर
23 मई - क्वालीफायर 2
25 मई - फाइनल

नए कप्तान ऋषभ पंत की अगुवाई में दमदार चुनौती पेश करेंगे लखनऊ सुपरजायंट्स

लखनऊ, 21 मार्च (एजेंसियां)। आईपीएल 2025 का सीजन शनिवार से शुरू होगा। इस बार लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) अपने नए कप्तान ऋषभ पंत की अगुवाई में अपना पहला खिताब जीतने उतरेगी। पिछले सीजन में खराब प्रदर्शन और सातवें स्थान पर रहने के बाद, टीम ने आईपीएल की नीलामी में अपनी रणनीति बदल दी। एलएसजी ने पंत को 27 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड रकम में साइन किया, जिससे वह आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बने। पंत की अगुआई में टीम को एक नई दिशा मिलने की उम्मीद है, और उनके नेतृत्व में अब तक की सबसे मजबूत टीम एलएसजी अपनी पहले खिताब की तलाश में है। लखनऊ सुपर जायंट्स ने 2022 में अपने आईपीएल सफर की शुरुआत की थी। पहले ही सीजन

में, टीम ने प्लेऑफ में प्रवेश किया, और अगले साल भी अपनी उम्मीदों को कायम रखा। हालांकि, 2024 सीजन में टीम ने सातवें स्थान पर खत्म किया, जिससे उनकी प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीदें धूमिल हो गईं। इस बार एलएसजी ने अपनी रणनीति में बदलाव किया है, जिसमें उन्होंने अपने पुराने कप्तान केएल राहुल को रिलीज कर दिया और ऋषभ पंत को टीम का कप्तान नियुक्त किया। पंत की कप्तानी में एलएसजी एक नई

■ एलएसजी ने पंत को 27 करोड़ रुपए की रिकॉर्ड रकम में साइन किया, जिससे वह आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बने

शुरुआत की ओर बढ़ रही है। उनका पहला मुकाबला 24 मार्च को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ विशाखापत्तनम में होगा, और इस सीजन से टीम के लिए उम्मीदें बहुत अधिक हैं। टीम में पंत के अलावा, निकोलस पूरन, डेविड मिलर, मिशेल मार्श, एडेन मार्करम और शमर जोसेफ जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। एलएसजी ने कुल 19 खिलाड़ियों को नीलामी में खरीदा, जिनमें 6 विदेशी खिलाड़ी हैं। इसके अलावा, जस्टिन लैंगर की कोचिंग में टीम अपनी रणनीति को सही दिशा देने के लिए तैयार है।

बुमराह के साथ मुंबई इंडियंस हमेशा बेहतर टीम रहेगी : बाउचर

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। आईपीएल के पिछले दो सीजन में मुंबई इंडियंस के मुख्य कोच रहे दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर मार्क बाउचर ने कहा कि जसप्रीत बुमराह के होने पर टीम हमेशा बेहतर दिखती है। उन्होंने कहा कि आईपीएल 2025 के शुरुआती मैचों में उनका न होना उनके लिए अच्छा संकेत नहीं है। बुमराह वर्तमान में बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (पूर्व में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी) में बेंगलुरु में रिहैब से गुजर रहे हैं। पीठ के निचले हिस्से में चोट लगने के कारण वे सिडनी में पांचवें टेस्ट की दूसरी पारी में गेंदबाजी नहीं कर पाए थे। तब से बुमराह एक्शन से बाहर हैं और यहां तक कि भारत के विजयी चैंपियंस ट्रॉफी अभियान से भी चूक गए थे। जसप्रीत बुमराह

के बिना मुंबई इंडियंस की टीम का खेलना बिलकुल भी अच्छा नहीं है। वह शायद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ टी20 गेंदबाज हैं, और यह तथ्य कि वह पावरप्ले और डैथ ओवरों में गेंदबाजी कर सकते हैं, उन्हें अपने आप में एक मैच विजेता बनाता है। जसप्रीत बुमराह के साथ मुंबई इंडियंस हमेशा एक बेहतर टीम होगी। टूर्नामेंट के 18वें संस्करण से पहले एक वर्चुअल बातचीत में जियोस्टार विशेषज्ञ बाउचर ने आईएएनएस से कहा कि मैं अपने पहले सीजन में जसप्रीत बुमराह को शामिल करना पसंद करूंगा (जब वह पीठ की चोट के कारण आईपीएल 2023 से बाहर हो गए थे)। मुझे लगता है कि अगर वह हमारे पास होते, तो मुझे कोई संदेह नहीं है कि हम खिताब के दावेदार हो सकते थे। हम तीसरे स्थान पर पहुंच गए, लेकिन, मेरा मतलब है, वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज हैं, इसलिए जसप्रीत बुमराह के बिना कोई भी टीम उतनी अच्छी टीम नहीं होगी, जितनी उनके साथ होगी।

■ बुमराह ने आईपीएल में मुंबई इंडियंस के लिए 133 मैचों में 165 विकेट लिए हैं
■ चोट लगने के कारण वह सिडनी में पांचवें टेस्ट की दूसरी पारी में गेंदबाजी नहीं कर पाए थे

युवराज सिंह डब्ल्यूसीएल सीजन 2 में भारत की कप्तानी करेंगे

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। दिग्गज क्रिकेटर युवराज सिंह ने जुलाई में यूनाइटेड किंगडम में होने वाली वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) के दूसरे सीजन में अपनी भागीदारी की पुष्टि की है। इस प्रतिष्ठित ऑलराउंडर ने पहले टूर्नामेंट के उद्घाटन संस्करण में भारत को अपनी

■ मैं फिर से वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए उत्सुक हूं : युवराज

कप्तानी में खिताबी जीत दिलाकर असाधारण नेतृत्व का प्रदर्शन किया था। युवराज के साथ अनुभवी सलामी बल्लेबाज शिखर धवन भी होंगे, जो पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद इस टूर्नामेंट में पदार्पण करेंगे। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) द्वारा समर्थित टूर्नामेंट के दूसरे संस्करण में फिर से भारत की कप्तानी करने के बारे में बात करते हुए, युवराज ने कहा कि मैं फिर से वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए उत्सुक हूं। टूर्नामेंट के पहले संस्करण में हमारी जीत की यादें, मेरे साथियों के साथ हमेशा मेरे दिल के करीब रहेंगी। डब्ल्यूसीएल के पिछले संस्करण में युवराज सिंह, सुरेश रैना, रॉबिन उथप्पा, इरफान और यूसुफ पठान और भारत के कई अन्य क्रिकेट दिग्गजों ने शानदार प्रदर्शन किया था, जिससे साबित हुआ कि खेल के प्रति उनका जुनून आज भी उतना ही मजबूत है।

एक बार फिर दमदार नजर आ रही है मुंबई इंडियंस

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। मुंबई इंडियंस की टीम चेन्नई सुपर किंग्स के साथ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की सबसे सफल टीम में शामिल है। हालांकि पिछले कुछ सीजन मुंबई इंडियंस के लिए बहुत अच्छे नहीं रहे हैं और पिछले सीजन में तो उनके लिए रोहित शर्मा को हटाने का फैसला भी फैंस के गले पूरी तरह से नहीं उतरा था। इसका प्रभाव कहीं न कहीं टीम के मनोबल पर भी पड़ा। लेकिन आईपीएल 2025 में एमआई पुरानी अस्थिरता को पीछे छोड़कर एक दमदार सीजन के लिए तैयार नजर आ रही है। पिछले चार सीजन में दो बार अंक तालिका में सबसे निचले पायदान पर नजर आने वाली एमआई

आईपीएल 2025

■ हार्दिक इस दौरान दो बार आईसीसी प्रतियोगिताओं में महत्वपूर्ण प्रदर्शन कर चुके हैं।

इस बार कप्तान हार्दिक पांड्या के साथ कहीं अधिक आत्मविश्वास से भरपूर है। हार्दिक इस दौरान दो बार आईसीसी प्रतियोगिताओं में महत्वपूर्ण प्रदर्शन कर चुके हैं। टी20 विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी में भारत हार्दिक पांड्या के अहम रोल और रोहित शर्मा की कप्तानी में विजयी बना है। हार्दिक के साथ रोहित एमआई लीडरशिप का अहम हिस्सा हैं। फैंस में हार्दिक की स्वीकार्यता बढ़ी है और टीम ने नीलामी में जो खिलाड़ी रिटेन किए हैं, उससे पता चलता है कि एमआई के कोर ग्रुप में हार्दिक पांड्या की कप्तानी को लेकर सहजता है। एमआई ने इस बार नीलामी में ट्रेंट बोल्ट को लेकर जसप्रीत बुमराह के साथ बेहतरीन पेस अटैक बनाया है।

हार्दिक का खुद पर भरोसा उन्हें दूसरों से अलग करता है : हरभजन

नई दिल्ली। हार्दिक पांड्या हालांकि पिछले साल के आईपीएल से एक मैच के निलंबन के कारण रविवार को चेन्नई में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ आईपीएल 2025 में मुंबई इंडियंस के शुरुआती मैच में नहीं खेल पाएंगे, लेकिन भारत के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह का मानना ??है कि हरफनमौला खिलाड़ी का खुद पर भरोसा उन्हें दूसरों से अलग करता है। आईपीएल 2025 पांड्या के लिए एक महत्वपूर्ण टूर्नामेंट है, जो आईपीएल 2022 जीतने वाले कप्तान हैं, जिनका पिछला सीजन हर पहलू में निराशाजनक रहा था। गुजरात टाइटन्स से आने के बाद रोहित शर्मा की जगह उन्हें कप्तान बनाने के एमआई प्रबंधन द्वारा लिए गए फैसले के परिणामस्वरूप आईपीएल 2024 के पहले हाफ में दर्शकों ने ऑलराउंडर की हूटिंग की, जबकि पांच बार की चैंपियन टीम अंक तालिका में सबसे निचले स्थान पर रही।

ओसाका, गत विजेता कोलिन्स तीसरे दौर में पहुंचीं

■ ओसाका ने अब 2025 में 8-3 जीत-हार का रिकॉर्ड बनाया
■ ओसाका की अगली प्रतिद्वंद्वी संयुक्त राज्य अमेरिका की वाइल्ड कार्ड हैली बैपटिस्ट होंगी

मियामी, 21 मार्च (एजेंसियां)। नाओमी ओसाका ने मियामी ओपन में 24वीं वरीयता प्राप्त सैमसोनोवा को 6-2, 6-4 से हराकर तीसरे दौर में प्रवेश किया। 2022 मियामी ओपन की फाइनलिस्ट ओसाका ने अपने प्रतिद्वंद्वी द्वारा आखिरी मिनट में किए गए हमले को विफल करते हुए मैच को 1 घंटे 22 मिनट में समाप्त किया और पिछले साल इंडियन वेल्स में सैमसोनोवा पर अपनी जीत को दोहराया।

ओसाका और सैमसोनोवा सनशाइन डबल के दौरान डब्ल्यूटीए 1000 इवेंट के दूसरे दौर में आमने-सामने हुईं और डब्ल्यूटीए के अनुसार, लगातार दूसरे साल पूर्व विश्व नंबर 1 जापानी खिलाड़ी सीधे सेटों में विजयी रहीं। इस साल के इंडियन वेल्स इवेंट में पहले दौर में हार के बाद, ओसाका मियामी में फिर से ट्रैक पर आ गई है, उसने सैमसोनोवा पर जीत के साथ यूलिया स्टारोडुबत्सेवा पर वापसी करते हुए जीत दर्ज की। ओसाका ने

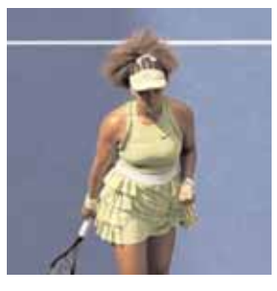

अब 2025 में 8-3 जीत-हार का रिकॉर्ड बनाया है। ओसाका की अगली प्रतिद्वंद्वी संयुक्त राज्य अमेरिका की वाइल्ड कार्ड हैली बैपटिस्ट होंगी। इससे पहले गुरुवार को, बैपटिस्ट ने नंबर 12 सीड डारिया कसात्किना को 3-6, 6-4, 7-5 से हराकर अपने करियर की तीसरी शीर्ष 20 जीत हासिल की। ओसाका और बैपटिस्ट इस साल के पहले सप्ताह में पहली बार ऑकलैंड क्वार्टर फाइनल में आमने-सामने हुए। उस अवसर पर, ओसाका ने 6-7(2), 6-1, 6-2 से जीत हासिल की, और न्यूजीलैंड में क्लारा टॉसन से उपविजेता रही। दूसरी ओर, 14वीं वरीयता प्राप्त डेनियल कोलिन्स, जिन्होंने पिछले साल मियामी में अपना पहला डब्ल्यूटीए 1000 खिताब जीता था, रात के सत्र में जीत के बाद तीसरे दौर में ओसाका के साथ शामिल हुईं। कोलिन्स ने स्टेडियम कोर्ट पर गुरुवार को हुए फाइनल मैच में रोमानिया की सोराना क्रिस्टिया को 6-4, 7-6(3) से हराया।

पाकिस्तान ने न्यूजीलैंड को नौ विकेट से हराया

ऑकलैंड, 21 मार्च (एजेंसियां)। हसन नवाज (नाबाद 105) की शतकीय और कप्तान आगा सलमान (नाबाद 51) की आतिशी अर्द्धशतकीय पारियों की बदौलत पाकिस्तान ने शुक्रवार को तीसरे टी-20 मुकाबले में न्यूजीलैंड को नौ विकेट से हरा दिया है। 205 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पाकिस्तान के लिए मोहम्मद हारिस और हसन नवाज की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 74 रन जोड़े। छठें ओवर में जेकब डफी ने मोहम्मद हारिस को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। मोहम्मद हारिस 20 गेंदों में चार चौके और तीन छक्के लगाते हुए (41) रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान सलमान ने हसन नवाज के साथ ना केवल पारी को संभाला दोनों बल्लेबाजों ने तेजी के साथ रन भी बटोरे।

■ हसन ने 45 गेंदों में 10 चौके और सात छक्के लगाते हुए (नाबाद 105) रनों की पारी खेली

पाकिस्तान ने 16 ओवर में एक विकेट पर 207 रन बनाकर मुकाबला नौ विकेट से जीत लिया। हसन नवाज ने 45 गेंदों में 10 चौके और सात छक्के लगाते हुए (नाबाद 105) रनों की पारी खेली। कप्तान आगा सलमान 31 गेदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए (51) रन पर नाबाद रहे। न्यूजीलैंड की ओर से जेकब डफी एकमात्र सफल

गेंदबाज रहे। उन्होंने मोहम्मद हारिस को आउट किया। इससे पहले आज यहां पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली आग ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने पहले ही ओवर में फिन ऐलन (शून्य) का विकेट गवां दिये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मार्क चैपमैन ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाजी की शुरुआत की। उन्होंने टिम साइफर के साथ दूसरे विकेट के लिए 40 रनों की साझेदारी की। पांचवें ओवर में हारिस रउफ ने टिम साइफर को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। टिम साइफर ने नौ गेंदों में दो छक्के और एक चौका लगाते हुए (19) रनों की पारी खेली। दो विकेट गिरने के बावजूद डैरिल मिचेल और मार्क चैपमैन तेजी के साथ रन बनाते रहे। दोनों बल्लेबाजों ने तीसरे विकेट के लिए 55 रन जोड़े। 10वें ओवर में शादाब खान ने डैरिल मिचेल को आउट कर इस साझेदारी का अंत किया।

[अर्थ जगत]

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

एनटीपीसी	2.78 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	2.75 प्रतिशत
कोटक बैंक	2.41 प्रतिशत
एक्सिस बैंक	2.13 प्रतिशत
एलटी	2.03 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

इंफोसिस	1.34 प्रतिशत
टाटा स्टील	1.10 प्रतिशत
एम एंड एम	1.08 प्रतिशत
टाइटन	0.91 प्रतिशत
बजाज फिनसर्व	0.63 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	90,220
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,03,000
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	87. 33	87.40
पौंड स्टर्लिंग	106.21	106.45
यूरो	88.45	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4280-4380
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4250-4350

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	6700-6800
मसूर काली	7300-7400
उड़द दाल	9200-9300
मूंग दाल	9250-9350
अरहर दाल	8400-8500

भारत के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को मजबूत बनाएगा सीटूएस

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। सेमीकंडक्टर डिजाइन को एक रणनीतिक जरूरत बनाने के प्रयास में सरकार देश के चिप डिजाइन इकोसिस्टम को विकसित करने की दिशा में तेजी से काम रही है। सेमीकंडक्टर डिजाइन अप्रोच को लेकर सरकार 250 शैक्षणिक संस्थान और 65 स्टार्टअप को साथ लाने पर काम कर रही है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अनुसार, इस कदम का उद्देश्य रचनात्मकता के नए युग की शुरुआत करना है जहां देश में कौशल वाला कोई भी व्यक्ति कहीं से भी सेमीकंडक्टर चिप्स डिजाइन कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण 'भारत में डिजाइन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि 'मेक इन इंडिया' के अनुरूप इस प्रक्रिया में चिप डिजाइन को लोकतांत्रिक बनाया जाएगा। मंत्रालय ने कहा कि चिप्स टू स्टार्टअप (सीटूएस प्रोग्राम) का उद्देश्य बीटेक, एमटेक, और पीएचडी लेवल पर 85,000 इंडस्ट्री-रेडी मैनपावर जनरेट करना है जो सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन करने में स्पेशलाइज्ड हों।

■ चिप डिजाइन इकोसिस्टम को विकसित करने की दिशा में काम रही सरकार

यह प्रोग्राम छात्रों को चिप डिजाइन, फैब्रिकेशन और टेस्टिंग के लिए हैंड-ऑन एक्सपीरियंस पेश करता है। प्रोग्राम के तहत, इंडस्ट्री पार्टनर्स के सहयोग से आयोजित नियमित ट्रेनिंग सेशंस के जरिए छात्रों को चिप डिजाइन, फैब्रिकेशन और टेस्टिंग रिसोर्स तक पहुंच प्रदान की जाती है।

इन अवसरों में एएसआईसीएस, एसओसीएस और आईपी कोर डिजाइन के वर्किंग प्रोटोटाइप के डेवलपमेंट के लिए रिसर्च एंड डेवलपमेंट परियोजनाओं को लागू करना शामिल है।

भारत के लक्ष्य को पूरा करने में ऊर्जा की होगी अहम भूमिका : खट्टर

नई दिल्ली। 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में ऊर्जा की अहम भूमिका होगी और पर्याप्त ट्रांसमिशन सिस्टम की उपलब्धता से ऊर्जा उत्पादन का अधिकतम उपयोग किया जा सकता है। यह बयान केंद्रीय ऊर्जा और आवासन और शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल ने शुक्रवार को दिया। मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मनोहर लाल ने कहा कि नेशनल इलेक्ट्रिसिटी प्लान (एनईपी) में 2023 से 2032 की अवधि के दौरान देश में जोड़े जाने वाले आवश्यक ट्रांसमिशन सिस्टम का विवरण दिया गया है, जो देश में बिजली की मांग में वृद्धि और उत्पादन क्षमता में वृद्धि के अनुरूप है।

एनईपी-ट्रांसमिशन के अनुसार, 10 वर्ष की अवधि (2023 से 2032) के दौरान लगभग 1.91 लाख सर्किट किलोमीटर (सीकेएम) की ट्रांसमिशन लाइनें और 1,274 जीवीए (गीगा वोल्ट एम्पीयर) की ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता जोड़ने की योजना है। एनईपी-ट्रांसमिशन को केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) द्वारा तैयार किया गया है। इसमें वर्ष 2031-32 तक की ट्रांसमिशन योजना को कवर किया गया है। उच्च स्तरीय बैठक में ट्रांसमिशन में नई टेक्नोलॉजीज और साइबर सिक्योरिटी के बारे में भी बातचीत की गई। केंद्रीय मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों को शामिल करने के लिए उचित कार्रवाई करें और लोगों के कल्याण को प्राथमिकता दें। सरकार ने पिछले महीने बताया था कि ग्रामीण क्षेत्रों में औसत बिजली आपूर्ति 2014 में 12.5 घंटे से बढ़कर 2025 में 22.6 घंटे हो गई है और शहरी क्षेत्रों में इस वर्ष 23.4 घंटे हो गई है। मनोहर लाल ने कहा कि हमारा लक्ष्य सभी को हर समय बिजली उपलब्ध कराना है और देश भर में शत-प्रतिशत घरों तक बिजली पहुंचाना है।

सेबी ने फंड्स का दुरुपयोग करने वाली कंपनियों पर की कार्रवाई

मुंबई, 21 मार्च (एजेंसियां)।। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने व्हिसलब्लोअर्स की शिकायतों के आधार पर शेयर बाजारों में राइट्स इश्यू के माध्यम से जुटाए गए फंड्स के दुरुपयोग के लिए कई कंपनियों पर कार्रवाई की है।

सेबी ने इन कंपनियों के खिलाफ जांच शुरू की है, जिसमें आरोप है कि प्रमोटरों ने धन को निर्धारित उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करने के बजाय अवैध रूप से अपने रिश्तेदारों या मुखौटा कंपनियों को निजी उपयोग के लिए हस्तांतरित कर दिया। एनडीटीवी प्रॉफिट की एक रिपोर्ट के अनुसार, पूंजी बाजार नियामक सेबी फिलहाल चार या पांच ऐसी कंपनियों की जांच कर रही है और उसने ऐसे फंड के दुरुपयोग में एक पैटर्न की पहचान की है। रिपोर्ट में बताया गया कि ज्यादातर मामले छोटी और निष्क्रिय कंपनियों से जुड़े हैं जो राइट्स इश्यू जारी करती हैं, जिसमें मौजूदा शेयरधारकों को छूट पर शेयर दिए जाते हैं जिससे कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए निवेश जुटाया जा सके। हालांकि, बाद में इन फंडों को निजी इस्तेमाल के लिए संपत्ति आदि खरीदने के लिए डायवर्ट कर दिया जाता है। पंप और डंप मामलों के विपरीत, राइट्स इश्यू से फंड डायवर्जन का शेयर बाजार पर तत्काल प्रभाव नहीं पड़ता है। इस कारण फंड के दुरुपयोग का पता लगाना अधिक कठिन है और व्हिसलब्लोअर की शिकायतें मामलों का पता लगाने का मुख्य स्रोत हैं।

■ छोटी व निष्क्रिय कंपनियों से जुड़े हैं ज्यादातर मामले

5 दिसंबर, 2024 को पारित अंतरिम आदेश में, सेबी ने पाया कि मिष्ठान फूड्स लिमिटेड ने अपने राइट्स इश्यू से प्राप्त आय का दुरुपयोग किया और अपने घोषित उद्देश्य के बजाय प्रमोटरों और समूह संस्थाओं को धन हस्तांतरित किया। कंपनी ने शुरुआती 150 करोड़ रुपए के राइट्स इश्यू को वापस ले लिया और बाद में 50 करोड़ रुपए से कम के छोटे राइट्स इश्यू जारी किए। मिष्ठान फूड्स को अपने राइट्स इश्यू से गबन किए गए 49.82 करोड़ रुपए और फर्जी लेनदेन के जरिए डायवर्ट किए गए 47.10 करोड़ रुपए वापस करने को भी कहा गया है।

कोयला उत्पादन में एक अरब टन का आंकड़ा पार

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। भारत ने कोयला उत्पादन में एक ऐतिहासिक मुकाम हासिल करते हुए एक अरब टन का आंकड़ा पार कर लिया है, जो ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कोयला और खान मंत्री जी किशन रेड्डी ने इस उपलब्धि की घोषणा करते हुए कोयला क्षेत्र के अथक परिश्रम को सलाम किया। उन्होंने सोशल नेटवर्किंग साइट 'एक्स' (ट्विटर) पर अपने संदेश में कहा, आधुनिक तकनीकों और कुशल खनन विधियों ने उत्पादन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। हमने न सिर्फ उत्पादन बढ़ाया बल्कि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और टिकाऊ खनन को भी प्राथमिकता दी। यह उपलब्धि हमारी बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगी, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देगी। मंत्री ने इस सफलता का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व को भी दिया, जिसके तहत भारत वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र में एक सशक्त लीडर के रूप में उभर रहा है। कोयला क्षेत्र के मेहनती कार्यबल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि आपके समर्पण और कड़ी मेहनत ने भारत की ऊर्जा नींव को अडिग बनाया है।

भारत पर टिकी हैं दुनिया की निगाहें : जयंत

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी ने कहा कि भारत के उत्पादों और कारोबार की गुणवत्ता को लेकर दुनिया की निगाहें देश पर टिकी हैं। उन्होंने यह बात कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय उद्यमिता और लघु व्यवसाय विकास संस्थान (एनआईईएसबीयूडी) द्वारा आयोजित दो दिन की क्षमता निर्माण वर्कशॉप के दौरान कही।

राज्य मंत्री चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि दुनिया की निगाहें भारत पर उसके उत्पादों, उसके नागरिकों और उसके कारोबार की गुणवत्ता के लिए टिकी हैं। उन्होंने देश के उद्योगों से विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने के लिए उत्पाद की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया।

इसके अलावा, राज्य मंत्री ने कहा कि गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए उद्यमियों को निवेश करने और उन्हें हर तरीके से सपोर्ट करने की जरूरत है ताकि हमारी अर्थव्यवस्था प्रगति कर सके। उन्होंने कहा कि हाल ही में केंद्रीय बजट 2025 में महिलाओं और वंचित वर्गों को लक्षित करने वाली पहलों पर जोर दिया गया।

गुणवत्ता के लिए उद्यमियों को निवेश करने व उन्हें हर तरीके से सपोर्ट करने की जरूरत है : जयंत

राज्य मंत्री चौधरी ने कहा कि फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) के तहत लगभग 10,000 करोड़ रुपए के लोन स्वीकृत किए गए हैं, ताकि स्टार्टअप्स अपनी यात्रा शुरू कर सकें। सरकार ने नागरिकों को उनके सपनों को साकार करने में सहायता करने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं, लेकिन ये तभी प्रभावी होंगी जब हम उन्हें अपने अधिकार के रूप में इस्तेमाल करना सीखेंगे। उन्होंने कहा कि इस दो दिवसीय वर्कशॉप का उद्देश्य उभरते उद्यमियों में उद्यमशीलता की भावना को जगाना है और उन्हें सरकारी पहलों, मार्केट एक्सेस और डिजिटल क्षमता की गहरी समझ हासिल करने में मदद करना है। दो दिवसीय वर्कशॉप में पैनल चर्चा और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए, जो उभरते उद्यमियों की क्षमता निर्माण के जरिए उद्यमशीलता इकोसिस्टम को बेहतर बनाने पर केंद्रित थे। वर्कशॉप में ओडिशा, बिहार, झारखंड और छत्तीसगढ़ के 100 से अधिक उद्यमियों ने भाग लिया।

सार संक्षेप

मेकमाईट्रिप ने लांच की एआई आधारित 'कलेक्शन'

नई दिल्ली। ऑनलाइन यात्रा सेवा प्रदाता कंपनी मेकमाईट्रिप ने शुक्रवार को नई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित सुविधा 'कलेक्शन' शुरू करने की घोषणा की, जिसे होटल और होमस्टे की खोज को सरल, स्मार्ट और व्यक्तिगत बनाने के लिए तैयार किया गया है। कंपनी ने शुक्रवार को बयान जारी कर बताया कि 2000 से अधिक शहरों में 86 हजार से ज्यादा घरेलू आवासों की विशाल सूची के साथ सही स्टे का चयन करना अक्सर मुश्किल हो जाता है। मेकमाईट्रिप के मुताबिक, 'कलेक्शन' जनरेटिव एआई (जेनएआई) और यात्रियों की गहरी अंतर्दृष्टि का उपयोग कर आवास विकल्पों को थीम आधारित श्रेणियों में बांटता है, जिससे यूजरों को अपनी यात्रा जरूरतों और पसंद के हिसाब से सही जगह ढूंढने में मदद मिलती है। यह एआई मॉडल हर गंतव्य की खासियत को यात्री की रुचियों से जोड़ता है और पिछल सर्च हिस्ट्री, बुकिंग पैटर्न एवं ग्राहक समीक्षाओं के विश्लेषण से एक सहज, अति-व्यक्तिगत अनुभव देता है।

हैदराबाद, बेंगलुरु से वियतनाम के लिए सीधी उड़ानें शुरू

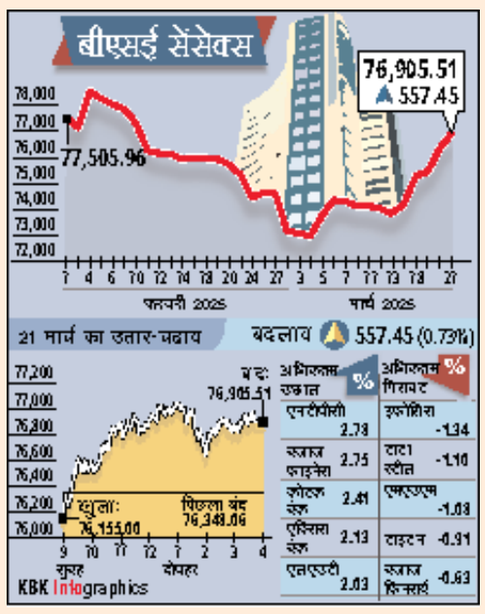

नई दिल्ली। वियतनाम की प्रमुख एयरलाइन वियतजेट ने भारत में अपनी सेवाओं का और विस्तार करते हुए हैदराबाद और बेंगलुरु से हो ची मिन्ह सिटी (वियतनाम) के लिए सीधी उड़ानों की शुरुआत की है। वियतजेट ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति में बताया कि ये उड़ानें न केवल वियतजेट के वैश्विक नेटवर्क विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं, बल्कि भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच बेहतर कनेक्टिविटी का नया अध्याय भी खोलती हैं। गत 18 और 19 मार्च को लॉन्च की गई इन नई उड़ानों की शुरुआत की खुदी में एयरलाइन ने खास पेशकश के तहत 24 मार्च तक हैदराबाद और बेंगलुरु से हो ची मिन्ह सिटी के लिए टिकट की बिक्री मात्र 11 रुपए (करों और अन्य शुल्कों को छोड़कर) से शुरू कर रही है। यह पेशकश 01 जून से 15 अक्टूबर के बीच की उड़ानों पर लागू होगी।

हीरो मोटोकॉर्प करेगी यूलर मोटर्स में निवेश

नई दिल्ली। मोटरसाइकिल और स्कूटर बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी हीरो मोटोकॉर्प अपने विजन 'मोबिलिटी का भविष्य बनें' की ओर तेजी से आगे बढ़ते हुए यूलर मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी हासिल करके इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर श्रेणी में रणनीतिक तौर पर 525 करोड़ रुपए निवेश करेगी। कंपनी के कार्यकारी अध्यक्ष पवन मुंजाल ने कहा कि कंपनी के निदेशक मंडल ने यूलर मोटर्स में 525 करोड़ रुपए (एक या अधिक किस्तों में) तक के रणनीतिक निवेश को मंजूरी दे दी है। यह निवेश हीरो मोटोकॉर्प को तेजी से बढ़ते इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर बाजार में मजबूत पैर जमाने में मदद करेगा, जहां निकट भविष्य में कुल बिक्री में ईवी की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत होने का अनुमान है।

लिवाली की बदौलत बाजार में तेजी बरकरार

मुंबई, 21 मार्च (एजेंसियां)। विश्व बाजार में भारी गिरावट के बावजूद स्थानीय स्तर पर चौतरफा लिवाली की बदौलत आज शेयर बाजार में लगातार पांचवें दिन तेजी रही।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 557.45 अंक अर्थात 0.73 प्रतिशत की छलांग लगाकर 76,905.51 अंक पर पहुंच गया। साथ ही नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 159.75 अंक यानी 0.69 प्रतिशत की तेजी के साथ 23,350.40 अंक पर बंद हुआ।

■ सेंसेक्स 0.73 प्रतिशत की छलांग लगाकर 76,905.51 अंक पर
■ निफ्टी 0.69 प्रतिशत की तेजी के साथ 23,350.40 अंक पर बंद

दिग्गज कंपनियों के मुकाबले बीएसई की मझौली और छोटी कंपनियों में लिवाली की रफ्तार अधिक रही। इससे मिडकैप 1.14 प्रतिशत मजबूत होकर 41,831.57 अंक और स्मॉलकैप 2.05 प्रतिशत उछलकर 47,296.81 अंक हो गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4162 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2823 में तेजी जबकि 1213 में गिरावट रही वहीं 126 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 38 कंपनियां हरे जबकि 12 लाल निशान पर रहीं। बीएसई में धातु और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स की 0.79 प्रतिशत तक की गिरावट को छोड़कर अन्य 19 में तेजी का रुख रहा। इस दौरान कमोडिटीज 0.50, सीडी 0.66, ऊर्जा 1.86, एफएमसीजी 0.50, वित्तीय सेवाएं 1.26, हेल्थकेयर 1.56, इंडस्ट्रियल्स 1.30, आईटी 0.16, दूरसंचार 1.91, यूटिलिटीज 2.11, ऑटो 0.55, बैंकिंग 1.16, कैपिटल गुड्स 1.00, तेल एवं गैस 2.25, पावर 1.07, रियल्टी 0.95, टेक 0.41, सर्विसेज 1.26 और फोकस्ड आईटी समूह के शेयर 0.05 प्रतिशत उछल गए।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गिरावट रही। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.51, जर्मनी का डैक्स 0.64, जापान का निक्केई 0.20, हांगकांग का हैंगसेंग 2.19 और चीन का शंघाई कंपोजिट 1.29 प्रतिशत लुढ़क गए।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 193 अंक की गिरावट लेकर 76,155.00 अंक पर खुला और बिकवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 76,095.26 अंक के निचले स्तर पर आ गया। वहीं, इसके बाद शुरू हुई लिवाली के बल पर यह चढ़ता हुआ दोपहर तक 77,041.94 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 76,348.06 अंक के मुकाबले 0.73 प्रतिशत चढ़कर 76,905.51 अंक हो गया।

इसी तरह निफ्टी भी 22 अंक फिसलकर 23,168.25 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 23,132.80 अंक के निचले जबकि 23,402.70 अंक के उच्चतम स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 23,190.65 अंक की तुलना में 0.69 प्रतिशत मजबूत होकर 23,350.40 अंक पर बंद हुआ।

इस दौरान मुनाफा कमाने वाली कंपनियों में एनटीपीसी 2.78, बजाज फाइनेंस 2.75, कोटक बैंक 2.41, एक्सिस बैंक 2.13, एलटी 2.03, नेस्ले इंडिया 2.03, सन फार्मा 1.93, टाटा मोटर्स 1.84, आईसीआईसीआई बैंक 1.52, पावरग्रिड 1.41, जोमैटो 1.36, भारती एयरटेल 1.25, अडानी पोर्ट्स 0.98 प्रतिशत शामिल रही।

इनके अलावा रिलायंस 0.62, एशियन पेंट 0.58, आईटीसी 0.52, एसबीआई 0.51, टीसीएस 0.47, एचसीएल टेक 0.44, अल्ट्रासिम्को 0.42, हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.34, इंडसइंड बैंक 0.29, एचडीएफसी बैंक 0.14, टेक महिंद्रा 0.06 और मारुति के शेयर 0.03 प्रतिशत लाभ में रहे।

इंडसइंड बैंक ने विसंगतियों की जांच के लिए स्वतंत्र फर्म को किया नियुक्त

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। इंडसइंड बैंक ने अपने डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में विसंगतियों की जांच के लिए एक स्वतंत्र पेशेवर फर्म को नियुक्त किया है। पिछले सप्ताह बैंक ने जानकारी दी थी कि उसने अपने डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में विसंगतियों की पहचान की है, जिसका दिसंबर 2024 तक उसके नेटवर्थ पर लगभग 2.35 प्रतिशत प्रभाव पड़ सकता है। स्टॉक एक्सचेंजों को दिए गए एक नए बयान में बैंक ने कहा कि स्वतंत्र फर्म हाल ही में पेश की गई लेखांकन विसंगतियों के मूल कारण की पहचान करने के लिए एक बड़े स्तर पर जांच करेगी। फर्म अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स को लेकर डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट के अकाउंटिंग ट्रीटमेंट के सही या गलत होने और इसके प्रभाव का आकलन करेगी। स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा गया कि 10 मार्च 2025 को बैंक ने अपने डेरिवेटिव पोर्टफोलियो से जुड़े अकाउंट बैलेंस को लेकर बैंक द्वारा पहचानी गई कुछ विसंगतियों की एक बाहरी एजेंसी द्वारा चल रही समीक्षा की जानकारी दी थी।

बैंक ने कहा था कि एक बार रिव्यू पूरा हो जाने पर यह अपने फाइनेंशियल स्टेटमेंट पर पड़ने वाले किसी भी परिणामी प्रभाव की जानकारी खुद ही देगा। इसके अलावा, निदेशक मंडल ने अपनी बैठक में एक स्वतंत्र पेशेवर फर्म को नियुक्त करने का फैसला किया था।

खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख व अन्य जिंसों के भाव रहे स्थिर

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों की गिरावट के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में अप्रैल का पाम ऑयल वायदा 18 रिंगिट फिसलकर 4651 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। इसी तरह अप्रैल का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.20 सेंट की गिरावट के साथ 42.52 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सूरजमुखी तेल 365 और सोया रिफाइंड 330 रुपये प्रति क्विंटल गिर गया जबकि पाम ऑयल में 366 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी रही। वहीं, सरसों तेल, मूंगफली तेल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में टिकाव रहा। चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल के भाव पिछले दिवस के स्तर पर स्थिर रहे।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे : **दाल-दलहन** : चना 5550-5650, दाल चना 6550-6650, मसूर काली 7400-7500, मूंग दाल 9400-9500, उड़द दाल 8800-8900, अरहर दाल 8300-8400 रुपए प्रति क्विंटल रहे। **अनाज :** (रुपए प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 3100-3200 रुपए और **चावल :** 3150-3250 रुपए प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : चीनी एस 4280-4380, चीनी एम. 4400-4500, मिल डिलीवरी 3620-3720 और गुड़ 4250-4350 रुपए प्रति क्विंटल बोले गए।

दुनिया के शीर्ष कपड़ा निर्यातकों में भारत शामिल

नई दिल्ली, 21 मार्च (एजेंसियां)। भारत दुनिया के शीर्ष कपड़ा निर्यातक देशों में से एक है और देश की वैश्विक कपड़ा और परिधान निर्यात में लगभग 4 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। यह जानकारी शुक्रवार को संसद में सरकार ने दी।

कपड़ा राज्य मंत्री पबित्रा मार्गेरिटा ने कहा कि हस्तशिल्प सहित कपड़ा और परिधान का निर्यात अप्रैल-दिसंबर 2024 में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 7 प्रतिशत बढ़ा है। साथ ही कहा कि अमेरिका, यूरोपीय संघ और यूके की वित्त वर्ष 2023-24 के कुल निर्यात में हिस्सेदारी 53 प्रतिशत थी।

सरकार भारतीय वस्त्र उद्योग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन कर रही है। प्रमुख पहलों में आधुनिक, एकीकृत, विश्व स्तरीय कपड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाने के लिए पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन्स और ऐपेरल (पीएम मित्र) पार्क स्कीम; बड़े पैमाने पर विनिर्माण और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए एमएमएफ फैब्रिक, एमएमएफ ऐपेरल और टेक्नोलॉजी टेक्सटाइल पर ध्यान केंद्रित करने वाली प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना, अनुसंधान नवाचार और विकास, संवर्धन और बाजार विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाला नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल्स मिशन और अन्य योजनाएं शामिल हैं।

■ वैश्विक बाजार में 4 प्रतिशत हुआ मार्केट शेयर
■ देश में नेचुरल फाइबर के कच्चे माल का बड़ा आधार

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि देश के पास नेचुरल फाइबर के कच्चे माल का एक बड़ा आधार है, जिसमें कपास, रेशम, ऊन और जूट के साथ-साथ मानव निर्मित फाइबर भी शामिल हैं। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि देश में कपास की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने और कपास की खेती में किसानों की निरंतर रुचि बनाए रखने के उद्देश्य से भारत सरकार हर साल कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित करती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि बाजार में कपास की कीमतें एमएसपी दरों से नीचे गिरने की स्थिति में किसानों को उनकी उपज का उचित लाभकारी मूल्य मिले और प्रतिस्पर्धी कीमतों पर कपास की उपलब्धता हो। केंद्रीय मंत्री के मुताबिक, एक्स्ट्रा-लॉन्ग स्टेपल (ईएलएस) कॉटन पर सीमा शुल्क 20 फरवरी, 2024 से घटाकर शून्य कर दिया गया है। भारत-ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए के तहत 51,000 टन शुल्क मुक्त ईएलएस कॉटन का आयात किया जा सकता है। साथ ही कहा कि अपनी निर्यात क्षमता को बढ़ाने के लिए भारत ने अब तक 14 मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

शिवसेना का आरोप बैतूल में शराब की हो रही अवैध सप्लाई

बैतूल, देशबन्धु। जिले में शराब माफिया खुलेआम आबकारी नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। शिवसेना जिला अध्यक्ष विजेंद्र गोले ने बड़ा खुलासा करते हुए बताया कि बैतूल फोर लाइन की शराब दुकान से सफेद बोलेरो वाहन के जरिए गली-गली, ढाबों और गांव-गांव में शराब की सप्लाई की जा रही है। इसका सीधा असर युवाओं पर पड़ रहा है और उन्हें नशे का आदी बनाया जा रहा है।

गोले ने बताया आबकारी नियमों के मुताबिक, शराब केवल अधिकृत दुकान से बेची जानी चाहिए, लेकिन यहां शराब ठेकेदार अवैध रूप से अन्य स्थानों पर भी बिक्री कर रहे हैं और मोटा मुनाफा कमा रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि बैतूल बाजार थाना इस पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं कर रहा? उन्होंने बताया कि इससे पहले खंडारा में भी सरकारी स्कूल के पास शराब दुकान संचालित हो रही थी। आबकारी विभाग ने एक बार केस बनाया, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की, नतीजा यह है कि वहां अब भी दुकान चल रही है। इसके अलावा, खंडारा, गंज वाइन शॉप के पास, कोठी बाजार, सदर, कमानी गेट, इटारसी रोड समेत कई जगहों पर अवैध अहाते चल रहे हैं, जो पूरी तरह से नियमों के खिलाफ हैं। शिवसेना ने ऐलान किया है कि 1 अप्रैल के बाद पूरे बैतूल जिले में शराब के खिलाफ बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

पंचायत इंस्पेक्टर के बिना जनपद पंचायत चिचोली बेहाल

बैतूल, देशबन्धु। जनपद पंचायत चिचोली में पंचायत इंस्पेक्टर की नियुक्ति को लेकर आवेदक दिनेश यादव ने कलेक्टर से गुहार लगाई गई है। उन्होंने बताया वर्तमान प्रभारी पंचायत इंस्पेक्टर रमेश माकोडे गंभीर रूप से बीमार हैं, जिसके चलते वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पा रहे हैं। बताया जा रहा है कि उनकी स्थिति इतनी गंभीर है कि वह न तो बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं और न ही चलने-फिरने में सक्षम हैं। इस कारण सरकारी कामकाज पूरी तरह से प्रभावित हो गया है। आम लोग शिकायतों के निराकरण के लिए जनपद पंचायत के दफ्तर के चक्कर काटते रहते हैं, लेकिन बिना किसी समाधान के लौटने को मजबूर हैं। सीएम हेल्पलाइन पर आई शिकायतों का भी निराकरण नहीं हो पा रहा है, जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। दिनेश यादव ने इस संबंध में कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर नए पंचायत इंस्पेक्टर की नियुक्ति की मांग की है। उनका कहना है कि पिछले तीन वर्षों से इसी तरह लापरवाही चल रही है और अब स्थिति और भी गंभीर हो गई है।

गायत्री परिवार आज मनाएगा विश्व जल दिवस

बैतूल, देशबन्धु। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज, हरिद्वार के मार्गदर्शन में शनिवार को विश्व जल दिवस मनाया जाएगा। गायत्री परिवार के जिला समन्वयक डॉ. कैलाश वर्मा, जिला सह-समन्वयक रविशंकर पारखे और जिला पर्यावरण प्रभारी अमोल पानकर ने बताया कि इस अवसर पर जल संरक्षण एवं संवर्धन, जल स्त्रोतों की सफाई तथा जल संरक्षण पर परिचर्चा का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान जल है तो कल है का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। कार्यक्रम के तहत आमला तहसील की हसलपुर पहाड़ी पर सुबह 8 से 10 बजे तक एक कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इस दौरान जल संरक्षण के महत्व पर चर्चा की जाएगी और लोगों को जल संसाधनों के संरक्षण हेतु प्रेरित किया जाएगा। जिले के युवा मंडलों, प्रज्ञा मंडलों और सभी गायत्री परिवार परिजनों से इस दिवस को मनाने का अनुरोध किया गया है।

23 मार्च से कामथ में होगी श्रीमद् भागवत कथा

बैतूल, देशबन्धु। मुलताई के ग्राम कामथ में 23 मार्च से श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन होने जा रहा है। यह कथा पं. संतोष मनोहरलाल शर्मा (जगदीश मंदिर, मुलताई) के मुखारबिंद से संपन्न होगी। आयोजन की शुरुआत 23 मार्च को सुबह 9 बजे कलश यात्रा से होगी, कथा प्रवचन प्रतिदिन दोपहर 1 से 5 बजे तक होंगे। यह आयोजन पुराना नागपुर रोड, कामथ (मुलताई) में होगा। आयोजन सरस्वतीबाई स्व.ईटूजी साहू भोयरे के तत्वावधान में किया जा रहा है। विनीत में लीलाधर साहू, महेश साहू, चेतन साहू, भूषण साहू, राजा साहू, गुंजन साहू, तेजल साहू, मयूरेश साहू, वरूणेश साहू, कमलेश साहू (पूर्व सैनिक) एवं समस्त साहू भोयरे परिवार शामिल हैं। श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होगा और भक्ति रस की गंगा बहेगी।

सर्व ब्राह्मण समाज का होली मिलन 23 को

बैतूल, देशबन्धु। सर्व ब्राह्मण समाज का होली मिलन समारोह 23 मार्च रविवार को शुक्ला चौक बैतूल बाजार स्थित राम मंदिर में आयोजित किया जा रहा है। होली मिलन समारोह शाम 4 बजे से होगा। सर्व ब्राह्मण समाज के पदाधिकारियों ने जिलेभर से विप्र बंधुओं से होली मिलन में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

डिवाइडर पर पहिया चढने के कारण पलटी बस

चिचोली, देशबन्धु। बैतूल- इंदौर नेशनल हाईवे पर शुक्रवार सुबह एक सड़क हादसा हो गया यहां चिचोली के समीप गोण्डू मं?ई के पास एक निजी बस पलट गई यह बस पीथमपुर इंदौर से आठनेर के लिए आ रही थी शुक्रवार सुबह लगभग 5 बजे घटना है हालांकि घटना में किसी यात्री को चोट आने की बात सामने नहीं आई है प्राप्त जानकारी के अनुसार निजी बस क्रमांक एमपी 09 पी ए -1260 पीथमपुर इंदौर से बैतूल आते के लिए आ रही थी इसी बीच चिचोली क्षेत्र के मंडई जोड़ पर बस का पहिया डिवाइडर पर चढ़ गया इससे बस पलट गई सूचना मिलते ही स्थानीय लोग एकत्रित हो गए और बस से सकुशल यात्रियों को निकाल हालांकि बस में लगेज होने के कारण सामान का नुकसान जरुर हुआ है ।

आदिवासी कांग्रेस ने मंडला में एनकाउंटर के खिलाफ कांग्रेस ने निकाली रैली, किया प्रदर्शन

सरकार नक्सलियों के नाम पर आदिवासियों की हत्याएं बंद करे-रामू

बैतूल, देशबन्धु। मध्यप्रदेश के मंडला जिले में हुए एनकाउंटर के विरोध में बैतूल जिला आदिवासी कांग्रेस ने शुक्रवार को जोरदार प्रदर्शन किया।

कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सुबह 11:30 बजे रानी दुर्गावती प्रतिमा से जिला कलेक्टर कार्यालय तक रैली निकाली और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। यह विरोध प्रदर्शन मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी, ऑल इंडिया आदिवासी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विक्रांत भूरिया और प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम के निर्देश पर किया गया। आदिवासी कांग्रेस ने फर्जी एनकाउंटर का आरोप लगाते हुए मांग की कि हिरण सिंह बेगा की हत्या की निष्पक्ष जांच हो और दोषियों को सख्त सजा मिले।

कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने कहा कि हिरण सिंह बेगा का फर्जी एनकाउंटर सरकार की आदिवासी विरोधी मानसिकता को दिखाता है। निर्दोष आदिवासियों को नक्सली बताकर मारा जा रहा है, जो पूरी तरह अन्याय है। आदिवासी कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम ने कहा कि भाजपा सरकार निर्दोष आदिवासियों की हत्या कर रही है। उन्होंने कहा कि इस घटना में गरीब मजदूर को नक्सली बताकर मार दिया गया, जिससे उसके बच्चे अनाथ हो गए और परिवार के

सामने जीवन यापन की समस्या खड़ी हो गई। टेकाम ने मांग की कि पीड़ित परिवार को 2 करोड़ रुपये का मुआवजा दिया जाए, एक सदस्य को सरकारी नौकरी मिले और सरकार नक्सलियों के नाम पर आदिवासियों की हत्याएं बंद करे। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आदिवासियों पर हो रहे अत्याचारों पर रोक नहीं लगी तो पूरे प्रदेश में बड़ा आंदोलन खड़ा किया जाएगा।

आदिवासी कांग्रेस ने ज्ञापन में आरोप लगाया कि भाजपा सरकार के शासन में आदिवासियों पर अत्याचार लगातार बढ़ रहे हैं। पहले नेमावर कांड, सीधी पेशाब कांड, सिवनी हत्या कांड, महू में बलात्कार और हत्या, विदिशा के लटेरी में वन रक्षकों द्वारा चैन सिंह की गोली मारकर हत्या, गुना में रामप्यारी बाई को जिंदा जलाना और नीमच में कन्हैयालाल भील को पिकअप से घसीटकर मारने जैसी घटनाएं हुई हैं। अब मंडला में निर्दोष हिरण सिंह बेगा को मार दिया गया। आदिवासी कांग्रेस ने इस हत्याकांड की निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए राष्ट्रपति से अपील की है कि हाईकोर्ट के जज की निगरानी में पांच सदस्यीय जांच समिति गठित की जाए, जिसमें एक आदिवासी जज और आदिवासी पक्ष-विपक्ष के विधायक शामिल हों। इसके अलावा, थाना प्रभारी, पुलिस अधीक्षक और हॉक फोर्स के अधिकारी को तत्काल निलंबित करने की मांग की गई है।

ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि पीड़ित परिवार को सरकार दो करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता दे, एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का पूरा खर्च उठाया जाए। साथ ही, नक्सलवाद के नाम पर निर्दोष आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार को बंद करने और जल-जंगल-जमीन से बेदखल करने की प्रक्रिया पर रोक लगाने की भी मांग की गई है। विरोध प्रदर्शन एवं ज्ञापन सौंपने वालों में कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, आदिवासी कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, जिला अध्यक्ष डॉ. रमेश काकोड़िया, अरुण गोठी, प्रदेश सचिव समीर खान, रमेश गायकवाड़, राजा सोनी, राजू गावंडे, मिथलेश राजपूत, पंकज तुमड़ाम, विशाल परते, मंगेश सरियाम, पंजाब आहके, धन्नू उईके, गोविंद कवड़े, कमलेश उईके, रमेश भलावी, कैलाश परते, सेंटी वाघमारे, गणेश पांसे, करण वटके, छोटेलाल बारस्कर, लवकेश भलावी, रामकिशोर अखंडे, दुर्गेश आर्य, आरती बारस्कर, राधिका बारस्कर, नीलू भूशुमकर, शेखर कुमरे, सरपंच पचांग अमित कुमरे, सरपंच पाढर, संजू वट्टी, बाबा होटल, मनोहरी उईके, रामकिशोर नवडे, चिल्लू वट्टी, राजू धुर्वे, संजू वाडीवा, जनपद सदस्य कमलेश काकोड़िया, रघुनन्दन उईके, पिन्टू वरकड़े, धनराज इवने और सरपंच ढप्पा शामिल थे।

पिछड़ा वर्ग, एससी-एसटी संगठन आज रैली निकालेंगे

प्रदर्शन और ज्ञापन के बाद 9 अप्रैल को जेल भरो आंदोलन की चेतावनी

बैतूल, देशबन्धु। बुद्धिस्ट इंटरनेशनल नेटवर्क, भारत मुक्ति मोर्चा और राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग मोर्चा के तत्वाधान में आज शनिवार को बैतूल जिला मुख्यालय पर एक विशाल रैली और प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। यह रैली देशभर में चल रहे चरणबद्ध आंदोलन के तीसरे चरण का हिस्सा है, जिसमें भारत के 31 राज्यों और 567 जिलों में एक साथ प्रदर्शन हो रहा है।

रैली शाम 5 बजे डॉ. आंबेडकर चौक हॉस्पिटल के पास से शुरू होगी और कोठी बाजार, शिवाजी चौक, गंज बाजार होते हुए वापस डॉ. आंबेडकर चौक पर समाप्त होगी। इस दौरान विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और समाज के लोग अपनी मांगों को लेकर आवाज बुलंद करेंगे। रैली के प्रमुख मुद्दों में महाबोधि महाविहार से ब्राह्मणों का कब्जा हटाने, 1949 के टेंपल एक्ट को रद्द करने, ओबीसी की जातिगत जनगणना करने, ईवीएम हटाकर बैलेट पेपर से चुनाव कराने, किसानों को फसल का उचित मूल्य दिलाने, बेरोजगारों को रोजगार देने और जब तक रोजगार नहीं मिलता तब तक बेरोजगारी भत्ता देने की मांग शामिल है। इसके अलावा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार रोकने, आदिवासियों को जल-जंगल-जमीन से उजाड़ने पर रोक लगाने और नई शिक्षा नीति 2020 को रद्द करने की मांग भी प्रमुख है। रैली के समापन के बाद राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा जाएगा। संगठनों ने साफ कहा है कि यदि सरकार इन मांगों को तुरंत नहीं मानती है तो 9 अप्रैल 2025 को पूरे देश में जेल भरो आंदोलन किया जाएगा।आयोजकों ने एससी, एसटी, ओबीसी और माइनॉरिटी समाज के सभी लोगों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में शाम 5 बजे डॉ. आंबेडकर चौक पर पहुंचकर इस आंदोलन का हिस्सा बनें और अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं।

भ्रष्टाचार के आरोप में घिरे बीट गार्ड के खिलाफ डीएफओ से की शिकायत

बैतूल, देशबन्धु। आठनेर तहसील के ग्राम हिरादेही में चौपाल निर्माण को लेकर बीट गार्ड रवीश कंगाले पर ग्रामीणों ने गाली-गलौच और भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि चौपाल निर्माण कार्य में अनियमितता बरती जा रही है और जब उन्होंने इस पर आपत्ति जताई, तो बीट गार्ड ने उनके साथ गाली-गलौच की। डीएफओ से शिकायत कर ग्रामीणों ने मामले की निष्पक्ष जांच कर रवीश कंगाले को तत्काल हटाने की मांग की है।

ग्रामीणों का कहना है कि चौपाल का निर्माण कार्य वन समिति के माध्यम से किया जा रहा है। जब ग्रामीणों ने निर्माण कार्य में गुणवत्ता की कमी को लेकर सवाल उठाए, तो बीट गार्ड रवीश कंगाले ने उनके साथ अभद्र भाषा में बात की और गाली-गलौच की। इसके पहले भी ग्रामीणों ने वन समिति के पैसे के दुरुपयोग की शिकायत की थी। उनका आरोप है कि ऐसे लोगों के खातों में पैसे डाले गए, जिन्होंने निर्माण कार्य में कोई भूमिका नहीं निभाई। जब इस अनियमितता का विरोध किया गया, तब भी बीट गार्ड ने ग्रामीणों को अपमानित किया।

ग्रामीणों का कहना है कि चौपाल निर्माण में कच्ची ईंटों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। जब ग्रामीणों ने इसका विरोध किया, तो भी उनकी बात को अनसुना कर दिया गया। रेंजर को भी इस संबंध में शिकायत की गई थी, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। वर्तमान में चौपाल के लेंटर का कार्य बाकी है। ग्रामीणों ने मांग की है कि लेंटर में सफेद रेत का उपयोग किया जाए, न कि काली रेत का।

चिचोली में स्वच्छ भारत मिशन के तहत किया फर्जी भुगतान, 12 के खिलाफ एफआईआर

दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर कांग्रेस करेगी आंदोलन

बैतूल, देशबन्धु। चिचोली में स्वच्छ भारत मिशन के तहत 13 करोड़ रुपये के फर्जी भुगतान का मामला सामने आया है, जिसमें ब्लॉक कोऑर्डिनेटर और अन्य अधिकारियों ने बिना कोई काम किए सरकारी धन का दुरुपयोग किया। इस घोटाले में 12 लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई है।

कांग्रेस नेता और छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष हर्ष भुसारी ने इस मामले को लेकर बीजेपी सरकार पर निशाना साधा और कहा कि यदि दोषियों के खिलाफ जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो कांग्रेस बड़ा आंदोलन करेगी। हर्ष भुसारी ने कहा कि बीजेपी सरकार में भ्रष्टाचार चरम पर है और गरीबों के हक का पैसा अफसरों और दलालों की जेब में चला गया। हर्ष भुसारी ने मामले में सीबीआई जांच की मांग की है और कहा कि दोषियों की गिरफ्तारी कर उनकी अवैध संपत्ति जब्त की जाए। उन्होंने सरकार को 7 दिनों का अल्टीमेटम देते हुए कहा कि यदि भ्रष्ट अधिकारियों और दलालों पर कार्रवाई नहीं हुई तो कांग्रेस जनता के साथ मिलकर सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करेगी। हर्ष भुसारी ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के सभी कार्यों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए ताकि यह पता चले कि किन-किन लोगों ने इस घोटाले को अंजाम दिया। उन्होंने सरकार से मांग की कि दोषियों को सख्त से सख्त सजा दी जाए ताकि भविष्य में इस तरह की लूट न हो।

कांग्रेस ने दोषियों की संपत्ति कुर्क करने की मांग की

ब्लॉक कांग्रेस कमेटी ग्रामीण चिचोली के ब्लॉक अध्यक्ष नेकराम यादव और आदिवासी कांग्रेस जिला अध्यक्ष डॉ. रमेश काकोडिया के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं ने शुक्रवार को कलेक्टर कार्यालय बैतूल पहुंचकर डिप्टी कलेक्टर तृप्ति पटेरिया और जिला पंचायत सीईओ को ज्ञापन सौंपा। कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि जनपद पंचायत चिचोली और भीमपुर में स्वच्छ भारत मिशन के तहत 13 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है। डॉ. रमेश काकोडिया ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार हुआ है, जिसमें मुख्य आरोपी ब्लॉक कॉर्डिनेटर राजेन्द्र परिहार और उनके सहयोगियों द्वारा मिलीभगत कर करोड़ों रुपये का गबन किया गया है। उन्होंने कहा कि यदि इस मामले की उच्च स्तरीय जांच करवाई जाए तो और भी बड़े घोटाले का खुलासा हो सकता है और अन्य लोगों के नाम भी सामने आ सकते हैं। कांग्रेस नेताओं ने ज्ञापन में मांग की कि शासन को करोड़ों रुपये का नुकसान पहुंचाने वाले सभी दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि सभी आरोपियों की चल-अचल संपत्ति कुर्क की जाए और भ्रष्टाचार में लिप्त शासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों को तत्काल सेवा से बर्खास्त किया जाए।

लखनऊ ने 3 विकेट से बैतूल प्रशासन को किया परास्त

बैतूल, देशबन्धु। लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम, कोठी बाजार में चल रहे अखिल भारतीय लेदर बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट राजीव कप में आज समृद्धि क्रिकेट क्लब लखनऊ और बैतूल प्रशासन के बीच रोमांचक मुकाबला खेला गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अधिवक्ता संजय चौरसे, स्पेंसर लाल, तरंग मैरिज लॉन के संचालक प्रदीप वर्मा, राजेश वर्मा, अमन त्रिवेदी और रानू हजारे उपस्थित रहे।

बैतूल प्रशासन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया लेकिन पूरी टीम 202 रन पर सिमट गई। टीम की ओर से दीपक शर्मा ने 71 रन, रुद्र ने 39 रन और आयुष ने 32 रन बनाए। लखनऊ के कप्तान रमन ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट लिए, जबकि मोहित और आदित्य ने 2-2 विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी समृद्धि क्रिकेट क्लब लखनऊ ने आकाश रावत की बेहतरीन बल्लेबाजी के दम पर 3 विकेट से जीत दर्ज की। आकाश रावत ने 78 रनों की शानदार पारी खेली, जबकि कप्तान रमन ने 27 और सचिन ने 23 रन बनाए। बैतूल प्रशासन की ओर से दीपक शर्मा और शिवम

कुमार ने 2-2 विकेट लिए लेकिन वे अपनी टीम को जीत नहीं दिला सके। मैच में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए आकाश रावत को मैन ऑफ द मैच के खिताब से नवाजा गया। उन्हें पंडित महेंद्र कुमार दीक्षित, आराध्या दीक्षित और अमायरा मंद्रे द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अलावा, पंडित महेंद्र कुमार दीक्षित ने उन्हें 500 रुपए का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया। इस टूर्नामेंट में अब प्रयागराज की टीम की एंट्री हो चुकी है। 22 मार्च को प्रयागराज और दिल्ली की टीम आमने-सामने होंगी, जिससे दर्शकों को एक और रोमांचक मैच देखने को मिलेगा।

सिंचाई पंप की बिजली सप्लाई दिन में बंद रखने की मांग

बैतूल, देशबन्धु। जिले के किसानों की समस्याओं को लेकर जिला किसान कांग्रेस के जिला अध्यक्ष रमेश गायकवाड़ ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में ट्यूबवेल खनन पर लगाए गए प्रतिबंध को हटाने और सिंचाई पंप की बिजली सप्लाई दिन में 12 से 6 बजे तक बंद रखने की मांग की गई।

रमेश गायकवाड़ ने बताया कि किसानों को पानी की सख्त जरूरत है, ऐसे में ट्यूबवेल खनन पर अभी रोक नहीं लगाई जानी चाहिए। जिले में किसान इस समय गन्ना, मक्का और मूंग की फसलें लगा चुके हैं, वहीं गेहूं की कटाई का काम भी जारी है। इस भीषण गर्मी में शॉर्ट सर्किट के कारण खेतों में आग लगने की घटनाएं बढ़ गई हैं, जिससे किसानों को नुकसान उठाना पड़ रहा है। उन्होंने मांग की कि दोपहर 12 से शाम 6 बजे तक सिंचाई पंप की बिजली सप्लाई बंद कर दी जाए और बाकी समय में बिजली दी जाए ताकि आगजनी की घटनाओं को रोका जा सके। ज्ञापन सौंपने के दौरान जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, नोमेश शाह, नेकराम यादव, अरुण गोठी और अशोक सहित कई कांग्रेस पदाधिकारी मौजूद रहे। किसान कांग्रेस ने प्रशासन से इस मांग को जल्द मानने की अपील की, ताकि किसानों को राहत मिल सके।

पिता के जन्मदिन पर भलाई की सप्लाई से जुड़े डॉ सोनी

ऑटो एम्बुलेंस योजना के लिए दी आर्थिक मदद

बैतूल, देशबन्धु। सडक हादसों में घायलों को तत्काल हास्पीटल पहुंचाने वाले जिले के ऑटो चालक पूरे देश के लिए मिसाल बन गए है। बैतूल में वर्ष 2016 से बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति द्वारा ऑटो एम्बुलेंस योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना से बैतूल, आमला और मुलताई के सैकड़ों ऑटो चालक जुड़े है जिन्होंने अब तक 1300 से अधिक घायलों एवं 35 शवों का परिवहन किया है। सडक हादसों में तत्परता से जीवन बचाने वाली इस योजना से प्रभावित होकर जिले के प्रसिध्द हृदयरोग विशेषज्ञ एवं सीम्स हास्पीटल के संचालक डॉ श्याम सोनी ने अपने पिता प्रेमचंद सोनी के जन्मदिन पर योजना के सतत संचालन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया। जन्मदिन के अवसर पर ऑटो एंबुलेंस चालक नीलेश चौधरी, महेश ठाकुर, सन्नी वर्मा, जावेद खान को प्रेमचंद सोनी, डॉ श्याम सोनी एवं परिवार द्वारा प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई। श्री सोनी ने ऑटो चालकों की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें बेहद खुशी है कि वे अपने जन्मदिन पर जीवन रक्षकों को प्रोत्साहित कर रहे है। गौरतलब है कि सीम्स हॉस्पिटल में आयुष्मान योजना के अंतर्गत भी उपचार किया जाता है।

बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति की अध्यक्ष गौरी बालापुरे पदम ने बताया कि डॉ श्याम सोनी ने जब उनसे ऑटो एम्बुलेंस योजना से जुड?र सहयोग करने की मंशा जाहिर की तो उन्होंने किसी अच्छे दिन पर इस सेवा से जुडने का आग्रह किया। आज उनके पिता प्रेमचंद सोनी का 71वां जन्मदिन है। इस शुभ अवसर पर डॉ सोनी ने मां सावित्री सोनी एवं परिवार की मौजूदगी में ऑटो एम्बुलेंस योजना के लिए 5100 रुपए की राशि भेंट की।

डॉ सोनी का कहना है कि एक समय था जब किसी तरह की दुर्घटना होने पर लोग

घायलों को हाथ लगाने से भी डरते थे, लेकिन बैतूल जैसे शहर में ऑटो चालकों द्वारा निडर होकर तत्परता से घायलों की मदद की जाती है। वह लम्बे समय से ऑटो एम्बुलेंस चालकों के इस सेवा कार्य को देख रहे है। एक डॉक्टर होने के नाते उन्हें पता है कि किसी भी हादसे में घायल व्यक्ति के लिए गोल्डर अवर महत्वपूर्ण होता है, सही समय में उपचार मिलने से गंभीर घायलों को भी समय रहते बचाया जा सकता है। ऑटो एम्बुलेंस चालकों की वजह से सैकड़ों लोगों को दुर्घटना के बाद तत्परता से उपचार मिला और उनकी जिदंगी बची है। वे इस सेवा से प्रभावित होकर उन्होंने भलाई की सप्लाई से जुडने का निर्णय लिया। बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति ने डॉक्टर सोनी एवं सीम्स हॉस्पिटल बैतूल का आभार माना है।

पुरानी रंजिश में युवक को बेरहमी से पीटा, याददाश्त खोने का खतरा

सारणी,देशबन्धु। पाथाखेड़ा में मुकेश केवट के साथ पुरानी बात को लेकर 6 से 7 युवाओं ने मारपीट कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया था। इस हमले में मुकेश को गंभीर चोटें आई हैं और उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। पाथाखेड़ा पुलिस द्वारा घायल युवक को घोड़ाडोंगरी समुदाय स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से उसे तत्काल जिला अस्पताल रेफर किया गया। लेकिन स्थिति गंभीर होने पर जिला चिकित्सालय ने भी मुकेश को भोपाल रेफर कर दिया।

जानकारी के अनुसार बताया जा रहा है कि घायल मुकेश केवट बार-बार बेहोश होकर याददाश्त खो रहा है। उसके सर में गंभीर चोट आने से नस में खून जमा होना बताया जा रहा है। जिसका सीटी स्कैन भी करवाया

गया। गुरुवार करीब 12 बजे उसे जिला अस्पताल से एंबुलेंस के जरिए भोपाल भिजवाया गया।

इधर पीड़ित पक्ष का आरोप है कि वीडियो में दिख रहें कुछ अन्य मारपीट करने वाले युवाओं पर पुलिस द्वारा मामला दर्ज नहीं किया गया है। जिसको लेकर पीड़ित पक्ष वरिष्ठ अधिकारियों से शिकायत करेगा। पुलिस ने मामले में आरोपी अनित सिंदुर, आदित्य सोनी व अन्य चार नाबालिगों पर स्टैम्प, डण्डे आदि वस्तुओं से मारपीट करने पर मुकेश केवट की शिकायत पर आरोपियों के विरुध्द बलवा, अडीबाजी, मारपीट की धारा में प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया है।

इनका कहना है

किरण देशमुख द्वारा शिकायत की गई है, शिकायत की जांच चौकी प्रभारी द्वारा कर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

- जयपाल इनवाती
थाना प्रभारी सारनी

जामवंत की नाराजगी के बाद पात्र उम्मीदवारों को मिलेगा हक, आंगनवाड़ी में हुई नियुक्ति

बैतूल, देशबन्धु। आंगनवाड़ी भर्ती 2023 में सामने आए फर्जीवाड़े और प्रशासनिक लापरवाही के खिलाफ जयस प्रदेश संयोजक जामवंत सिंह कुमरे के नेतृत्व में लगातार आंदोलन और ज्ञापन के बाद आखिरकार पात्र उम्मीदवार को न्याय मिल पाया है। भीमपुर परियोजना के भारगढ़ (बेहड़ा) आंगनवाड़ी केंद्र में श्रीमती संगीता बिरजलाल की नियुक्ति कर दी गई है।

जयस प्रदेश संयोजक जामवंत सिंह कुमरे के नेतृत्व में निरंतर मुद्दा उठाए जाने के बाद आखिरकार प्रशासन को निर्णय लेना पड़ा। जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी ने आदेश में बताया कि निराकरण करने के पश्चात भारगढ़ (बेहड़ा) आंगनवाड़ी केंद्र में संगीता बिरजलाल की नियुक्ति कर दी गई है। साथ ही आंगनवाड़ी केन्द्र बाटलाकला, गुराडिया 1, भारगढ़ (बेहड़ा) और निशाना में आवेदिकाओं के बीपीएल राशन कार्ड की सत्यता की जाँच कर अंतिम चयन सूची जारी कर दी गई है।

जिला पंचायत सीईओ ने आश्वासन दिया है था कि एक सप्ताह के भीतर वेटिंग लिस्ट में शामिल पात्र उम्मीदवारों की नियुक्ति प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। जयस ने पहले ही साफ कर दिया था कि यदि पात्र उम्मीदवारों को उनका हक नहीं मिला तो संगठन बड़े आंदोलन की राह पर जाएगा। जयस ने अधिकारियों पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा था कि जब जांच में फर्जी दस्तावेजों के जरिए भर्ती का खुलासा हो चुका था, तो भी पात्र उम्मीदवारों को

नियुक्ति देने में प्रशासन ने महीनों तक देरी की। अभी भी स्क्रूटनी के अधिकारियों पर कार्यवाही ना होना सवालों के घेरे में है, क्योंकि स्क्रूटनी अधिकारियो की जवाबदेही थी कि इस प्रकार की गलतियों से बचा जा सकें, विज्ञप्ति में स्पष्ट निर्देश थे कि बीपीएल कार्ड उन्ही का मान्य किया जावेगा जिनका बीपीएल कार्ड विज्ञप्ति से 2 वर्ष पुराना हो, फिर अधिकारियों से इतनी ब?ी चूक कैसे हो गयी प्रश्नचिन्ह ख?ा करता है?

जांच में खुली पोल - आंगनवाड़ी भर्ती प्रक्रिया 2023 के तहत 24 जुलाई से 31 अगस्त 2023 तक आवेदन मंगाए गए थे। भीमपुर परियोजना ने 26 जुलाई 2024 को अंतिम सूची जारी कर दी। इसके बाद दावे-आपत्ति के लिए 5 अगस्त 2024 तक का समय दिया गया। संगीता बिरजलाल ने 1 अगस्त 2024 को अपनी आपत्ति दर्ज करवाई थी, जिसमें उन्होंने चयनित उम्मीदवार अनिता पति रितेश के बीपीएल कार्ड को फर्जी बताया। 28 अक्टूबर 2024 को मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत बैतूल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय दावा-आपत्ति निराकरण समिति की बैठक हुई। जांच में पाया गया कि अनिता पति रितेश का बीपीएल कार्ड फर्जी था। इसके बाद भी प्रशासनिक उदासीनता के कारण नियुक्ति प्रक्रिया में देरी हुई। 18 दिसंबर 2024 को तहसीलदार भीमपुर ने ग्राम भारगढ़ बेहड़ा में ग्रामीणों की उपस्थिति में जांच करवाई। ग्रामीणों ने भी पुष्टि की कि अनिता पति रितेश का बीपीएल कार्ड फर्जी है। तहसीलदार ने 7 जनवरी 2025 को अपनी रिपोर्ट जिला परियोजना अधिकारी को भेज दी। इसके बावजूद प्रशासन ने तत्काल कार्रवाई करने की बजाय फाइल दबा दी।

लोकसभा में सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने अनुदान मांगों पर दिया संबोधन, बोले-

केंद्र सरकार का कृषि बजट अन्नदाता की समृद्धि का रोडमैप

महात्मा गांधी और अंबेडकर की भावना भी निहित

नई दिल्ली/भोपाल, देशबन्धु। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने शुक्रवार को लोकसभा में कृषि अनुदान मांगों पर अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्रीय बजट में कृषि क्षेत्र के लिए जो बजट आवंटन किया गया है, वह अन्नदाता की समृद्धि का रोडमैप है। इसमें एक तरफ जहां महात्मा गांधी की ग्राम विकास की भावना दिखाई देती है, तो दूसरी तरफ बाबा साहेब अंबेडकर की दलितों-शोषितों को आगे बढ़ाने तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की भावना भी निहित है। विपक्षी दल की सरकारों ने 55 वर्षों तक देश पर शासन किया और ये गरीबी हटाने की बातें तो करते रहे, लेकिन गरीबी हटाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के प्रयासों से देश में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने बजट में कृषि क्षेत्र के लिए किए गए अभूतपूर्व प्रावधान के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि हम सभी जानते हैं कि देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोजगार प्रदान करने तथा देश के समग्र आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि भारत के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के लिए महत्वपूर्ण है। इन तथ्यों को पहचानते हुए प्रधानमंत्री जी ने कृषि क्षेत्र के लिए बजट प्रावधान में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उन्होंने कहा कि जिन्होंने खेत नहीं देखे, गांव नहीं देखे और गरीबी नहीं देखी, वे कैसे गरीबों का दुख दर्द समझेंगे। लेकिन प्रधानमंत्री श्री मोदी एक गरीब मां के बेटे हैं और उन्होंने गरीबों की पीड़ा को महसूस भी किया है।

अंधेरे में दीया जलाना कहां मना है....

श्री शर्मा ने कहा कि विपक्षी दल की सरकारों ने 55 वर्षों तक देश पर शासन किया। ये गरीबी हटाने की बातें तो करते रहे, लेकिन गरीबी हटाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के प्रयासों से देश में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए है। किसानों और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए भी मोदी सरकार लगातार प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के मन के भाव कुछ इस तरह हैं-माना कि अंधेरा घना है, पर दीया जलाना कहां मना है।

27 आबकारी अधिकारियों के तबादले

उपायुक्त नेमा को ग्वालियर, तिवारी को इंदौर भेजा

भोपाल, देशबन्धु। वाणिज्यिक कर विभाग ने 27 आबकारी अधिकारियों के तबादले किए हैं। इनमें उपायुक्त आबकारी मुकेश नेमा को संभागीय उड़नदस्ता संभाग इंदौर से मुख्यालय ग्वालियर स्थानांतरित किया गया है। जबकि उपायुक्त आबकारी संजय तिवारी को संभागीय उड़नदस्ता उज्जैन से संभागीय उड़नदस्ता इंदौर भेजा गया है। वहीं सहायक आबकारी आयुक्त हर्षवर्धन राय को राज्य स्तरीय उड़नदस्ता भोपाल से प्रभारी उपायुक्त आबकारी संभागीय उड़नदस्ता संभाग उज्जैन पदस्थ किया गया है।

वहीं सहायक आबकारी आयुक्त जिला भोपाल दीपम रायचुरिया को राज्य उड़नदस्ता भोपाल की कमान सौंपी गई है। राजनारायण सोनी को उज्जैन से धार, अभिषेक तिवारी खरगोन से इंदौर, संजीव कुमार दुबे मुख्यालय ग्वालियर से जबलपुर, विक्रमदीप सागर धार से उज्जैन, प्रभारी सहायक आबकारी आयुक्त दीपक अवस्थी को सागर से रायसेन, वीरेंद्र सिंह धाकड़ को डीईओ बुरहानपुर से प्रभारी प्रभारी सहायक आबकारी आयुक्त , प्रभारी सहायक आबकारी आयुक्त सत्यनारायण दुबे मुख्यालय ग्वालियर से खरगोन, जिला आबकारी अधिकारी विभा मरकाम सतना से कटनी, कीर्ति दुबे प्रभारी सहायक आबकारी आयुक्त संभागीय उड़नदस्ता रीवा से सागर, नवीन चंद्र पांडेय प्रभारी जिला आबकारी अधिकारी संभागीय उड़नदस्ता भोपाल से सतना, मनीष खरे सहायक आबकारी आयुक्त इंदौर से मुख्यालय ग्वालियर, वंदना पांडेय सहायक आबकारी आयुक्त रायसेन से संभागीय उड़नदस्ता भोपाल, रामकृष्ण बघेल प्रभारी जिला आबकारी अधिकारी कटनी से सहायक आबकारी आयुक्त संभागीय उड़नदस्ता रीवा पदस्थ किया गया है।

10 सहायक जिला आबकारी अधिकारियों में एनपी सिंह को नर्मदापुरम से प्रभारी डीईओ नीमच, राजीव प्रसाद द्विवेदी धार से आगर मालवा, राधेश्याम राय धार से निवाड़ी, संतोष सिंह कुशवाह खंडवा से सीधी, बद्रीलाल दांगी शाजापुर से मंदसौर, महेश कुमार गौड़ गुना से भिंड, कमल सिंह सिकरवार देवास से श्योपुर, रामहंश पचौरी इंदौर से डिंडौरी, मुकेश मौर्य विदिशा से पन्ना और संतोष कुमार सिंह को प्रभारी जिला आबकारी अधिकारी से प्रभारी जिला आबकारी अधिकारी संभागीय उड़नदस्ता संभाग सागर पदस्थ किया गया है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री को लिखा पत्र, भेदभाव का लगाया आरोप

भाजपा विधायकों को ही दी जा रही विकास निधि

भोपाल, देशबन्धु। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने राज्य सरकार पर कांग्रेस विधायकों को विकास निधि दिए जाने में भेदभाव का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री मोहन यादव को पत्र लिखा है।

श्री पटवारी ने पत्र में कहा, राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में विकास निधि के आवंटन में गंभीर भेदभाव किया जा रहा है। भाजपा के विधायकों को विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए 15 करोड़ रुपये की निधि प्रदान की जा रही है, जबकि कांग्रेस पार्टी के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के क्षेत्रों को इस विकास निधि से वंचित रखा जा रहा है। यह न केवल जनप्रतिनिधियों के साथ अन्याय है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक मर्यादाओं का भी खुला उल्लंघन है।

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने अपने पत्र में कहा है कि सरकार पक्षपातपूर्ण संकीर्ण राजनीति कर रही है। कांग्रेस विधायकों के क्षेत्र में जनता भी निवास करती है, जो करदाता हैं और जिन्हें समान रूप से सरकारी योजनाओं और विकास कार्यों का लाभ मिलना चाहिए। यदि एक लोकतांत्रिक सरकार ही अपने दायित्वों का निर्वहन भेदभाव के आधार पर करने लगे, तो इससे जनता का विश्वास प्रणाली से उठ जाएगा। पटवारी ने मांग की है कि सभी विधायकों को, चाहे वे किसी भी दल से हों, समान रूप से 15 करोड़ रुपये की विकास निधि प्रदान की जाए।

विधानसभा में भी उठा मामला, कांग्रेस विधायक से बोले विजयवर्गीय

अनुदान मांगों का समर्थन कर दीजिए, आपको भी मिल जाएगी विकास निधि

भोपाल, देशबन्धु। विकास निधि में भेदभाव का मामला विधानसभा में भी उठा। कांग्रेस विधायक पंकज उपाध्याय ने नगरीय प्रशासन विभाग की अनुदान मांगों पर बोलते हुए यह मामला उठाया। उन्होंने कहा कि भाजपा विधायकों को क्षेत्र में 15-15 करोड़ रुपए की विकास निधि दी जा रही है, वहीं कांग्रेस विधायकों के क्षेत्र को इससे वंचित रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए, सभी जनप्रतिनिधियों के क्षेत्र को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देखा जाना चाहिए। इस पर संसदीय कार्यमंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कांग्रेस विधायक से कहा कि आप अनुदान मांगों का विरोध क्यों कर रहे हैं, समर्थन कर दीजिए आपको भी विकास निधि मिल जाएगी। इस पर सदन में खूब ठहाके लगे।

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस कार्यक्रम आयोजित

खुद के साथ अन्य लोगों को भी करें जागरूक : रश्मि

भोपाल, देशबन्धु। हम सभी किसी न किसी रूप में उपभोक्ता हैं, लेकिन हमें अधिकारों की जानकारी नहीं है। स्वयं के साथ समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक करना हमारी जिम्मेदारी है। अपर मुख्य सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण श्रीमती रश्मि अरूण शमी ने यह बात विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में कही।

श्रीमती शमी ने कहा कि वर्तमान में अधिकांश खरीदी ई-प्लेटफार्म के माध्यम से की जा रही हैं। इसमें गुणवत्तायुक्त सामग्री नहीं मिलने पर क्या कार्यवाही की जा सकती है, इसकी जानकारी होना चाहिए। जिला उपभोक्ता संरक्षण अदालतों में 50 लाख रूपये तक, राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग में 50 लाख रूपये से 2 करोड़ रूपये तक और राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण आयोग में इससे अधिक राशि के प्रकरणों की सुनवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि उपभोक्ता निर्णय से असंतुष्ट होने पर 45 दिन में अगले स्तर पर अपील कर सकते हैं। उन्होंने सामाजिक संगठनों से आग्रह किया कि उपभोक्ताओं को सतत् जागरूक करते रहें। मध्यप्रदेश राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष व्ही.के. मल्होत्रा ने कहा कि उपभोक्ताओं की जागरूकता और योजनाओं का क्रियान्वयन करने वालों की संवेदनशीलता बहुत जरूरी है।

रजिस्ट्रार मध्यप्रदेश उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग शोभित जैन ने कहा कि इस तरह की कार्यशालाएं संभाग और जिला स्तर पर भी आयोजित कर उपभोक्ताओं को जागरूक किया जाये। आयुक्त खाद्य कर्मवीर शर्मा ने बताया कि उपभोक्ता अदालतों में ऑनलाइन सुनवाई की भी व्यवस्था की गई है। इससे उपभोक्ता घर से ही सुनवाई में शामिल हो सकते हैं। इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा उपभोक्ता जागरूकता संबंधी लगाई गई प्रदर्शनी का अतिथियों ने अवलोकन किया। उन्होंने नाप-तौल विभाग की प्रदर्शनी को प्रथम, वेयर हाउसिंग की प्रदर्शनी को द्वितीय और खाद्य एवं औषधि प्रशासन की प्रदर्शनी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया।

इन्हें किया सम्मानित

अतिथियों ने उपभोक्ता जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली संस्था जागरूक उपभोक्ता समिति इंदौर को एक लाख 11 हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार और अखिल भारतीय उत्थान संगठन सतना को 51 हजार रूपये का द्वितीय पुरस्कार दिया। उपभोक्ता अधिकार विषय पर राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता के विजेता छात्र शा.उ.म. विद्यालय विरसा जिला बालाघाट के धारेन्द्र मरावी को 6 हजार रूपये का प्रथम, शा.मा. विद्यालय क्रमांक-19 नया बसेरा के पवन ताकतोड़े को 4 हजार रूपये का द्वितीय और क्रिस्टिना कॉन्वेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल महूगांव जिला इंदौर की सुश्री हीरल दसोंधी को 2 हजार रूपये का तृतीय पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र दिया गया। इसी तरह पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता छात्र इंदौर के शा.प्रा.वि. 19 नया बसेरा जिला इंदौर की कुमारी पूनम बोदड़े को 6 हजार रूपये का प्रथम, शा.उ.मा.वि. बिरसा जिला बालाघाट की कुमारी झरना रहांगडाले को 4 हजार रूपये का द्वितीय और पीएमश्री शा.क.उ.मा.वि. बैहर जिला बालाघाट की कुमारी सेजल टेकाम को 2 हजार रूपये का तृतीय पुरस्कार दिया गया।

परिवहन घोटाले को लेकर कांग्रेस ने अब आयकर विभाग के महानिदेशक को सौंपा ज्ञापन

भोपाल, देशबन्धु। प्रदेश में हुए परिवहन घोटाले को लेकर कांग्रेस विधायकों के प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को आयकर विभाग के महानिदेशक से भेंट की और मंत्री गोविंद राजपूत तथा उनके सहयोगियों की हजारों करोड़ की बेनामी संपत्ति के दस्तावेज सौंपकर कार्रवाई की मांग की।

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकों के प्रतिनिधिमंडल ने महानिदेशक को एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें गोविन्द सिंह राजपूत के मंत्री रहते भ्रष्टाचार कर अपने, पत्नी तथा बेटों, रिश्तेदारों और अन्य लोगों के नाम से सैकड़ों एकड़ जमीन की अवैध खरीद तथा बेनामी अवैध संपत्ति की जांच करने की मांग की गई है। साथ ही इन संपत्तियों को अटैच करने की भी मांग की गई।

श्री सिंघार ने इस दौरान मीडिया से चर्चा करते हुए आरोप लगाया कि परिवहन घोटाले में सिर्फ छोटी मछलियों को पकड़ा जा रहा है। एक सिपाही को गिरफ्तार किया जाता है, लेकिन जो बड़े मगरमच्छ हैं, जिन्होंने हजारों करोड़ की अवैध संपत्ति बनाई है, जिनके पास पैसा पहुंच रहा था, उन पर कार्रवाई नहीं होती। उन्होंने कहा कि हमने पहले लोकायुक्त, ईओडब्ल्यू और अब आयकर विभाग में शिकायत की है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि इस मामले में निष्पक्ष जांच सहित सभी बड़े नामों का खुलासा करने की मांग की है, जिस पर महानिदेशक ने जांच का आश्वासन दिया है।

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा मेसर्स डी.बी. कार्प लिमिटेड फौजदार गैरेज पवारखेड़ा इटारसी रोड नर्मदापुरम से मुद्रित एवं 45, वार्ड नं. 6, कसेरा मुहल्ला नर्मदापुरम म.प्र. से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** फोन 422297। ई-मेल deshbandhuhbd1@gmail.com समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।